# वह शख्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

## मार्क ट्वेन

की दो अमर कहानियाँ

मार्क ट्वेन की दो अमर कहानियाँ

# वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

यह पुस्तक राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित की गई है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाई जा रही है। अगर आप पीडीएफ की बजाय प्रिण्ट कॉपी से पढ़ना चाहते हैं तो जनचेतना से सम्पर्क कर सकते हैं या फिर अमेजन से खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://www.amazon.in/dp/8189760556

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है। जनचेतना द्वारा वितरित किया जा रहा प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य दिये गये अमेजन लिंक से भी खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://goo.gl/bxmZR5

# हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- प्रगतिशील कविताएं, कहानियां, उपन्यास, गीत–संगीत
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल सांकृत्यायन, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य
- देश–दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- हर रविवार किसी महत्वपूर्ण पुस्तक की पीडीएफ

## मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए इस लिंक का इस्तेमाल करें

www.mazdoorbigul.net/whatsapp

जुड़ने में समस्या आने पर अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें – 8828320322

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul

# वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

# वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

## मार्क ट्वेन

की दो अमर कहानियाँ

अनुवाद
**सत्यम**

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

**मूल्य :** रु. 60.00

**पहला संस्करण :** जनवरी, 2014

**परिकल्पना प्रकाशन**
**( राहुल फाउण्डेशन का एक इम्प्रिंट )**
69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड
निशातगंज, लखनऊ-226 006 द्वारा प्रकाशित

कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा टाइपसेटिंग

चमन एंटरप्राइज़ेज़, दरियागंज, दिल्ली द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

---

*Wah Shakhs Jisne Hadleyburg ko Bhrasht kar Diya*
*By **Mark Twain***

**ISBN 978-81-89760-55-7**

# प्रकाशकीय

पूँजीवाद सभ्यता और मूल्यों पर सबसे तीखी और मारक चोट करने वालों में से एक, महान अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन की दो कालजयी कहानियाँ हिन्दी में पहली बार प्रस्तुत करते हुए हमें ख़ुशी हो रही है।

हिन्दी में मार्क ट्वेन के नाम से तो बहुतेरे पाठक परिचित हैं लेकिन अधिकांश लोग उन्हें मज़ाकिया कहानियों के रचयिता के रूप में ही जानते हैं। वैसे भारत ही नहीं, ट्वेन के देश अमेरिका में भी उनके वास्तविक योगदान और विचारों को छिपाया और तोड़-मरोड़कर ही पेश किया जाता रहा है। ज़्यादातर पाठक उन्हें बच्चों के लिए मज़ेदार कहानियों के लेखक; या लोगों को हँसाने में माहिर व्यंग्यकार के तौर पर जानते हैं। कई बार उन्हें अपनी विफलताओं के कारण समाज पर गुस्सा उतारने वाले कटु मानवद्वेषी के तौर पर भी प्रस्तुत किया जाता है। या फिर अमेरिकी साहित्य के पितामहों में से एक, अमेरिकी स्वप्न के शक्तिशाली प्रतीक या राष्ट्रवादी नायक के रूप में उनकी छवि गढ़ने की कोशिशें होती रही हैं।

सच तो यह है कि मार्क ट्वेन पिछली सदी की शुरुआत में अमेरिकी शासक वर्ग की विचारधारा, उसकी राजनीति और पूँजीवादी संस्कृति के प्रखरतम और कटुतम आलोचकों में से एक थे। ख़ासकर, जीवन के अन्तिम दौर में, ट्वेन की प्रकाशित और अप्रकाशित कृतियाँ और उनके भाषण ज़बर्दस्त तौर पर नस्लवाद-विरोधी, साम्राज्यवाद-विरोधी और रैडिकल हैं। उनके विपुल कृतित्व के इस पहलू से हिन्दी के पाठक प्राय: अपरिचित ही हैं। हमारा प्रयास होगा कि हम जनता के पक्ष के इस महान लेखक की महत्वपूर्ण कृतियों को हिन्दी में प्रस्तुत करें। इसकी शुरुआत पूँजीवादी लोभ-लालच और पाखण्ड पर करारी चोट करने वाली इन दो प्रसिद्ध कहानियों से की जा रही है।

'द मैन दैट करप्टेड हैडलेबर्ग' ट्वेन की सबसे शक्तिशाली कहानियों में गिनी जाती है। अमेरिकी सत्ता प्रतिष्ठान के लिए ट्वेन वास्तव में क्या हैं, इसका अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मैकार्थी काल में उनकी बहुतेरी रचनाओं का प्रकाशन-वितरण रोक दिया गया था। उसी

दौर की घटनाओं पर आधारित प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक हावर्ड फ़ास्ट के उपन्यास 'सिलास टिम्बरमन' में एक अमेरिकी प्रोफ़ेसर को इसलिए तमाम तरह की प्रताड़नाओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि वह अपने कॉलेज के पाठ्यक्रम में 'द मैन दैट करप्टेड हैडलेबर्ग' को शामिल कर लेता है। उस पर इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह कम्युनिज़्म का प्रचारक है। दूसरी कहानी भी पूँजी की भयंकर भ्रष्टकारी शक्ति और व्यक्तियों पर इसके विनाशकारी परिणामों को चित्रित करती है। कहने की ज़रूरत नहीं कि ट्वेन की तीखी व्यंग्यात्मक शैली में लिखी दोनों कहानियाँ जितनी गहरी चोट करती हैं उतना ही हँसाती भी हैं।

'द मैन दैट करप्टेड हैडलेबर्ग' कहानी का यह अनुवाद पहलेपहल 'सृजन परिप्रेक्ष्य' पत्रिका के प्रवेशांक में प्रकाशित हुआ था। इसके साथ दिये गये रेखांकन मैक्डेनियल कॉलेज, अमेरिका की वेबसाइट से साभार लिये गये हैं।

*– परिकल्पना प्रकाशन*

20.1.2014

# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| प्रकाशकीय | 5 |
| वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया | 9 |
| 30,000 डॉलर की वसीयत | 67 |

# वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया

ये कई साल पहले की बात है। हैडलेबर्ग आसपास के सारे इलाक़े में सबसे ईमानदार और दयानतदार क़स्बा था। उसने पीढ़ियों से इस नेकनामी को बेदाग़ बनाये रखा था और उसे इस पर अपनी किसी भी दूसरी चीज़ से बढ़कर नाज़ था। उसे इस पर इस क़दर नाज़ था और वह इसे क़ायम रखने के लिए इतना बेताब था कि क़स्बे के लोग पालने में ही बच्चों को ईमानदारी की घुट्टी पिलाने लगते थे और उनकी शिक्षा के वर्षों के दौरान यही सबक उनकी पढ़ाई–लिखाई का मुख्य विषय होता था। साथ ही, परिपक्व होने तक बच्चों को हर तरह के लोभ–लालच से दूर रखा जाता था, ताकि उनकी ईमानदारी को अच्छी तरह पककर ठोस होने का मौक़ा मिले और वह उनके जिस्मो–जां का हिस्सा बन जाये। पड़ोसी क़स्बे इस सम्मानजनक श्रेष्ठता से जलते थे और हैडलेबर्ग के ख़ुद पर नाज़ करने को ग़ुरूर कहकर उसकी हँसी उड़ाते थे। लेकिन फिर भी, उन्हें ये स्वीकार करना ही पड़ता था कि हैडलेबर्ग वाक़ई ऐसा क़स्बा था जिसे भ्रष्ट नहीं किया जा सकता; और अगर थोड़ा ज़ोर दिया जाये तो वे ये भी स्वीकार करते कि अगर कोई नौजवान ज़िम्मेदारी वाले किसी रोज़गार की तलाश में अपना गृहनगर छोड़कर बाहर निकले तो उसे इस तथ्य के अलावा और किसी प्रमाणपत्र या सिफ़ारिश की ज़रूरत ही नहीं होती थी कि वह हैडलेबर्ग का रहने वाला है।

लेकिन आख़िरकार, समय के फेर में, हैडलेबर्ग ने बदक़िस्मती से वहाँ से गुज़रते एक अजनबी को ठेस पहुँचायी–शायद ऐसा उसने अनजाने में किया, लेकिन निश्चित ही उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी क्योंकि हैडलेबर्ग अपने आप में मगन था और अजनबियों या उनके ख़्यालों की ठेंगे भर भी परवाह नहीं करता था। लेकिन बेहतर होता अगर उसने इस शख़्स के मामले में अपवाद किया होता क्योंकि वह कड़वाहट से भरा और बदला लेने पर आमादा इन्सान

उसका चेहरा एक दुष्टतापूर्ण ख़ुशी से चमक उठा

था। पूरे एक साल तक वह जहाँ भी गया अपने दिल को पहुँची ठेस को भूला नहीं और अपने सारे ख़ाली समय में वह इसकी तसल्लीबख़्श भरपाई के तरीक़े ढूँढ़ने में लगा रहता। उसने बहुत-सी योजनाएँ बनायीं और सब अच्छी थीं, लेकिन उनमें से कोई भी पर्याप्त व्यापक नहीं थी। इनमें से सबसे कमज़ोर

योजना भी बहुत से लोगों को नुकसान पहुँचा सकती थी, लेकिन वह तो एक ऐसी योजना चाहता था जो पूरे क़स्बे को चपेट में ले ले और एक भी आदमी सही-सलामत बच न सके। आख़िरकार उसे एक बात सूझ गयी और जैसे ही ये उसके दिमाग़ में कौंधी उसका चेहरा एक दुष्टतापूर्ण ख़ुशी से चमक उठा। वह फ़ौरन योजना बनाने में जुट गया। वह ख़ुद से ये कहता जा रहा था, "हाँ, मैं यही करूँगा–मैं इस क़स्बे को भ्रष्ट कर दूँगा!"

छह माह बाद वह हैडलेबर्ग गया और एक बग्घी में बैठकर रात क़रीब दस बजे बैंक के बूढ़े कैशियर के घर पहुँचा। उसने बग्घी से एक बोरी निकाली, उसे कन्धे पर लादा और उसके बोझ से लड़खड़ाता हुआ अहाते से गुज़रकर दरवाज़े पर दस्तक दी। एक महिला की आवाज़ आयी, "भीतर आ जाओ," और वह भीतर दाखिल हुआ, अपनी बोरी आतिशदान के पीछे रख दी और फिर लैम्प की रोशनी में 'मिशनरी हेरल्ड' पढ़ रही बूढ़ी महिला से विनम्रता से कहा :

"आप बैठी रहें मैडम, मैं आपको तंग नहीं करूँगा। हाँ–अब ये अच्छी तरह छुप गया है; किसी का शायद ही इसकी ओर ध्यान जायेगा। क्या मैं एक मिनट के लिए आपके शौहर से मिल सकता हूँ मैडम?"

नहीं, वह ब्रिक्सटन गये हैं और शायद सुबह के पहले नहीं लौटेंगे।

"ठीक है, ठीक है मैडम, कोई बात नहीं। मैं बस इस बोरी को उनकी देखरेख में छोड़ना चाहता था ताकि जब भी इसका सही हक़दार मिले तो उसे दे दी जाये। मैं एक अजनबी हूँ, वह मुझे नहीं जानते; मैं आज रात इस शहर से बस एक काम पूरा करने के लिए गुज़र रहा था जो काफ़ी दिनों से मेरे मन में था। मेरा काम पूरा हो गया है और अब मैं ख़ुशी-ख़ुशी और थोड़े फ़ख़्र के साथ यहाँ से जा रहा हूँ, और आप मुझे दोबारा कभी नहीं देखेंगी। बोरी के साथ एक काग़ज़ लगा हुआ है जिससे सब कुछ पता चल जायेगा। गुडनाइट मैडम।"

बूढ़ी महिला इस रहस्यमय लम्बे-चौड़े अजनबी से डर गयी थी और उसे जाता देखकर ख़ुश हुई। लेकिन उसकी उत्सुकता जाग गयी थी और वह सीधे बोरी के पास जाकर काग़ज़ ले आयी। उसमें लिखा था:

*"इसे शहर के अख़बार में छपवा दिया जाये, या फिर आप ख़ुद ही सही आदमी का पता लगा लें–दोनों ही चलेंगे। इस बोरी में एक सौ साठ पौण्ड और चार औंस वज़न के सोने के सिक्के हैं–"*

"हे भगवान...और दरवाज़ा भी बन्द नहीं है!"

मिसेज़ रिचर्ड्स ने काँपते हुए दौड़कर दरवाज़ा बन्द किया, फिर

खिड़कियों की झिलमिली गिरायी और फिर डरी, घबरायी हुई सोचने लगी कि ख़ुद को और इस पैसे को सुरक्षित करने के लिए और क्या किया जा सकता है। पलभर वह कान लगाकर सुनती रही कि कहीं कोई चोर तो नहीं है, फिर उत्सुकता उस पर हावी हो गयी और वह वापस लैम्प के पास जाकर काग़ज़ पर लिखी इबारत पढ़ने लगी :

*"मैं एक परदेसी हूँ, और अब हमेशा के लिए अपने मुल्क लौट रहा हूँ। यहाँ लम्बे समय तक रहने के दौरान मैंने जो कुछ भी पाया उसके लिए मैं अमेरिका का शुक्रगुज़ार हूँ; और उसके एक नागरिक–हैडलेबर्ग के एक नागरिक–का तो ख़ास तौर पर एहसानमन्द हूँ जिसने साल–दो साल पहले मेरे साथ बड़ी भलाई की थी। बल्कि दो भलाइयाँ की थीं। मैं बताता हूँ कि क्या हुआ था। मैं एक जुआरी था। मैंने कहा 'मैं था।' मैं जुए में बरबाद हो चुका था। मैं इस क़स्बे में रात को पहुँचा, भूखा–प्यासा, जेब में फूटी–कौड़ी भी नहीं। मैंने मदद माँगी–अँधेरे में; उजाले में भीख माँगते मुझे शर्म आती थी। पर मैंने सही आदमी के आगे हाथ फैलाया था। उसने मुझे बीस डॉलर दिये–या यूँ कहें कि उसने मुझे ज़िन्दगी दे दी, मुझे ऐसा ही लगा। उसके ये पैसे बड़े क़िस्मतवाले थे क्योंकि इन्हीं से मैं फिर जुए में जीतकर अमीर हो गया। और सबसे बढ़कर, उसने मुझे एक बात कही जो आज तक मुझे याद है; और आख़िर अब मैं उस बात का क़ायल हो गया हूँ। इसने मेरे बचे–खुचे ज़मीर को मरने से बचा लिया। अब मैं कभी जुआ नहीं खेलूँगा। मुझे बिल्कुल पता नहीं कि वह आदमी कौन था, लेकिन मैं चाहता हूँ कि उसका पता लगे, और मैं चाहता हूँ कि ये पैसा उसे मिल जाये। फिर वह चाहे इसे बाँट दे, फेंक दे, या रखे, जो जी में आये, करे। ये तो बस उसके प्रति कृतज्ञता दिखाने का मेरा तरीक़ा है। अगर मैं रुक सकता तो ख़ुद ही उसे ढूँढता, लेकिन उसका पता चल ही जायेगा। ये एक ईमानदार क़स्बा है; इसे भ्रष्ट नहीं किया जा सकता, और मैं जानता हूँ कि बेधड़क इस पर भरोसा कर सकता हूँ। उस आदमी ने मुझसे जो बात कही थी, उससे उसे पहचाना जा सकता है; मुझे यक़ीन है कि उसे वह बात याद होगी।*

"मेरी योजना ये है : अगर आप अकेले ही पता लगाना चाहें तो ऐसा ही करें। आपकी नज़र में जो सही आदमी हो, उसे इस ख़त के बारे में बतायें। अगर वह कहता है, मैं ही वह आदमी हूँ, मैंने उससे फ़लाँ–फ़लाँ बात कही थी, तो इस बात की जाँच कीजिए : बोरी खोलिए और उसमें आपको एक मुहरबन्द लिफ़ाफ़ा मिलेगा जिसमें वह जुमला लिखा रखा है। अगर उम्मीदवार द्वारा

बतायी गयी बात इससे मिल जाये तो बिना और कुछ पूछे उसे पैसे दे दें क्योंकि बिला शक् वही सही आदमी है।

*"लेकिन अगर आप खुली जाँच कराना चाहें तो इस ख़त को शहर के अख़बार में छपवा दें–और साथ में ये हिदायतें भी : इन पैसों का दावेदार आज से तीस दिन बाद शाम आठ बजे टाउनहाल में पहुँचे और अपनी बात एक मुहरबन्द लिफ़ाफ़े में पादरी मि. बर्गेस (अगर वह इस काम के लिए तैयार हों तो) को सौंप दे। मि. बर्गेस वहीं, उसी समय बोरी की मुहर तोड़कर उसमें रखे काग़ज़ से उस जुमले का मिलान करें और मिल जाये तो मेरी हार्दिक शुभकामनाओं सहित पैसा मेरे उपकारक को सौंप दिया जाये।"*

मिसेज़ रिचर्ड्स बैठ गयीं। उत्तेजना से उनके बदन में फुरफुरी–सी हो रही थी और जल्दी ही वह ख़्यालों में डूब गयी जिनका ढर्रा कुछ यूँ था : "कैसी अजीब बात है!...नेकी कर दरिया में डालने वाले उस भले आदमी के तो भाग ही खुल गये।...काश मेरे पति ने ऐसा किया होता!–आख़िर हम इतने ग़रीब हैं, इतने बूढ़े और लाचार हैं!..." फिर आह भरकर– "लेकिन वह मेरा एडवर्ड नहीं हो सकता; नहीं, अजनबी को बीस डॉलर देने वाला वह नहीं था। हाय, हमारे ऐसे नसीब कहाँ..." फिर अचानक चौंककर–"लेकिन ये तो **जुए** का पैसा है! पाप की कमाई; हम इसे नहीं ले सकते; हम तो इसे छू भी नहीं सकते। मुझे इसके पास रहना भी अच्छा नहीं लगता; यहाँ रहना ही मुझे अपवित्र कर देगा।" वह दूर वाली कुर्सी पर जाकर बैठ गयी।... "काश एडवर्ड आ जाता और इसे बैंक ले जाता; कभी भी कोई चोर आ सकता है। इसके साथ यहाँ अकेला रहना बड़ा डरावना है।"

ग्यारह बजे रिचर्ड्स वापस लौटा और जिस वक़्त उसकी बीवी कह रही थी, "मैं कितनी ख़ुश हूँ कि तुम आ गये हो!" उस वक़्त वह कह रहा था, "मैं इस क़दर थक गया हूँ – थककर चूर हो गया हूँ। ग़रीब होना बड़ा भयावह है, अब इस उम्र में ऐसे तकलीफ़देह सफ़र करने पड़ते हैं। थोड़ी सी तनख़्वाह के लिए बस जुते रहो, जुते रहो, जुते रहो–दूसरे की ग़ुलामी करते रहो, जबकि वह मज़े से घर में बैठा होगा।"

"मुझे तुम्हारे लिए बड़ी तकलीफ़ होती है एडवर्ड, तुम जानते हो; पर ऐसे दुखी न हो। आख़िर हम अपनी मेहनत की कमाई खाते हैं; समाज में हमारी प्रतिष्ठा है–"

"हाँ, मैरी, यही सबसे बड़ी चीज़ है। मेरी बातों का बुरा मत मानना–ऐसे ही झुँझलाहट में बोल गया। आओ, मेरा बोसा लो–लो, बस, सब ख़त्म; अब

मुझे कोई शिकायत नहीं। अरे, तुमने कुछ सामान मँगाया है क्या? उस बोरी में क्या है?"

उसकी बीवी ने उसे सारी बात बताई। एक पल के लिए वह हक्का-बक्का रह गया, फिर बोला :

"ये एक सौ साठ पौण्ड है? अरे, मैरी, ये चा-लीस हज़ार डॉलर हैं – ज़रा सोचो तो – पूरा ख़ज़ाना! इस शहर में दस आदमी भी इतने पैसे वाले नहीं हैं। मुझे वह काग़ज़ तो दो।"

वह जल्दी-जल्दी उसे पढ़ गया और कहा :

"ये अद्भुत कारनामे जैसा है न? कितना हैरतअंगेज़! ऐसी असम्भव-सी बातें तो आदमी किताबों में पढ़ता है, ज़िन्दगी में ऐसा कहाँ होता है!" अब उसकी उत्तेजना जाग गयी थी, वह ख़ुश था, बल्कि ख़ुशी से फूला नहीं समा

लेकिन वह मेरा एडवर्ड नहीं हो सकता

रहा था। उसने बूढ़ी पत्नी के गालों को थपथपाया और मज़ाकिया लहजे में कहा : "अरे मैरी, अब हम अमीर हैं, अमीर; बस, हम ये पैसा ज़मीन में गाड़ देंगे और कागजों को जला डालेंगे। अगर वह जुआरी कभी पूछने आया तो हम उसे घूरकर कहेंगे : 'क्या बक़वास कर रहा है तू? हमने कभी तेरे और तेरी इस सोने की बोरी के बारे में सुना तक नहीं है।' कैसा बेवक़ूफ़ दिखेगा, और–"

"तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है, और पैसा अब भी यहाँ पड़ा है, और चोरों के निकलने का समय हो रहा है।"

"ठीक कह रही हो तुम। पर हमें करना क्या चाहिए–अकेले ही पता लगायें? नहीं, नहीं, इससे तो सारा मज़ा किरकिरा हो जायेगा। खुली जाँच बेहतर रहेगी। ज़रा सोचो, क्या शोर मचेगा! दूसरे सारे शहर जल-भुनकर कबाब हो जायेंगे क्योंकि कोई भी अज़नबी ऐसे काम के लिए हैडलेबर्ग के अलावा और किसी पर भरोसा नहीं करता। ये हमारी शान में चार चाँद लगा देगा। पर मुझे फ़ौरन अख़बार के दफ़्तर लपकना चाहिए वरना देर हो जायेगी।"

"अरे रुको–रुको–मुझे इसके साथ अकेली छोड़कर मत जाओ एडवर्ड!"

पर वह जा चुका था। लेकिन थोड़ी ही देर के लिए क्योंकि अपने घर से कुछ ही दूरी पर उसे सम्पादक–यानी अख़बार का मालिक मिल गया और उसने उसे काग़ज़ दे दिया। "ये तुम्हारे लिए एक अच्छी ख़बर है कॉक्स–छाप दो इसे।"

"शायद अब देर हो चुकी है मि. रिचर्ड्स, पर मैं देखूँगा।"

घर लौटकर वह और उसकी बीवी फिर बैठकर इस अद्भुत रहस्य पर बातें करने लगे; दोनों में से कोई सोने की हालत में नहीं था। पहला सवाल था, आख़िर वह कौन नागरिक था जिसने अजनबी को बीस डॉलर दिये थे? शायद ये आसान सवाल था; दोनों ने एक ही साँस में इसका जवाब दिया –"बारक्ले गुडसन।"

"हाँ," रिचर्ड्स ने कहा, "वह ऐसा कर सकता था, उसका मिज़ाज ऐसा था; दूसरा कोई नहीं है शहर में जो ऐसा कर सके।"

"इससे कोई इन्कार नहीं करेगा एडवर्ड–पर खुलकर कोई नहीं कहेगा। पिछले छह महीने से, अब ये क़स्बा फिर से अपने जैसा हो गया है – ईमानदार, तंगदिल, घमण्डी, और कंजूस।"

"वह मरते दम तक इसे यही कहता रहा–और सबके मुँह पर कहता था।"

"हाँ, और इसीलिए लोग उससे नफ़रत करते थे।"

"ओह हाँ, पर वह किसी की परवाह कहाँ करता था। मेरे ख़्याल से हमारे

बीच सबसे ज़्यादा नफ़रत लोग किसी से करते थे तो उसी से, पादरी बर्गेस के अलावा।"

"बर्गेस है ही इसी के लायक़। अब यहाँ वह फिर कोई समागम नहीं कर पायेगा। ये शहर चाहे जितना ओछा हो, *उसके* जैसे लोगों को पहचानना जानता है। एडवर्ड, तुम्हें क्या ये अजीब नहीं लगता कि अजनबी ने पैसे सही आदमी को सौंपने की ज़िम्मेदारी बर्गेस को दे दी?"

"अ-अ-हाँ-हाँ...लगता है। ये तो-ये तो-"

"ये तो-ये तो क्या कर रहे हो? क्या तुम उसे चुनते?"

"मैरी, शायद वह अजनबी उसे क़स्बेवालों से बेहतर जानता हो।"

"हुँह, जैसे मैं उसे जानती ही नहीं हूँ।"

शौहर को जैसे कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। बीवी की नज़र उस पर गड़ी थी और वह इन्तज़ार कर रही थी। आख़िरकार रिचर्ड्स ने कहा, लेकिन ऐसे हिचकिचाते हुए जैसे बोलने से पहले ही लग रहा हो कि उसकी बात पर यक़ीन नहीं किया जायेगा।

"मैरी, बर्गेस बुरा आदमी नहीं है।"

उसकी पत्नी वाक़ई हैरान रह गयी।

"बकवास!" उसने तमककर कहा।

"वह बुरा आदमी नहीं है। मैं जानता हूँ। उसकी सारी बदनामी की जड़ में बस एक ही बात है-वही बात जिस पर इतना शोर मचा था।"

"बस वही 'एक बात'। वाह! जैसे वह 'एक बात' अपने में काफ़ी नहीं हो।"

"बेशक़। बेशक़। पर वह इसमें दोषी नहीं था।"

"कैसी बात कर रहे हो? दोषी नहीं था। हर कोई जानता है कि वह दोषी था।"

"मैरी, मैं क़सम खाकर कहता हूँ - वह बेकसूर था।"

"मैं इसे नहीं मान सकती और मैं मानूँगी भी नहीं। तुम कैसे जानते हो?"

"मैं गुनाह क़बूल कर रहा हूँ। मैं शर्मिन्दा हूँ, लेकिन मैं ऐसा करूँगा। मैं ही अकेला आदमी था जो जानता था कि वह बेकसूर है। मैं उसे बचा सकता था, और-और-ख़ैर, तुम जानती हो क़स्बे में कैसा बावेला मचा हुआ था - मुझे ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई। इससे हर कोई मेरे ख़िलाफ़ हो जाता। मैं अपनी ही नज़रों में गिर गया, पर फिर भी मैं हिम्मत नहीं कर सका। मुझमें वह सब झेलने की बहादुरी नहीं थी।"

मैरी के चेहरे पर परेशानी साफ़ झलक रही थी, और कुछ देर वह ख़ामोश रही। फिर उसने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा :

"मुझे–मुझे नहीं लगता कि तुम्हारा ऐसा करना – मेरा मतलब– अ–अ–लोगों की राय–ऐसे मामलों में इतना सावधान रहना पड़ता है– इसलिए–" ये डगर कठिन थी और वह बीच में अटक गयी; लेकिन थोड़ी देर बाद वह फिर शुरू हो गयी। "ये बड़ा दुखद हुआ, लेकिन–एडवर्ड, हम इसे झेल नहीं सकते थे–हम बिल्कुल नहीं झेल पाते। ओह, मैं किसी सूरत में तुम्हें ऐसा नहीं करने देती!"

"इससे हम बहुत से लोगों के लिए बुरे बन जाते, मैरी; और फिर–और फिर–"

"अब मैं ये सोचकर परेशान हूँ कि वह हमारे बारे में क्या सोचता होगा, एडवर्ड।"

"वह? उसे तो अन्दाज़ा भी नहीं कि मैं उसे बचा सकता था।"

"ओह," पत्नी ने राहत की साँस लेते हुए कहा। "मुझे इसकी ख़ुशी है। जब तक उसे ये पता नहीं कि तुम उसे बचा सकते थे, वह–वह – चलो, अच्छा है। अरे, मुझे तो ये समझ ही लेना चाहिए था कि उसे पता नहीं है क्योंकि वह हमेशा हमसे दोस्ताना दिखाने की कोशिश करता रहता है; ये अलग बात है कि हम उसे ज़्यादा बढ़ावा नहीं देते। कई बार लोग मुझे इसके लिए ताना मार चुके हैं। विल्सन और विल्कॉक्स दम्पति और वह हार्कनेस, वे मज़ा ले–लेकर कहते हैं '*आपका मित्र* बर्गेस', क्योंकि वे जानते हैं कि इससे मुझे चिढ़ होती है। मैं तो मनाती हूँ कि वह हमें इस तरह पसन्द करना छोड़ दे; मुझे समझ नहीं आता कि वह अब भी क्यों लगा हुआ है?"

"इसकी वजह मैं बताता हूँ। ये एक और गुनाह का इक़बाल है। जब मामला अभी ताज़ा–ताज़ा और गर्म था, और क़स्बेवालों ने उसकी फ़ज़ीहत करने की योजना बनाई, तो अपने ज़मीर पर इस बोझ को सहन करना मेरे लिए मुश्किल हो गया और मैंने चुपके से जाकर उसे बता दिया। वह क़स्बे से निकल गया और तभी लौटा जब मामला ठण्डा पड़ चुका था।"

"एडवर्ड! अगर लोगों को पता चल जाता तो–"

"*नहीं!* ऐसा कहो भी मत! मुझे इसके बारे में सोचकर अब तक डर लगता है। ऐसा करने के फ़ौरन बाद ही मुझे पछतावा होने लगा और मैं तुम्हें बताने से डरता था कि कहीं तुम्हारा चेहरा किसी के सामने पोल न खोल दे। उस रात मैं चिन्ता के मारे सो नहीं पाया। लेकिन कुछ दिन बाद मैंने देखा कि किसी

गुडसन ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा

को भी मुझपर शक़ नहीं है और तब से मुझे इस बात की ख़ुशी होने लगी कि मैंने ऐसा किया। और मैरी, मुझे अब भी ख़ुशी होती है—मुझे बहुत ख़ुशी होती है।"

"अब मैं भी ऐसा ही महसूस कर रही हूँ, क्योंकि बर्गेस के साथ बड़ा बुरा बरताव हुआ होता। हाँ, मैं ख़ुश हूँ, क्योंकि उसका कर्ज़ उतारने का इससे अच्छा तरीक़ा नहीं हो सकता था। लेकिन एडवर्ड, ज़रा सोचो, अगर किसी दिन ये राज़ खुल गया तो!"

"ऐसा नहीं होगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि हर कोई मान बैठा है कि ये काम गुडसन का था।"

"ज़ाहिर है, वे तो यही सोचेंगे।"

"बिल्कुल। लेकिन *उसे* इसकी रत्तीभर परवाह नहीं थी। उन लोगों ने बेचारे

साल्सबेरी को तैयार किया कि वह जाकर उस पर ये इल्ज़ाम लगाये, और उसने भड़भड़ाते हुए जाकर बोल दिया। गुडसन ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, मानो ऐसी जगह तलाश रहा हो जिससे उसको सबसे ज़्यादा नफ़रत हो। फिर वह बोला, 'तो तुम हो जाँच कमेटी, क्यों?' साल्सबेरी ने कहा कि हाँ, ऐसा ही है। 'हूँ। क्या उन्हें ब्योरे चाहिए, या तुम्हारे ख़्याल से *आम* क़िस्म का जवाब चल जायेगा?' 'अगर उन्हें ब्योरों की ज़रूरत होगी, तो मैं फिर आ जाऊँगा मि. गुडसन। मैं पहले आम जवाब ले जाता हूँ।' 'फिर ठीक है, उनसे कह दो कि भाड़ में जायें वे–मेरे ख़्याल से ये काफ़ी आम है। और मैं तुम्हें भी एक सलाह देता हूँ, साल्सबेरी; जब ब्योरों के लिए वापस आना तो एक टोकरी साथ ले आना–अपनी बची-खुची हड्डी-पसलियाँ बटोरकर ले जाने के लिए।'"

"गुडसन बिल्कुल ऐसे ही बोलता था। उसे एक ही बात का तो घमण्ड था, उसे लगता था कि उससे अच्छी सलाह कोई नहीं दे सकता था।"

"इससे मामला सुलट गया, और हम बच गये मैरी। मामला वहीं ख़त्म हो गया।"

"भगवान भला करे, ऐसा ही हो।"

इसके बाद वे फिर सोने की बोरी की बातें करने लगे, लेकिन पहले से ज़्यादा दिलचस्पी के साथ। जल्दी ही बातचीत का सिलसिला टूटने लगा–दोनों सोच में डूब जाते और बातचीत वहीं रुक जाती। रुकावटें ज़्यादा जल्दी-जल्दी आने लगीं। आख़िरकार रिचर्ड्स पूरी तरह अपने ख़्यालों में गुम हो गया। वह देर तक ख़ाली-ख़ाली नज़रों से फ़र्श को घूरता बैठा रहा और फिर अनजाने ही उसके ख़्यालों के साथ-साथ उसके हाथ भी हरकत करने लगे जिससे पता चलता था कि वह गहरी उधेड़बुन में है। इस बीच उसकी बीवी भी सोचपूर्ण चुप्पी में डूब चुकी थी और उसके बदन की जुम्बिश से लग रहा था कि उसे बड़ी उलझन हो रही है। आख़िर रिचर्ड्स उठ बैठा और कमरे में निरुद्देश्य इधर-उधर टहलने लगा। वह बार-बार बालों में हाथ फिरा रहा था, जैसे कोई नींद में चलने वाला बुरा ख़्वाब देखते हुए करता है। फिर लगा कि वह किसी फ़ैसले पर पहुँच गया है; और बिना कुछ कहे उसने टोप पहना और तेज़ी से घर से निकल गया। उसकी बीवी सोच में डूबी बैठी रही; उसके चेहरे पर बेचैनी थी, और लगता था कि उसे अकेले रह जाने का अहसास नहीं था। बीच-बीच में वह बुदबुदा उठती थी, "हे प्रभो, लोभ-लालच, माया-मोह से हमारी रक्षा करना... लेकिन–लेकिन–हम इतने ग़रीब हैं, इतने लाचार!... प्रभो, हमें बचाना... आह, इससे किसी का क्या बिगड़ जायेगा?–और किसी को पता

भी नहीं चलेगा... हे प्रभो..." उसकी आवाज़ अस्पष्ट बुदबुदाहट में खो गयी। कुछ देर बाद उसने नज़र उठाई और भयमिश्रित ख़ुशी के स्वर में बड़बड़ाई–

"चले गये! ओह, लेकिन शायद उन्होंने देर कर दी, बहुत देर कर दी।. ..या शायद अभी न हुई हो–शायद अब भी समय हो।" वह सोच में डूबी खड़ी हो गयी, उसकी हथेलियाँ घबराहट में खुल और बन्द हो रही थीं। उसके शरीर के आर–पार एक हल्की सिहरन दौड़ गयी और वह सूखे गले से बोली, "हमें क्षमा करना प्रभो–ऐसी बातें सोचना भी पाप है – लेकिन...हे भगवान, तूने हमें ऐसा क्यों बनाया–ओह, ऐसा विचित्र क्यों बनाया हमें!"

उसने लैम्प की बत्ती नीची कर दी और धीरे से बोरी के पास जाकर घुटनों के बल बैठ गयी और उसके उभरे हुए किनारों पर प्यार से हाथ फिराने लगी; उसकी बूढ़ी आँखों में एक बदनीयत चमक थी। बीच–बीच में वह कहीं खो जाती थी और थोड़ी–थोड़ी देर पर बड़बड़ा उठती थी, "काश, हमने इन्तज़ार किया होता–ओह, अगर बस हम थोड़ी देर रुक गये होते, ऐसी हड़बड़ी न की होती!"

इस बीच कॉक्स अपने दफ़्तर से घर चला गया था और इस अजीबोग़रीब वाक़ये के बारे में अपनी बीवी को बता चुका था। दोनों बड़ी उत्सुकता के साथ इस पर बात करते रहे और उन्होंने भी अनुमान लगाया था कि स्वर्गीय गुडसन ही क़स्बे का अकेला ऐसा इन्सान था जो एक परेशानहाल अजनबी की मदद के लिए उसे बीस डॉलर जैसी रक़म दे सकता था। फिर कुछ देर ख़ामोशी छायी रही, और दोनों चुपचाप अपने–अपने ख़्यालों में खोए रहे। और फिर क्रमशः अधीर और बेचैन होते गये। आख़िरकार पत्नी ने कहा, मानो ख़ुद से कह रही हो, "रिचर्ड्स दम्पति... और हमारे सिवा... इस राज़ को और कोई नहीं जानता...कोई नहीं।"

उसका पति हल्के से चौंककर ख़्यालों के घेरे से बाहर आया और लालायित दृष्टि से पत्नी की ओर देखा जिसका चेहरा बिल्कुल ज़र्द पड़ गया था। फिर वह हिचकिचाते हुए उठा और कनखी से अपने टोप और फिर अपनी बीवी की ओर देखा–ये एक तरह से एक मूक प्रश्न था। मिसेज़ कॉक्स ने गले पर हाथ रखकर एक–दो बार थूक गटका, फिर कुछ कहने के बजाय सिर झुकाकर हामी भरी। पल भर में वह अकेली थी और ख़ुद से कुछ बुदबुदा रही थी।

अब रिचर्ड्स और कॉक्स वीरान सड़कों पर विपरीत दिशाओं से तेज़ी से चले आ रहे थे। प्रिंटिंग प्रेस की सीढ़ियों के पास उनकी मुलाक़ात हुई; दोनों

हाँफ रहे थे। रात की धुँधली रोशनी में दोनों ने एक–दूसरे का चेहरा पढ़ा। कॉक्स फुसफुसाया :

"इसके बारे में हमारे सिवा कोई नहीं जानता?"

फुसफुसाकर दिया गया जवाब था :

"कोई भी नहीं, ईमान क़सम, कोई भी नहीं!"

"बस, अब देर न हुई हो –"

दोनों सीढ़ियों पर चढ़ना शुरू ही कर रहे थे कि एक लड़का उनकी बगल से गुज़रा और कॉक्स ने पूछा,

"जॉनी, तुम हो?"

"हाँ, सर।"

"पहली डाक भेजने की ज़रूरत नहीं है – बल्कि *कोई भी* डाक मत भेजो, जब तक मैं न कहूँ।"

"वह तो जा चुकी है, सर।"

*"जा चुकी है?"* इन शब्दों में ऐसी हताशा थी जिसका बयान नहीं किया जा सकता।

"हाँ, सर। ब्रिक्सटन और उसके आगे के सारे शहरों का टाइमटेबल आज बदल गया सर–रोज़ से बीस मिनट पहले अख़बार स्टेशन पर पहुँचाना पड़ा। मुझे भागते हुए जाना पड़ा, अगर दो मिनट की भी देर हो जाती तो–"

उसकी बात पूरी सुने बिना दोनों मुड़कर भारी क़दमों से वापस चल पड़े। दस मिनट तक कोई कुछ नहीं बोला; फिर कॉक्स ने खिसियाई आवाज़ में कहा,

"मेरी समझ में नहीं आता, आपको ऐसी क्या हड़बड़ी मची थी?"

जवाब पर्याप्त विनम्रता से दिया गया :

"अब मैं समझ रहा हूँ, लेकिन न जाने क्यों तब मैंने सोचा ही नहीं, और जब सोचा तो देर हो चुकी थी। लेकिन चलो, अगली बार–"

"अगली बार जाये भाड़ में! अब ये मौक़ा हज़ार साल में नहीं आने वाला।"

दोनों दोस्त शुभरात्रि कहे बिना अपने–अपने रास्ते हो लिये और किसी तरह क़दम घसीटते हुए घर पहुँचे। उन्हें देखकर लगता था मानो किसी घातक चोट से उनके प्राणपखेरू उड़ने ही वाले हों। घर पहुँचते ही उनकी बीवियाँ उत्सुकता से "क्या हुआ?" कहते हुए फुर्ती से उठ बैठीं–फिर उनकी आँखों में ही जवाब पढ़ लिया और शब्दों में इसे सुनने का इन्तज़ार किये बिना दुख से ढह गयीं। दोनों घरों में तेज़, गर्मागर्म बहस शुरू हो गयी–ये एक नयी चीज़ थी। बहस

पहले भी हो जाया करती थी, पर उग्र नहीं, अप्रिय नहीं होती थी। आज रात होने वाली बहसें जैसे एक–दूसरे की सीधी नक़ल थीं। मिसेज़ रिचर्ड्स ने कहा :

"काश तुमने ज़रा देर इन्तज़ार कर लिया होता, एडवर्ड–थोड़ा ठहरकर सोच लिया होता। लेकिन नहीं, तुम तो सीधे दौड़े चले गये प्रेस में, फैला आये इसे दुनियाभर में।"

"इसमें *लिखा था* कि इसे छपवाना है।"

"ये कोई बात नहीं हुई! इसमें ये भी तो लिखा था कि अगर चाहें तो निजी तौर पर पता कर सकते हैं। क्यों–ये सच है, या नहीं?

"हाँ–हाँ, ये सच है; लेकिन जब मैंने सोचा कि इससे कितना हंगामा मचेगा और हैडलेबर्ग के लिए ये कितने फ़ख़्र की बात होगी कि एक अजनबी ने उस पर इतना भरोसा किया–"

"हाँ, बेशक़, ये सब मैं जानती हूँ। लेकिन अगर तुमने ठहरकर सोचा होता, तो तुम समझ जाते कि सही आदमी का पता तो *लग ही नहीं सकता*, क्योंकि वह तो परलोक सिधार चुका है, और उसके तो न आगे नाथ था न पीछे पगहा; और अगर ये पैसा किसी ज़रूरतमन्द को मिल जाता, और किसी का इससे कुछ नहीं बिगड़ता, और–और–"

कहते–कहते वह रोने लगी। उसका पति उसे ढाँढ़स बँधाने वाली कोई बात सोच रहा था, और फिर वह बोला :

"पर मैरी, जो भी हुआ, अच्छे के लिए ही हुआ होगा–ज़रूर ऐसा ही होगा; तुम तो जानती ही हो। और ये मत भूलो कि हमारे नसीब में जो लिखा होता है वही मिलता है–"

"नसीब में लिखा था! हुँह, जब आदमी कोई बेवक़ूफ़ी का काम कर डालता है तो सबसे अच्छा बहाना होता है क़िस्मत का लेखा। ऐसे ही, ये भी लिखा हुआ था कि ये पैसा इस ख़ास तरीक़े से हमारे पास आयेगा, और ये तुम थे जो जा पहुँचे विधाता की मर्जी के बीच में अपनी टाँग अड़ाने–किसने दिया तुम्हें ये अधिकार? ये बहुत घटिया हरकत थी–पाप था ये, पाप; तुम जैसे दब्बू और भले आदमी को ये बिल्कुल शोभा नहीं देता–"

"लेकिन, मैरी, तुम जानती हो कि सारे क़स्बे की तरह हमें भी बचपन से ऐसी घुट्टी पिलायी गयी है कि ईमानदारी का काम पड़ जाये तो हमें पल भर भी सोचना नहीं पड़ता, ये हमारे स्वाभाव में ढल गया है–"

"ओह, जानती हूँ मैं, ख़ूब जानती हूँ–जीवन भर हमें ईमानदारी का

सबक–दर–सबक–दर–सबक सिखाया गया है–ऐसी ईमानदारी जिस पर कभी किसी लोभ–लालच की छाया ही नहीं पड़ने दी गयी। अरे ये ईमानदारी *नक़ली* है, ऊपर से लादी गयी, और लालच का पहला झोंका आते ही कपूर की तरह उड़ जाती है। आज रात देख तो लिया। भगवान जानता है कि मुझे आज तक अपनी चट्टान की तरह मज़बूत और अभेद ईमानदारी पर रत्तीभर भी शक़–शुबहा नहीं हुआ था–और अब, पहला बड़ा और असली प्रलोभन आया नहीं कि मैं–एडवर्ड, मुझे यक़ीन है कि इस शहर की ईमानदारी भी उतनी ही सड़ी है जितनी मेरी, उतनी ही सड़ी जितनी तुम्हारी। यह एक घटिया शहर है; कूपमण्डूक, बदबूदार शहर है यह। इसके पास कोई गुण नहीं है, सिवाय इस ईमानदारी के, जिसके लिए इसके इतने चर्चे हैं और जिस पर ये इतना इतराता फिरता है। मेरी बात गाँठ बाँध लो–जिस दिन इसकी ईमानदारी पर किसी बड़े लालच की चोट पड़ी, इसकी महान प्रतिष्ठा रेत के महल की तरह भरभराकर गिर जायेगी। आह, दिल की भड़ास निकल गयी। अब मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ। मैं कपटी हूँ; जीवनभर मैं कपट करती रही हूँ, बिना जाने। आज के बाद कोई मुझे ईमानदार न कहे–बस बहुत हो चुका।"

"मैं–देखो, मैरी, मुझे भी कुछ ऐसा ही लग रहा है; हाँ, बिल्कुल ऐसे ही लग रहा है। पर ये अजीब लगता है बड़ा अजीब लगता है, मैं कभी सोच भी नहीं सकता था–कब्भी नहीं।"

देर तक चुप्पी छायी रही; दोनों सोच में डूबे हुए थे। आख़िरकार पत्नी ने नज़र उठाई और कहा :

"मैं जानती हूँ तुम क्या सोच रहे हो, एडवर्ड।"

रिचर्ड्स ऐसे झेंप गया जैसे चोरी करते पकड़ा गया हो।

"मुझे ये क़बूल करते हुए शर्म आ रही है, मैरी, लेकिन–"

"कोई बात नहीं, एडवर्ड, मैं भी यही सोच रही थी।"

"शायद हाँ। मुझे बताओ।"

"तुम सोच रहे थे कि क्या कोई ये अनुमान लगा सकता है कि गुडसन ने उस अजनबी से *क्या बात कही थी*।"

"एकदम यही बात है। मैं अपराधी और शर्मिन्दा महसूस कर रहा हूँ। और तुम?"

"मैं इससे ऊपर उठ चुकी हूँ। चलो, इसे ढँक दें; हमें सुबह बैंक खुलने तक इस बोरी की हिफ़ाज़त करनी है, फिर हम इसे जमा कर देंगे...हे भगवान, हे भगवान–काश हमने वह ग़लती न की होती!"

बोरी ढँक दी गयी, और मैरी ने कहा :

"खुल जा सिमसिम—आख़िर वह क्या बात रही होगी? मैं सोच नहीं पा रही हूँ कि उसने क्या कहा होगा। लेकिन चलो, अब हम बिस्तर पर चलें।"

"और सो जायें?"

"नहीं; सोचें।"

"हाँ; सोचें।"

इस समय तक कॉक्स दम्पति भी अपना झगड़ा और फिर मेल पूरा कर चुके थे और शयनकक्ष में जा चुके थे—सोने नहीं, बल्कि सोचने, करवटें बदलने, खीझकर उठ बैठने और इस बात की उधेड़बुन में लगे रहने के लिए कि गुडसन ने उस दिवालिया जुआरी से क्या कहा होगा; वह स्वर्णिम कथन क्या रहा होगा; कौन से होंगे वे शब्द जिनकी क़ीमत चालीस हज़ार डॉलर नक़द है।

उस रात क़स्बे का टेलीग्राफ़ आफ़िस सामान्य से ज़्यादा देर तक खुला रहा। वजह ये थी; कॉक्स के अख़बार का फ़ोरमैन एसोसिएटेड प्रेस का स्थानीय प्रतिनिधि भी था। बल्कि ये कहना ज़्यादा सही होगा कि वह उसका मानद प्रतिनिधि था क्योंकि साल में चार मौक़े भी ऐसे नहीं होते थे जब वह स्वीकार किये जाने लायक तीस शब्द भी भेज पाता था। लेकिन इस बार सब कुछ बदल गया था। उसके हाथ जो ख़बर लगी थी उसके बारे में भेजी डिस्पैच का फ़ौरन जवाब आया;

*"पूरी ख़बर भेजो—तफ़सीलों सहित—बारह सौ शब्द।"*

ये एक ज़बर्दस्त ऑर्डर था! फ़ोरमैन ने पूरी कहानी लिख मारी; और उसके फ़ख़्र का ठिकाना न था। अगली सुबह नाश्ते के समय तक ईमान के रखवाले हैडलेबर्ग का नाम अमेरिका की हर ज़बान पर था—मौंट्रियल से लेकर मेक्सिको की खाड़ी तक, अलास्का के ग्लेशियरों से लेकर "लोरिडा के सन्तरा बागानों तक; और करोड़ों-करोड़ लोग अजनबी और उसकी सोने की बोरी की चर्चा कर रहे थे और अटकलें लगा रहे थे कि क्या सही आदमी का पता चलेगा, और उम्मीद कर रहे थे कि जल्दी ही इस मामले में कोई और ख़बर मिलेगी।

## दो

हैडलेबर्ग क़स्बा सोकर उठा तो वह विश्वविख्यात था—और अचम्भित—और प्रसन्न—और दम्भ से भरा हुआ। कल्पनातीत दम्भ से भरा हुआ। उसके उन्नीस

गणमान्य नागरिक और उनकी पत्नियाँ घूम-घूमकर एक-दूसरे से मिल रही थीं, मुस्कुरा रही थीं, दाँत निपोर रही थीं, एक-दूसरे को बधाइयाँ दे रही थीं और कह रही थीं कि इस घटना ने शब्दकोश में एक नया शब्द जोड़ दिया है–*हैडलेबर्ग*, यानी *ईमान के रखवाले* का पर्याय। अब ये नाम शब्दकोशों में हमेशा के लिए अमर हो गया! और छोटे तथा मामूली नागरिक भी अपनी पत्नियों के साथ इसी अन्दाज़ में घूम रहे थे। हर कोई बैंक जाकर सोने की बोरी देख आया था; और दोपहर होने से पहले ही ब्रिक्सटन और सभी पड़ोसी क़स्बों से दुखी और ईर्ष्यालु लोगों की भीड़ उमड़ने लगी और उस शाम और फिर अगले दिन हर जगह से प्रेस रिपोर्टर वहाँ पहुँचने लगे। वे बोरी और इसके साथ जुड़े इतिहास की पुष्टि करते और फिर हरेक अपने-अपने ढंग से सारी कहानी को नये सिरे से लिखता था। अख़बारों और पत्रिकाओं के चित्रकार बोरी, और रिचर्ड्स के मकान और बैंक, और प्रेस्बिटेरियन चर्च और बैपटिस्ट चर्च, और क़स्बे के चौक और उस टाउनहाल की तस्वीरें बना-बनाकर भेज रहे थे जहाँ सही आदमी की जाँच और उसे पैसे प्रदान करने का कार्यक्रम होना था। वे रिचर्ड्स दम्पति और बैंकर पिंकरटन, और कॉक्स, और फ़ोरमैन, और रेवरेण्ड बर्गेस, और पोस्टमास्टर के पोर्ट्रेट भी बना रहे थे। यहाँ तक कि उन्होंने जैक हैलीडे की भी तस्वीर बनाई जो क़स्बे का आवारा, मस्तमलंग, बेघर, किसी की परवाह न करनेवाला, कभी मछुआरा, कभी शिकारी, बच्चों का दोस्त, आवारा कुत्तों का दोस्त–यानी खाँटी "सैम लॉसन" था। ठिगना, काइयाँ और तेल चुपड़ा पिंकरटन तमाम आने वालों को बड़े फ़ख़्र से बोरी दिखाता था और अपनी नाज़ुक हथेलियाँ ख़ुशी से रगड़ते हुए ईमानदारी के लिए शहर की पुरानी प्रतिष्ठा और इस नये शानदार तमगे का बखान करते हुए कहता था कि उसे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि ये उदाहरण अब पूरे अमेरिका में दूर-दूर तक फैल जायेगा और नैतिक उत्थान की दृष्टि से युगान्तरकारी सिद्ध होगा, आदि-आदि।

एक हफ़्ता बीतते-बीतते सब कुछ फिर शान्त हो गया था; गर्व और ख़ुशी का बेलगाम नशा अब एक नर्म, मधुर, ख़ामोश ख़ुशी में बदल गया था–ये एक क़िस्म की गहरी भावना थी जिसे कोई नाम नहीं दिया जा सकता था, जिसका बयान नहीं किया जा सकता था। सभी चेहरों पर एक शान्त, सात्विक प्रसन्नता झलकती थी।

फिर एक बदलाव आया। ये बदलाव धीरे-धीरे हुआ; इतना धीरे-धीरे कि शुरुआत में इसकी ओर शायद ही किसी का ध्यान गया, बल्कि किसी का भी

"तैयार!–कृपया अब मुस्कुराइए"

ध्यान नहीं गया, सिवाय जैक हैलीडे के जो हमेशा हर चीज़ ताड़ लेता था और हमेशा उसका मज़ाक उड़ाता था, चाहे वह कुछ भी हो। उसने लोगों को इस बात पर फ़ब्तियाँ कसनी शुरू कर दीं कि वे उतने ख़ुश नहीं दिख रहे हैं जितने एक–दो दिन पहले थे; और फिर उसने दावा किया कि ये नया पहलू अब धीरे–धीरे पक्के तौर पर उदासी का रूप धारण कर रहा है; फिर उसने कहा कि लोगों के चेहरे बीमार लगने लगे हैं और आख़िरकार वह कहने लगा कि हर कोई इतना चिड़चिड़ा, खोया–खोया सा और अन्यमनस्क हो गया है कि वह शहर के सबसे कंजूस आदमी की पतलून की जेब में पड़ा सिक्का निकाल ले तो भी उसका ध्यान नहीं टूटेगा।

इस मंज़िल पर–या इस मंज़िल के आसपास–सभी उन्नीस मानिन्द परिवारों के मुखिया के मुँह से इस तरह की बात निकली–प्राय: ठण्डी साँस भरते हुए :

"आह, आख़िर गुडसन ने *क्या कहा होगा?*"

और उसकी पत्नी तुरन्त ही चौंककर कहती :

"ओह, ऐसा *मत करो!* कैसी भयानक बात तुम्हारे दिमाग़ में चल रही है? भगवान के लिए इससे दूर रहो!"

लेकिन अगली रात फिर यही सवाल मर्दों की ज़बान से फिसल

पड़ता–और फिर उसका प्रतिवाद होता। लेकिन पहले से कमज़ोर।

और तीसरी रात मर्दों ने फिर वही सवाल दुहराया–थोड़े क्षोभ के साथ और ख़्यालों में डूबे हुए। इस बार–और फिर अगली रात पत्नियों ने बेचैनी से पहलू बदला और कुछ कहने की कोशिश की। लेकिन कहा नहीं।

और फिर इसके बाद वाली रात वे बोल पायीं और लालसाभरे स्वर में कहा :

"ओह, काश हम अनुमान लगा पाते!"

हैलीडे की टिप्पणियाँ रोज़ ज़्यादा से ज़्यादा तीखी और गहरी मार करने वाली होती गयीं। वह घूम-घूमकर शहर में सबका मज़ाक उड़ाता था, अकेले में भी और सरेआम भी। लेकिन क़स्बे में एक उसी के पास हँसी बची थी : उसके फ़िकरे और मज़ाक एक खोखले, शोकपूर्ण ख़ालीपन और शून्य में गुम हो जाते थे। कहीं कोई मुस्कान भी मिलनी मुश्किल थी। हैलीडे सिगार के एक ख़ाली डिब्बे को कैमरे की तरह गले में लटकाये घूमता था और आने-जाने वालों को रोककर कहता था, "तैयार!–कृपया अब मुस्कुराइए," लेकिन इस मज़ाक से भी वीरान चेहरों पर मुस्कान की कोई लकीर नहीं उभरती थी।

इस तरह तीन हफ़्ते बीत गये–एक हफ़्ता बाक़ी रह गया था। शनिवार की शाम ब्यालू के बाद का समय था। पहले की तरह शनिवार की शाम की चहल-पहल, ख़रीदारी और मटरगश्ती के बजाय सड़कें ख़ाली और वीरान थीं। रिचर्ड्स और उसकी बूढ़ी पत्नी अपनी छोटी-सी बैठक में एक-दूसरे से दूर बैठे थे–उदास और गहरी सोच में डूबे हुए। अब ये उनकी रोज़ शाम की आदत बन चुकी थी। पहले की तरह कुछ पढ़ने, बुनाई करने और एक-दूसरे से बातें करने या फिर पड़ोसियों से मिलने-जुलने की जीवनभर की उनकी आदत मर चुकी थी, युगों पहले–दो या तीन हफ़्ते पहले–भुलायी जा चुकी थी; अब कोई एक-दूसरे से बातचीत नहीं करता था, कोई पढ़ता नहीं था, कोई किसी से मिलने-जुलने नहीं जाता था–पूरा क़स्बा घर पर बैठा चुपचाप आहें भरता और चिन्ता में डूबा रहता था। और अनुमान लगाता रहता था कि वह बात क्या रही होगी।

डाकिया कोई चिट्ठी डाल गया। रिचर्ड्स ने अनमने ढंग से लिफ़ाफ़े की लिखावट और डाक की मुहर पर नज़र दौड़ाई–दोनों अपरिचित थे–और फिर चिट्ठी को मेज़ पर फेंककर तमाम सम्भावित बातों के सिलसिले को आगे बढ़ाने की हताश कोशिशों में जुट गया। दो-तीन घण्टे बाद उसकी पत्नी आहें भरते हुए उठी और शुभरात्रि कहे बिना सोने जा रही थी–जो अब आम बात

थी–पर चिट्ठी को देखकर रुक गयी और कुछ देर यूँही उसे देखती रही, और फिर लिफ़ाफ़ा खोलकर उस पर नज़र फिराने लगी। कुर्सी को पीछे दीवार की ओर झुकाये और घुटनों पर ठुड्डी टिकाकर बैठे रिचर्ड्स ने कुछ गिरने की आवाज़ सुनी। ये उसकी बीवी थी। वह लपककर उसके पास गया लेकिन वह चीख़ पड़ी :

"मुझे छोड़ दो, मैं बहुत ख़ुश हूँ। चिट्ठी पढ़ो–चिट्ठी!"

वह पढ़ गया। मुँह खोले वह इसके एक-एक शब्द को जैसे निगल रहा था, उसका दिमाग़ ख़ुशी से चक्कर खा रहा था। ख़त दूर के एक राज्य से भेजा गया था और उसमें लिखा था :

*"मैं आपके लिए एक अजनबी हूँ, पर इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मुझे आपको कुछ बताना है। मैं अभी मेक्सिको से घर लौटा हूँ, और उस वाक़ए के बारे में मुझे अभी पता चला है। ज़ाहिर है आप ये नहीं जानते कि वह बात किसने कही थी, लेकिन मैं जानता हूँ और शायद मैं ही वह अकेला जीवित व्यक्ति हूँ जिसे ये बात मालूम है। वह गुडसन था। कई साल पहले वह मेरा दोस्त था। उस रात मैं आपके क़स्बे से गुज़रा था और आधी रात के वक़्त आने वाली गाड़ी का इन्तज़ार करते हुए उसके घर पर रुका था। मैंने उसे अँधेरे में अजनबी से वह बात कहते हुए सुना था–ये हेल की गली की बात है। घर लौटते हुए और फिर उसके घर में बैठकर तम्बाकू पीते हुए हम दोनों इस बारे में बातें करते रहे। उसने आपके क़स्बे के ज़्यादातर लोगों का नाम लिया–ज़्यादातर के बारे में उसकी राय अच्छी नहीं थी, लेकिन दो या तीन लोगों के बारे में उसने अनुकूल टिप्पणी की, जिनमें आप भी थे। मैं दोहरा दूँ, 'अनुकूल टिप्पणी'–इससे ज़्यादा और कुछ नहीं। मुझे याद है कि उसने कहा था कि वह शहर के किसी भी इन्सान को* **पसन्द** *नहीं करता; लेकिन आपने–मेरे* **ख़्याल से** *उसने आपका ही नाम लिया था, मुझे लगभग इस बात का यक़ीन है–कभी उसकी बड़ी मदद की थी, शायद आपको भी इस मदद के महत्त्व का ठीक से पता नहीं था। गुडसन ने कहा कि अगर उसके पास दौलत होती तो वह मरते समय आपके लिए ये दौलत और बाक़ी लोगों के नाम एक-एक गाली छोड़ जाता। इसलिए अगर वह आप ही हैं जिसने उसकी मदद की थी तो आप उसके असली वारिस हैं और सोने की बोरी पाने का हक़ आपको ही है। मुझे मालूम है कि मैं आपकी न्यायपरता और ईमानदारी पर भरोसा कर सकता हूँ क्योंकि हैडलेबर्ग के हर नागरिक को ये गुण तो विरासत में मिलते हैं। इसलिए मैं आपको वह बात बताने जा रहा हूँ। मुझे यक़ीन है कि*

*अगर आप सही व्यक्ति नहीं होंगे तो आप सही आदमी का पता लगाकर ये सुनिश्चित करेंगे कि बेचारा गुडसन अपनी मदद के बदले जो एहसान मानता था उसका कर्ज़ चुका दिया जाये। वह बात ये थी :* **'तुम बुरे आदमी नहीं हो : जाओ, सुधर जाओ।'** *"*

**"हावर्ड एल. स्टीफ़ेन्सन"**

"ओह एडवर्ड, अब ये पैसा हमारा है, और मैं कृतज्ञता से भर गयी हूँ, ओह, मैं इतनी ख़ुश हूँ—मुझे चूमो प्रिय, ज़माना हो गया हमें चूमे हुए—और हमें इसकी इतनी सख़्त ज़रूरत है—इस पैसे की—अब तुम पिंकरटन और उसके बैंक से आज़ाद हो और अब किसी की ग़ुलामी करने की ज़रूरत नहीं। मुझे तो लगता है कि मैं ख़ुशी से उड़ने लगूँगी।"

अगला आधा घण्टा बेहद ख़ुशी का था। वृद्ध दम्पति सेटी पर एक-दूसरे का हाथ थामे बैठे थे; पुराने दिन फिर लौट आये थे—वे दिन जो युवावस्था में उनके प्रेम से शुरू हुए थे और बिना किसी बाधा के तब तक चलते आये थे जब तक वह अजनबी ये घातक धन लेकर नहीं आया था। प्रेम-प्यार, हँसी-ख़ुशी की बातों के बाद पत्नी ने कहा :

"ओह एडवर्ड, कितनी ख़ुशक़िस्मती की बात है कि तुमने बेचारे गुडसन के साथ इतनी बड़ी भलाई का काम किया! मैं उसे कभी पसन्द नहीं करती थी लेकिन अब तो मुझे उस पर प्यार आ रहा है; और ये तुम्हारा बड़प्पन ही था कि तुमने कभी इसकी डींग हाँकना तो दूर इसका ज़िक्र तक नहीं किया।" फिर हल्के से उलाहने भरे अन्दाज़ में उसने कहा, "लेकिन एडवर्ड तुम्हें मुझे तो बताना चाहिए था, तुम्हें अपनी बीवी को तो बताना ही चाहिए था न।"

"ऐसा है, मैं अँ...अँ, मैरी, देखो—"

"ये टालमटोल बन्द करो और मुझे इसके बारे में बताओ, एडवर्ड। मैं हमेशा तुम्हें प्यार करती रही हूँ, और अब मुझे तुम पर फ़ख़्र महसूस हो रहा है। हर कोई मानता है कि इस क़स्बे में सिर्फ़ एक उदार भलामानस था, लेकिन अब पता चला कि तुम भी—एडवर्ड, तुम मुझे बताते क्यों नहीं?"

"देखो—अँ—अँ—मैरी, मैं नहीं बता सकता!"

"नहीं बता सकते? क्यों नहीं बता सकते?"

"क्योंकि, उसने, उसने—ऐसा है कि उसने मुझसे वादा लिया था कि मैं इसके बारे में किसी को नहीं बताऊँगा।"

उसकी पत्नी ने उसे ग़ौर से देखा, और फिर, बहुत धीरे से पूछा :

"तुमसे–वादा–लिया था? एडवर्ड, तुम मुझे ये क्यों बता रहे हो?"

"मैरी, क्या तुम सोचती हो कि मैं झूठ बोलूँगा?"

उसके चेहरे पर परेशानी झलकी और वह पल भर ख़ामोश रही, फिर उसने अपना हाथ पति के हाथ में दे दिया और कहा :

"नहीं...नहीं। हम पहले ही बहुत दूर निकल आये हैं–हे भगवान, अब ये तो न कराओ! जीवनभर तुमने कभी झूठ नहीं बोला है। लेकिन अब–जबकि हर चीज़ की बुनियाद दरकती नज़र आ रही है, हम–हम–" पलभर के लिए वह अचानक चुप हो गयी, फिर टूटे स्वर में कहा, "लोभ-लालच, माया-मोह से हमारी रक्षा करना...मेरे ख़्याल से तुमने वादा किया था, एडवर्ड। चलो, इस बात को यहीं रहने दो। हम इस प्रसंग से दूर ही रहें तो अच्छा। अब–वह सब तो बीत चुका; चलो अब हम फिर से ख़ुश हो जायें; ये परेशान होने का समय नहीं है।"

इस बात पर अमल करने में एडवर्ड को ख़ासी मशक़्कत करनी पड़ी क्योंकि उसका दिमाग़ कहीं और भटक रहा था–वह याद करने की कोशिश कर रहा था कि गुडसन के साथ उसने क्या भलाई की थी।

दोनों क़रीब सारी रात सो न सके। मैरी ख़ुश और व्यस्त थी, एडवर्ड व्यस्त था पर इतना ख़ुश नहीं। मैरी योजना बना रही थी कि पैसे से क्या-क्या करेगी। एडवर्ड भलाई का वह काम याद करने की कोशिश कर रहा था। शुरू में उसका ज़मीर उसे कचोट रहा था कि उसने मैरी से झूठ बोला–अगर वह झूठ था तो। काफ़ी सोच-विचार के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा–माना कि वह झूठ *था*, तो क्या हुआ? क्या ये इतनी बड़ी बात थी? क्या हम हमेशा ही झूठ का सहारा नहीं लेते रहते हैं? फिर उसे कह देने में क्या हर्ज़ है? मैरी को देखो–देखो उसने क्या किया। जिस वक़्त वह ईमानदारी से अपना फ़र्ज़ पूरा करने भागा जा रहा था, उस वक़्त वह क्या कर रही थी? इस बात पर पछता रही थी कि काग़ज़ों को नष्ट करके पैसे रख क्यों नहीं लिये गये। क्या चोरी झूठ बोलने से बेहतर है?

इस मुद्दे की धार कुन्द पड़ गयी–झूठ पृष्ठभूमि में चला गया और अपने पीछे एक राहत छोड़ गया। अब अगला मुद्दा सामने आ गया : क्या उसने भलाई का वह काम किया था? स्टीफ़ेन्सन के ख़त के मुताबिक इसकी गवाही तो ख़ुद गुडसन ने दी थी; इससे बेहतर साक्ष्य भला और क्या हो सकता है–बल्कि ये तो इस बात का *सबूत* था कि उसने गुडसन के साथ भलाई की थी। इसमें कोई शक़ नहीं। इस तरह ये मुद्दा भी निपट गया... लेकिन नहीं, पूरी तरह नहीं।

अचानक उठी दर्द की टीस की तरह उसे याद हो आया कि इस अनजान मि. स्टीफ़ेन्सन को भी हल्का सा अनिश्चय था कि भलाई करने वाला रिचर्ड्स ही था या कोई और–ओह, अब बात रिचर्ड्स की न्यायनिष्ठा पर आ टिकी थी! अब उसे ख़ुद ही ये फ़ैसला करना था कि पैसा कहाँ जाये–और मि. स्टीफ़ेन्सन को इस बात पर कोई शक़ नहीं था कि अगर वह ग़लत आदमी होगा तो वह ईमानदारी से ख़ुद ही जाकर सही आदमी का पता लगा लेगा। ओह, किसी इन्सान को ऐसी हालत में डालना बड़ी ही नीच हरकत थी–आह, क्या स्टीफ़ेन्सन ये सन्देह छोड़े बिना नहीं रह सकता था? भला क्यों उसने अपने ख़त में इसकी गुंजाइश छोड़ी?

और सोच-विचार। ऐसा कैसे हुआ कि सही आदमी के तौर पर *रिचर्ड्स* का ही नाम स्टीफ़ेन्सन के दिमाग़ में रह गया, किसी और का नहीं? ये बात तो जम रही है। हाँ, ये वाक़ई ठीक लगती है। बल्कि वह लगातार बेहतर से और बेहतर लगने लगी–और फिर धीरे-धीरे वह बढ़कर बिल्कुल ठोस सबूत में बदल गयी। और फिर रिचर्ड्स ने फ़ौरन इस मामले को अपने दिमाग़ से निकाल दिया क्योंकि उसके दिल से एक आवाज़ आयी कि एक बार जब कोई *सबूत* पक्का हो जाये तो उससे छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए।

अब वह काफ़ी राहत महसूस कर रहा था, लेकिन अब भी एक छोटी सी तफ़सील बाक़ी थी जो बार-बार उसका ध्यान खींच रही थी : बेशक़ उसने भलाई का काम किया था–ये तो साबित हो चुका था; लेकिन वह काम आख़िर था क्या? उसे याद करना ही होगा–उसे याद किये बग़ैर वह सो नहीं सकता था; इसके बिना उसकी मन की शान्ति अधूरी रहेगी। और इसलिए वह सोचता रहा, सोचता रहा। उसने दर्ज़न भर चीज़ें सोचीं–तमाम ऐसे भलाई के कामों और मदद के तरीक़ों के बारे में सोचा, लेकिन इनमें से कोई भी पर्याप्त नहीं जान पड़ा, इनमें से कोई भी इतना बड़ा नहीं लगा कि उसके बदले गुडसन अपनी दौलत उसके नाम कर जाने की बात कहता। और फिर, सबसे बड़ी बात ये थी कि उसे याद ही नहीं आ रहा था कि उसने ये काम किया था। तब फिर–तब फिर–किस क़िस्म की मदद होगी वह जो एक आदमी को इस क़दर एहसानमन्द बना दे? आह–उसकी आत्मा को सही रास्ते पर लाना! हाँ, यही बात होगी। हाँ, अब उसे याद आ रहा है, कि कैसे उसने एक बार तय किया था कि गुडसन को सही राह पर ले आयेगा और इस कोशिश में जुटा रहा था–वह कहने जा रहा था, तीन महीने तक; लेकिन थोड़ा ग़ौर से जाँचने पर वह सिकुड़कर एक महीना, फिर एक हफ़्ता, फिर एक दिन और फिर कुछ

मिनट रह गया। हाँ, अब उसे याद आ गया, बिल्कुल साफ़–साफ़ याद हो आया कि गुडसन ने उससे क्या कहा था–भाड़ में जाओ और अपने काम से काम रखो; उसे हैडलेबर्ग वालों के पीछे–पीछे स्वर्ग जाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी!

इस तरह ये समाधान भी नाकाम रहा–उसने गुडसन की आत्मा की रक्षा भी नहीं की थी। रिचर्ड्स हतोत्साहित होने लगा। फिर कुछ देर बाद एक और ख़्याल आया : क्या उसने गुडसन की सम्पत्ति बचाई थी? नहीं, ये नहीं चलेगा–उसके पास कुछ था ही नहीं। उसकी ज़िन्दगी? हाँ, यही था! बेशक्। अरे, उसे तो पहले ही इसका ख़्याल आना चाहिए था। निस्सन्देह, इस बार वह सही राह पर था। एक मिनट में उसकी कल्पना के घोड़े दौड़ने लगे थे।

इसके बाद, बुरी तरह थका देने वाले दो घण्टों के दौरान वह गुडसन की ज़िन्दगी बचाने में लगा रहा। उसने तमाम तरह के मुश्किल और जोखिमभरे तरीक़ों से उसकी जान बचाई। हर मामले में वह एक निश्चित बिन्दु तक उसे तसल्लीबख़्श ढंग से बचा ले आता था; फिर जैसे ही उसे विश्वास होने लगता था कि ऐसा वाक़ई हुआ था, कोई मुश्किल पैदा करनेवाला ब्योरा सामने आ जाता था जिससे पूरा मामला असम्भव लगने लगता था। उदाहरण के लिए, डूबने वाला मामला। इस मामले में वह तैरकर गया था और बेहोश हालत में गुडसन को किनारे खींच लाया था; अच्छी–ख़ासी भीड़ जमा थी और उसकी तारीफ़ की जा रही थी, लेकिन जब उसने पूरा किस्सा सोच लिया था और इस बारे में सारी बातें याद कर रहा था, तभी इसे ख़ारिज करने वाले ब्योरों का पूरा झुण्ड आ पहुँचा : इस घटना के बारे में पूरे क़स्बे को मालूम पड़ा होता, मैरी भी इसे जान गयी होती, और सबसे बढ़कर ये बात ख़ुद उसकी याददाश्त में चमकते सितारे की तरह मौजूद रहती, न कि ये कोई ऐसी मदद होती जो उसने शायद "अनजाने में ही कर दी थी।" और इसी समय उसे याद आया कि वह तो तैरना ही नहीं जानता था।

आह–*इस* बिन्दु की तो वह शुरू से ही अनदेखी करता आ रहा था : ये तो कोई ऐसी मदद होनी चाहिए जो उसने शायद "अनजाने में की थी।" वाक़ई, इसे ढूँढ़ना तो ज़्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए–बाकियों के मुक़ाबले तो काफ़ी आसान होगा यह। और बेशक्, सोचते–सोचते, उसने इसे पा ही लिया। बहुत साल पहले नैन्सी ह्यूइट नाम की एक प्यारी और ख़ूबसूरत लड़की से गुडसन शादी करने ही वाला था, लेकिन किसी वजह से सगाई टूट गयी। वह लड़की मर गयी, गुडसन ज़िन्दगी भर कुँआरा रहा और धीरे–धीरे कड़वाहट से भरता गया और लोगों से खुल्लमखुल्ला नफ़रत करने लगा। लड़की की मौत के कुछ

ही दिन बाद क़स्बे वालों ने पता लगाया, या सोचा कि उन्होंने पता लगाया है कि उसकी रगों में चम्मचभर नीग्रो ख़ून भी मिला हुआ था। रिचर्ड्स देर तक इन ब्योरों पर काम करता रहा और आख़िरकार उसने सोच लिया कि उसे इस सम्बन्ध में ऐसी बातें याद हो आयी हैं जो लम्बी उपेक्षा के कारण उसकी स्मृति में कहीं खो गयी थीं। उसे लगा कि उसे इस बात की धुंधली सी याद है कि नीग्रो ख़ून के बारे में उसी ने पता लगाया था; कि वही था जिसने क़स्बेवालों को ये बात बताई थी; कि क़स्बेवालों ने गुडसन को बता दिया था कि उन्हें इसका पता किससे चला; कि इस तरह उसने गुडसन को उस दाग़ी लड़की से शादी करने से बचा लिया था; कि उसने "बिना इसका पूरा मोल जाने" उसकी ये महान मदद की थी; लेकिन गुडसन इसका मोल जानता था और ये भी समझता था कि वह कैसे बाल-बाल बचा है, और इसलिए वह मरते दम तक अपने उद्धारक का एहसानमन्द रहा और ये कामना करता रहा कि उसके पास दौलत होती तो उसके नाम कर जाता। अब सब कुछ बिल्कुल साफ़ और सीधा था, और वह ज्यों-ज्यों इस पर सोचता गया ये ज़्यादा से ज़्यादा चमकदार और निश्चित लगने लगा; और आख़िरकार जब वह सन्तुष्ट और प्रसन्नचित्त होकर सोने लगा, तो उसे सारा मामला इस तरह याद हो आया जैसे ये कल की ही बात हो। यहाँ तक कि उसे इस बात की भी धुँधली-सी याद आयी कि गुडसन ने कभी इस बात का ज़िक्र किया था कि वह उसके प्रति कितना कृतज्ञ है। इस बीच मैरी ने अपने लिए एक नये मकान और अपने पादरी के लिए एक जोड़ी नयी चप्पलों पर छह हज़ार डॉलर ख़र्च कर दिये थे और फिर शान्ति से सो गयी थी।

शनिवार की उसी शाम डाकिये ने बाक़ी मानिन्द नागरिकों में से हरेक के घर एक ख़त पहुँचाया था—कुल उन्नीस ख़त। कोई भी दो लिफ़ाफ़े एक-से नहीं थे और उन पर लिखे किन्हीं भी दो पतों की लिखावट भी एक-सी नहीं थी, लेकिन भीतर रखे ख़त हूबहू एक जैसे थे, सिर्फ़ एक ब्योरे को छोड़कर। वे रिचर्ड्स को मिले ख़त की हूबहू प्रतिलिपियाँ थीं—लिखावट भी एक-सी थी—और सब पर स्टीफ़ेन्सन के दस्तख़त थे, बस रिचर्ड्स के नाम की जगह हर पाने वाले का नाम आ गया था।

सारी रात अठारह मानिन्द नागरिक वही करते रहे जो उनका वर्ग-बन्धु रिचर्ड्स उस समय कर रहा था—उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा ये याद करने में लगा दी कि आख़िर उन्होंने बिना ध्यान दिये बारक्ले गुडसन के साथ कौन सी भलाई की थी। ये क़तई आसान काम नहीं था; फिर भी वे कामयाब रहे।

और जिस दौरान वे इस काम में लगे थे, जो कठिन था, उनकी बीवियाँ सारी रात पैसे को ख़र्च करने में जुटी थीं, जो आसान था। उस एक रात में उन्नीस बीवियों ने बोरी के चालीस हज़ार डॉलरों में से औसतन सात–सात हज़ार ख़र्च किये–कुल मिलाकर एक सौ तैंतीस हज़ार डॉलर।

अगले दिन जैक हैलीडे हैरान रह गया। उसने देखा कि उन्नीस प्रमुख नागरिकों और उनकी बीवियों के चेहरों पर फिर से शान्त और सात्विक प्रसन्नता का भाव विराजमान है। वह इसे समझ नहीं पाया, और न ही इस बारे में कोई ऐसी करारी टिप्पणी सोच पाया जो उसमें ख़लल डाले या उसे नुकसान पहुँचाये। और इस तरह अब जीवन से दुखी होने की बारी उसकी थी। इस ख़ुशी के कारणों के बारे में उसके सारे अनुमान जाँच में ग़लत साबित हुए। जब वह मिसेज़ विल्कॉक्स से मिला और उनके चेहरे पर छाया निर्मल आनन्द देखा, तो उसने ख़ुद से कहा, "इसकी बिल्ली ने बच्चे दिये हैं"–और जाकर उनके बावर्ची से पूछा; ऐसा नहीं था, बावर्ची ने भी उनकी ख़ुशी पर ध्यान दिया था लेकिन कारण उसे नहीं पता था। जब हैलीडे ने हूबहू ऐसा ही आनन्द "पिचके पेट वाले" विल्सन के चेहरे पर देखा, तो उसे पक्का यक़ीन हो गया कि विल्सन के किसी पड़ोसी की टाँग टूट गयी है, लेकिन जाँच से साबित हुआ कि ऐसा नहीं है। ग्रेगरी येट्स के चेहरे पर दबे–दबे से हर्ष के भाव का एक ही मतलब हो सकता था–उसकी सास उसे अलविदा कह गयी है; ये एक और ग़लती थी। "और पिंकरटन–उसने ज़रूर ऐसे दस सेण्ट वसूल लिये हैं जिन्हें वह गँवाया मान बैठा था।" ऐसा ही हर मामले में हुआ। कुछ मामलों में उसके अनुमान सन्दिग्ध रहे और ज़्यादातर में वे सरासर ग़लत साबित हुए। आख़िरकार हैलीडे ने ख़ुद से कहा, "जो भी हो, लगता है हैडलेबर्ग के ये उन्नीस परिवार अस्थायी रूप से स्वर्ग में हैं : मुझे नहीं पता ये कैसे हुआ; मैं बस ये जानता हूँ कि विधाता आज छुट्टी पर है।"

हाल ही में बगल के राज्य से आये एक आर्किटेक्ट और बिल्डर ने इस क़स्बे में छोटा–मोटा कारोबार शुरू किया था और उसका साइनबोर्ड टँगे एक हफ़्ता हो गया था। अब तक एक भी ग्राहक नहीं आया था। वह हताश हो चला था और ख़ुद को कोस रहा था कि यहाँ क्यों आया। लेकिन अब अचानक उसके जीवन में बहार आ गयी। एक के बाद एक प्रमुख नागरिक की बीवी अकेले में आकर उससे कहती थी :

"अगले हफ़्ते हमारे घर आइये–लेकिन फ़िलहाल किसी से कुछ मत कहियेगा। हम नया मकान बनाने की सोच रहे हैं।"

उस दिन उसे ग्यारह आमंत्रण मिले। उसी रात उसने अपनी बेटी को ख़त लिखा और अपने छात्र से होने वाली उसकी सगाई तोड़ दी। उसने कहा कि अब वह इससे ऊँचे तबके में शादी कर सकती है।

बैंकर पिंकरटन और दो–तीन अन्य धनी–मानी व्यक्ति ज़िला–परिषद का चुनाव लड़ने की सोच रहे थे—लेकिन उन्होंने अभी इन्तज़ार करने का फ़ैसला किया। इस तरह के लोग अण्डों से चूज़े निकलने के पहले ही उनकी गिनती शुरू नहीं कर देते।

विल्सन दम्पति ने एक नयी शानदार चीज़ सोची—एक फ़ैन्सी ड्रेस नाच पार्टी। उन्होंने सीधे कोई वादा तो नहीं किया लेकिन अपने तमाम जानने वालों को अकेले में बता दिया कि वे इस बारे में सोचते रहे हैं और उन्हें लगता है कि अब इसका समय आ गया है—"और ज़ाहिर है, अगर हमने पार्टी दी तो आपको तो आना ही होगा।" लोग चकित थे और एक–दूसरे से कहते थे, "इन बेचारे विल्सनों का दिमाग़ फिर गया है, अरे, ये पार्टी का ख़र्च कहाँ से उठायेंगे।" उन्नीस में से कई ने अकेले में अपने पतियों से कहा, "वैसे ये ख़्याल अच्छा है, हम उनकी घटिया पार्टी हो जाने का इन्तज़ार करेंगे, और फिर ऐसी शानदार पार्टी देंगे कि उनकी वाली को याद कर उबकाई आ जाये।"

दिन बीतते गये और भावी फ़िज़ूलख़र्चियाँ बढ़ती गयीं, ज़्यादा से ज़्यादा बेलगाम, ज़्यादा से ज़्यादा मूर्खतापूर्ण और अँधाधुँध होती गयीं। ऐसा लगने लगा कि उन्नीस की मण्डली का हर सदस्य पैसे मिलनेवाले दिन से पहले ही न केवल अपने पूरे चालीस हज़ार डॉलर ख़र्च कर डालेगा बल्कि पैसे हाथ में आने तक कर्ज़ में डूब चुका होगा। कुछ ख़रदिमाग़ लोग तो सिर्फ़ ख़र्च करने की योजना तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि वास्तव में ख़र्च करना शुरू कर दिया—उधार पर। उन्होंने ज़मीनें, फ़ार्म, कम्पनियों के शेयर, बढ़िया कपड़े, घोड़े और तमाम दूसरी चीज़ें ख़रीदीं, कुछ रक़म चुकाई और बाक़ी दस दिन में चुकाने का वादा कर दिया। फिर एक दूसरी सोच उन पर हावी होने लगी और हैलीडे ने ध्यान दिया कि कई चेहरों पर एक मनहूस बेचैनी दिखने लगी है। एक बार फिर वह उलझन में पड़ गया और कुछ नहीं समझ पाया कि इससे क्या मतलब निकाले। "विल्कॉक्स के बिल्ली के बच्चे मरे नहीं हैं क्योंकि वे तो पैदा ही नहीं हुए थे; किसी की टाँग नहीं टूटी है; साँसों की गिनती में कोई कमी नहीं आयी है; कुछ भी नहीं हुआ है—ये तो एक अबूझ रहस्य बन गया है।"

एक और आदमी इन दिनों उलझन में था—पादरी मि. बर्गेस। कुछ दिनों से

वह जहाँ भी जाता, लगता था कि लोग उसका पीछा करते हैं या उसकी घात में रहते हैं; और जब भी वह किसी सुनसान जगह पर होता तो उन्नीस में से कोई एक अचानक वहाँ नमूदार होता, उसके हाथ में चुपके से एक लिफ़ाफ़ा थमाता, धीरे से फुसफुसाता "इसे शुक्रवार की शाम टाउनहाल में खोलना है," और फिर चोर की तरह वहाँ से खिसक लेता। वह उम्मीद कर रहा था कि बोरी का शायद ही कोई दावेदार हो क्योंकि गुडसन मर चुका था–लेकिन उसने कभी ख़्वाब में भी नहीं सोचा था कि ये सारी जमात दावेदार हो सकती है। आख़िरकार जब बहुप्रतीक्षित शुक्रवार का दिन आया तो उसने पाया कि उसके पास उन्नीस लिफ़ाफ़े हैं।

## तीन

टाउनहाल पहले कभी इतना सजा–धजा नहीं था। मंच के पीछे रंग–बिरंगे पर्दे टँगे थे; दीवारें रंग–बिरंगे बन्दनवार से सजी थीं; दीर्घाओं को भी झण्डियों से ढँक दिया गया था; हॉल के खम्भे तक झण्डियों से पूरी तरह ढँके थे–ये सब अजनबी पर प्रभाव जमाने के लिए किया गया था क्योंकि यक़ीनन वह वहाँ दल–बल समेत आयेगा, और इस बात की भी पूरी उम्मीद थी कि प्रेस वालों से भी उसके अच्छे रिश्ते होंगे। हॉल खचाखच भरा था। उसकी सभी 412 सीटें भर चुकी थीं; गलियारे में लगायी गयी 68 अतिरिक्त कुर्सियाँ भरी हुई थीं; कुछ जाने–माने बाहरी लोगों को मंच पर बिठाया गया था; और मंच के सामने और दोनों बगल लगी मेजों पर लगभग हर जगह से आये विशेष संवाददाता विराजमान थे। क़स्बे के लोगों ने शायद ही कभी इतने बढ़िया कपड़े पहने हों। बहुत सी महिलाएँ मँहगा मेकअप धारण किये हुए थीं और कई सजी–धजी महिलाओं को देखकर ही लग रहा था कि वे ऐसी पोशाकों की आदी नहीं हैं।

सोने की बोरी मंच के सामने की ओर एक छोटी मेज़ पर रखी थी जहाँ से पूरा सदन उसे देख सकता था। ज़्यादातर लोग उसे एक गहरी रुचि, मुँह में पानी ला देने वाली रुचि, उत्कण्ठापूर्ण और उदास रुचि के साथ देख रहे थे; पर उन्नीस दम्पति उसे बड़े प्यार से, कोमलता से और स्वामित्वपूर्ण दृष्टि से देख रहे थे और इस छोटी–सी मण्डली का पुरुष अर्द्धांश उन छोटे–छोटे आशु भाषणों को मन ही मन दोहरा रहा था जो जल्दी ही उन्हें उठकर दर्शकों की तालियों और बधाइयों के जवाब में देने थे। थोड़ी–थोड़ी देर में इनमें से कोई अपनी वास्कट की जेब से काग़ज़ का एक पुर्ज़ा निकालकर इस पर नज़र फिरा लेता था।

ज़ाहिर है लोगों की बातचीत की भनभनाहट लगातार जारी थी—जैसाकि हमेशा ही होता है; लेकिन अन्त में जब रेव. मि. बर्गेस उठे और अपना हाथ बोरी पर रखा तो ऐसी ख़ामोशी छा गयी कि वह अपनी चमड़ी के जीवाणुओं के कुतरने की आवाज़ सुन सकते थे। उन्होंने बोरी की विचित्र कथा बयान की और फिर बेदाग़ ईमानदारी की हैडलेबर्ग की पुरानी और मेहनत से अर्जित प्रतिष्ठा के बारे में और इस प्रतिष्ठा के प्रति क़स्बे के गर्व के बारे में गर्मजोशी के साथ बताया। उन्होंने कहा कि ये प्रतिष्ठा एक अनमोल ख़ज़ाना है; कि विधाता की मर्ज़ी से अब इसका मूल्य अतुलनीय रूप से बढ़ गया है क्योंकि हाल के प्रसंग ने इस ख्याति को दूर-दूर तक फैला दिया है और इस तरह पूरी अमेरिकी दुनिया की आँखें इस क़स्बे पर टिक गयी हैं। और उन्हें आशा और विश्वास है कि इसका नाम हमेशा के लिए व्यावसायिक ईमानदारी के पर्याय के रूप में अमर हो जायेगा। (*ज़ोरदार तालियाँ।*) "और इस ख्याति का रखवाला कौन होगा—पूरा समुदाय? नहीं! ज़िम्मेदारी व्यक्तिगत चीज़ है, सामुदायिक नहीं। आज से आप में से हरेक ख़ुद इसका विशेष रखवाला होगा और ये देखना हरेक की ज़िम्मेदारी होगी कि इसे कोई ठेस न पहुँचे। क्या आप—क्या आपमें से हरेक—इस महती दायित्व को उठाने के लिए तैयार हैं? (*ज़बर्दस्त शोर के साथ हामी भरी जाती है।*) ठीक है, ठीक है। इस ज़िम्मेदारी को आपको अपने बच्चों और अपने बच्चों के बच्चों को सौंपना है। आज आपकी सदाक़त पर कोई उँगली नहीं उठा सकता—ये ध्यान रखिये कि हमेशा ऐसा ही रहे। आज आपके बीच एक भी शख़्स ऐसा नहीं है जिसे दूसरे की फूटी कौड़ी को भी हाथ लगाने के लिए बहकाया जा सके—इस यक़ीन को क़ायम रखना आप सबका फ़र्ज़ है। (*"ऐसा ही होगा! ऐसा ही होगा!!"*) अपने और दूसरे क़स्बों के बीच मुक़ाबला करने का ये समय नहीं है—हालाँकि उनमें से कुछ हमारे प्रति शालीन नहीं रहे हैं; उनका तौरे-ज़िन्दगी अलग है, हमारा अलग। हमें अपने में सन्तुष्ट रहना चाहिए। (*तालियाँ।*) मैं अपनी बात पूरी करता हूँ। दोस्तो, मेरे हाथ के नीचे एक अजनबी की दी हुई वह सनद है, जिससे आज सारा ज़माना जान जायेगा कि हम क्या हैं। हम नहीं जानते कि वह कौन है लेकिन आप सबकी ओर से मैं उसे शुक्रिया अदा करता हूँ, और चाहूँगा कि आप भी बुलन्द आवाज़ में ऐसा ही करें।"

पूरा हॉल एक साथ उठ खड़ा हुआ और उसके कृतज्ञताज्ञापन से पूरे एक मिनट तक दीवारें थर्राती रही। फिर लोग बैठ गये, और मि. बर्गेस ने अपनी जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाला। उन्होंने लिफ़ाफ़ा फाड़कर खोला और उसमें

से काग़ज़ का एक पुर्ज़ा निकाला; इस दौरान पूरा सदन साँस रोके बैठा रहा। उन्होंने काग़ज़ पर लिखी इबारत पढ़कर सुनाई–धीरे-धीरे और असरदार ढंग से–श्रोतागण मंत्रमुग्ध से इस जादुई दस्तावेज़ को सुन रहे थे, जिसके एक-एक शब्द का मोल सोने की एक सिल्ली के बराबर था :

*"मुश्किल में फँसे अजनबी से मैंने ये कहा था : "तुम क़तई बुरे आदमी नहीं हो; जाओ, सुधर जाओ।"* उन्होंने आगे कहा : "अभी पल भर में हमें पता चल जायेगा कि ये जुमला बोरी में बन्द शब्दों से मेल खाता है या नहीं; और अगर ऐसा होता है–और निस्सन्देह ऐसा ही होगा–तो सोने की ये बोरी हमारे एक शहरी की हो जायेगी जो आज के बाद पूरे मुल्क के सामने ईमानदारी की एक मिसाल बन जायेगा–उसका नाम है, मि. विल्सन!"

सदन ने खुद को ज़बर्दस्त हर्षध्वनि के विस्फोट के लिए तैयार कर लिया था; लेकिन ऐसा करने के बजाय उसे मानो लकवा मार गया। एक-दो पल तक गहरा सन्नाटा छाया रहा, फिर पूरे हॉल में फुसफुसाहटों और बुदबुदाहटों की एक लहर दौड़ गयी–जिसका भाव कुछ इस प्रकार था : "*बिलसन!* अरे नहीं, ये कैसे हो सकता है! एक अजनबी को–या किसी को भी–बीस डॉलर दे दे–वह भी *बिलसन*! ये बात किसी और को बताना!" और इसी समय अचानक एक और अचम्भे से सदन की साँस अटक गयी, क्योंकि पता चला कि हॉल के एक हिस्से में गिरजे का कर्मचारी बिलसन सर झुकाये खड़ा था और दूसरे हिस्से में वकील विल्सन भी ऐसा ही कर रहा था। अब कुछ देर तक हैरानी भरी ख़ामोशी छायी रही। कोई भी कुछ समझ नहीं पा रहा था और उन्नीस दम्पति चकित और क्रुद्ध थे।

बिलसन और विल्सन ने मुड़कर एक-दूसरे को घूरकर देखा। बिलसन ने तीखी आवाज़ में पूछा :

"*आप* क्यों खड़े हो गये, मि. विल्सन?"

"क्योंकि मुझे ऐसा करने का हक़ है। लेकिन मेहरबानी करके आप लोगों को ये बताने की तकलीफ़ करें कि *आप* क्यों खड़े हो गये।"

"बड़ी ख़ुशी से। क्योंकि वह ख़त मैंने लिखा है।"

"ये एक बेशर्मीभरा झूठ है! मैंने खुद इसे लिखा है।"

अब हक्का-बक्का होने की बारी बर्गेस की थी। वह भौचक दोनों को देख रहे थे और समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। पूरे सदन को सनाका मार गया था। वकील विल्सन ने ऊँची आवाज़ में कहा :

"मैं सभापति महोदय से कहना चाहता हूँ कि काग़ज़ पर लिखा पूरा नाम

पढ़ा जाये।"

इससे सभापति महोदय को जैसे होश आ गया और उन्होंने नाम पढ़कर सुनाया :

"जॉन वार्टन *बिलसन।*"

"देखा!" बिलसन चिल्लाया, "अब आप क्या कहेंगे? और आपने यहाँ जो छल-कपट करने की कोशिश की है उसके लिए आपको मुझसे और इस अपमानित सदन से माफ़ी माँगनी होगी।"

"कोई माफ़ी माँगने की ज़रूरत नहीं है। और जहाँ तक बाक़ी का सवाल है, मैं भरी सभा में आप पर ये इल्ज़ाम लगाता हूँ कि आपने मि. बर्गेस के पास से मेरा ख़त चुरा लिया और इसकी नक़ल अपने नाम से जमा कर दी। इसके सिवा और किसी तरीक़े से आप उन शब्दों का पता पा ही नहीं सकते थे। ज़िन्दा लोगों में सिर्फ़ और सिर्फ़ मैं इन शब्दों के रहस्य को जानता था।"

अगर ये ऐसे ही चलता रहा तो तय था कि भारी बदनामी होगी। सब ये देखकर चिन्तित थे कि पत्रकार बेतहाशा शार्टहैण्ड में लिखे जा रहे थे। कई लोग चिल्ला रहे थे, "सभापति महोदय, सभापति महोदय! शान्ति, शान्ति!" बर्गेस ने मेज़ पर मुगरी से ठक-ठक की और कहा :

"हमें अपनी शराफ़त नहीं भूलनी चाहिए। ज़ाहिर है कहीं कोई चूक हुई है, बस यही बात है। अगर मि. विल्सन ने मुझे कोई लिफ़ाफ़ा दिया था—और अब मुझे याद आ रहा है कि उन्होंने दिया था—हाँ, वह मेरे पास है।"

उन्होंने अपनी जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाला, उसे खोला, उस पर एक नज़र डाली, चकित और चिन्तित दिखे, और कुछ पल चुपचाप खड़े रहे। फिर उन्होंने खोये-खोये से और यांत्रिक अन्दाज़ में हाथ हिलाया और कुछ कहने की कोशिश की, मानो हार मानकर कोशिश छोड़ दी। कई आवाज़ें पुकार उठीं :

"इसे पढ़िए! इसे पढ़िए! क्या है ये?"

उन्होंने स्तब्ध मुद्रा में पढ़ना शुरू किया, जैसे नींद में चलते हुए बोल रहे हों :

*"दुखी अजनबी से मैंने ये कहा था : 'तुम बुरे आदमी नहीं हो।* (सदन अचरज से उनकी ओर देख रहा था।) *जाओ, सुधर जाओ।'"* (फुसफुसाहटें : "अरे! इसका क्या मतलब है?") "इस पर," सभापति ने कहा, "दस्तख़त हैं, थर्लो जी. विल्सन।"

"देख लिया!" विल्सन चिल्लाया, "मेरे ख़्याल से अब ये तय हो गया! मैं अच्छी तरह जानता था कि मेरा ख़त चुराया गया था।"

"चुराया!" बिलसन ने कड़ककर जवाब दिया। "मैं तुम्हें बताये देता हूँ कि तुम या तुम्हारी औक़ात के किसी भी आदमी ने अगर–"

सभापति : "शान्त हो जाइए, भद्रजनो, शान्त हो जाइए! आप दोनों कृपया अपनी-अपनी जगह बैठ जायें।"

ग़ुस्से में बड़बड़ाते और सिर हिलाते हुए दोनों बैठ गये। सदन बुरी तरह चकरा गया था; उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस विचित्र संकट का क्या हल किया जाये। फिर थॉमसन खड़ा हुआ। थॉमसन टोपियाँ बनाता था। वह भी उन्नीस की जमात में शामिल होना चाहता था, लेकिन उसकी ये ख़्वाहिश अधूरी ही रह गयी थी। उसकी टोपियों की दुकान इस हैसियत के लायक नहीं समझी जाती थी। उसने कहा :

"सभापति महोदय, आपकी इजाज़त से मैं ये कहना चाहता हूँ कि क्या ये दोनों महानुभाव सही हो सकते हैं? मैं इसका फ़ैसला आप पर छोड़ता हूँ जनाब, कि क्या ऐसा हो सकता है कि इन दोनों ने अजनबी से हूबहू एक ही शब्द कहे हों? मुझे तो लगता है–"

चमड़ासाज़ ने उठकर उसे टोका। चमड़ासाज़ एक असन्तुष्ट व्यक्ति था। वह ख़ुद को उन्नीस में से एक होने लायक मानता था लेकिन उसे मान्यता नहीं मिल सकी थी। इससे उसके हावभाव और बोली में थोड़ी कड़वाहट आ गयी थी। वह बोला :

"असल मुद्दा *ये* नहीं है! ऐसा इत्तफाक तो सौ-पचास साल में एकाध बार हो सकता है। पर दूसरी वाली बात नहीं हो सकती। इन दोनों में से *किसी ने भी* बीस डॉलर नहीं दिये होंगे!" (*समर्थन भरी हँसी की लहर।*)

बिलसन : "*मैंने दिये थे!*"

विल्सन : "*मैंने दिये थे!*"

फिर दोनों ने एक-दूसरे पर चोरी का इल्ज़ाम लगाया।

सभापति : "शान्ति! कृपया बैठ जाइए–आप दोनों बैठ जाइए। इन दोनों में से कोई भी ख़त पलभर के लिए भी मुझसे अलग नहीं हुआ है।"

एक आवाज़ : "बहुत अच्छे–इसका तो निपटारा हो गया!"

चमड़ासाज़ : "सभापति जी, एक बात तो अब साफ़ हो गयी कि इन दोनों में से कोई दूसरे के पलंग के नीचे छुपकर जासूसी करता रहा है और अगर ऐसा कहना असंसदीय न समझा जाये, तो मैं कहूँगा कि ये दोनों ही ऐसा कर सकते हैं। (सभापति : "आर्डर! आर्डर!") मैं ये बात वापस लेता हूँ और बस इतना कहना चाहूँगा कि अगर इनमें से किसी ने इम्तहानी-जुमला अपनी पत्नी

को बताते हुए दूसरे को सुना है, तो हम अभी उसे पकड़ लेंगे।"

एक आवाज़ : "कैसे?"

चमड़ासाज़ : "आसानी से। दोनों ने वह बात हूबहू एक जैसे शब्दों में नहीं कही है। अगर दोनों मज़मून पढ़े जाने के बीच ख़ासे समय और एक दिलचस्प झगड़े का फ़ासला नहीं होता तो आपका भी ध्यान इस ओर गया होता।"

एक आवाज़ : "क्या अन्तर है? बताओ, बताओ।"

चमड़ासाज़ : "विल्सन के ख़त में *क़तई* शब्द है जो दूसरे में नहीं है।"

कई आवाज़ें : "ठीक कह रहा है—बात सच है!"

चमड़ासाज़ : "और अगर सभापति जी बोरी में रखे इम्तहानी ख़त को पढ़ें तो हमें पता चल जायेगा कि इन दो धोखेबाज़ों—(सभापति : "आर्डर!")—इन दो बेईमानों—(सभापतिः "आर्डर! आर्डर!")—इन दो शरीफ़ज़ादों (*हँसी और तालियाँ*)—में से वह कौन है जो इस शहर के पहले और अकेले बेईमान आदमी की पदवी का हक़दार है—वह कौन है जिसने इस शहर को बदनाम किया है और जिसके लिए आज के बाद यहाँ जीना दूभर हो जायेगा!" (*ज़ोरदार तालियाँ।*)

कई आवाज़ें : "बोरी खोलिए!—बोरी को खोलिए!"

मि. बर्गेस ने बोरी में एक चीरा लगाया, अपना हाथ भीतर डाला और एक लिफ़ाफ़ा निकाला। इसके भीतर मोड़कर रखे गये दो ख़त थे। उन्होंने कहा :

"इनमें से एक पर लिखा है, 'इसे तब तक न खोला जाये जब तक सभापति के नाम लिखे सारे ख़त—यदि कोई हो तो—पढ़ न लिये जायें।' दूसरे पर लिखा है *'इम्तहान।'* मैं इसे पढ़ता हूँ :

'"मेरे मददगार की बात का पहला हिस्सा हूबहू दोहराया जाये ये ज़रूरी नहीं क्योंकि इसमें ऐसी कोई खासियत नहीं थी और कोई उसे भूल सकता है। लेकिन बाद के पन्द्रह लफ़्ज़ असाधारण थे और मेरे ख़्याल से ये आसानी से भूलने वाले नहीं हैं। अगर इन्हें हूबहू न पेश किया जाये तो उस दावेदार को धोखेबाज़ समझा जाये। मेरे मददगार ने शुरू में ये कहा कि वह शायद ही किसी को सलाह देता है लेकिन जब देता है तो वह लाख टके की बात होती है। फिर उसने ये कहा—जो मुझे कभी भूला नहीं है : "*तुम बुरे आदमी नहीं हो—*"'

एक साथ पचास आवाज़ें : "चलो तय हो गया—ये पैसा विल्सन का है! विल्सन! विल्सन! भाषण! भाषण! भाषण!"

लोग कूदकर विल्सन के इर्दगिर्द जमा हो गये। उससे हाथ मिलाने और बधाई देने वालों में होड़ लगी थी—और इस बीच सभापति मेज़ पर मुगरी

पटक–पटककर चिल्ला रहे थे :

"शान्त हो जाइए, महानुभावो! शान्त हो जाइए, शान्त हो जाइए! मुझे पूरा पढ़ने दीजिए।" जब शान्ति क़ायम हो गयी तो उन्होंने आगे पढ़ना शुरू किया :

*"जाओ, सुधर जाओ–वरना, मेरी बात ग़ौर से सुनो–किसी दिन अपने पापों के लिए तुम मरकर नर्क जाओगे या फिर हैडलेबर्ग–***कोशिश करो कि नर्क में ही जाओ।***"*

एक मनहूस सन्नाटा छा गया। पहले तो नागरिकों के चेहरों पर ग़ुस्से की काली छाया छा गयी; फिर धीरे–धीरे ग़ुस्से का बादल छँटने लगा और एक गुदगुदी का भाव उसकी जगह लेने की कोशिश करने लगा; वह इतनी कड़ी कोशिश कर रहा था कि उसे बड़े कष्ट से ही दबाया जा रहा था। पत्रकार, ब्रिक्सटनवाले और अन्य बाहरी लोगों ने सिर नीचे कर चेहरों को हाथों से ढँक लिया और पूरी ताक़त और शिष्टाचार का सारा ज़ोर लगाकर किसी तरह अपनी हँसी रोकी। इस अत्यन्त असामयिक मौक़े पर अचानक ख़ामोशी में एक अकेली आवाज़ गूँज उठी–ये जैक हैलीडे था :

"वाह, ये हुई न बात!"

इसके बाद तो पूरे सदन में बेसाख़्ता हँसी फूट पड़ी। यहाँ तक कि मि. बर्गेस भी संजीदा न रह पाये, इससे दर्शकों ने मान लिया कि उन्हें हर तरह के लिहाज़ से औपचारिक छूट दे दी गयी है और उन्होंने इस मौक़े का भरपूर फायदा उठाया। लोग दिल खोलकर पूरी ताक़त से देर तक ठहाके लगाते रहे, लेकिन आख़िरकार हँसी थमी–इतनी देर तक कि मि. बर्गेस आगे पढ़ने की कोशिश कर सकें और अपनी आँखें थोड़ी–बहुत पोंछ सकें; इसके बाद फिर हँसी फूट पड़ी, फिर थमी और फिर गूँज उठी; लेकिन आख़िरकार मि. बर्गेस ये संजीदा बातें कहने में कामयाब हो गये :

"अब सच्चाई पर पर्दा डालने की कोशिश बेकार है। हमारे सामने एक बेहद संगीन मसला है। ये आपके शहर की आबरू का सवाल है–इसने सीधे शहर की नेकनामी पर चोट की है। मि. बिलसन और मि. विल्सन के ख़तों में एक लफ़्ज़ का अन्तर अपने आप में एक संजीदा बात थी क्योंकि इससे ज़ाहिर होता था कि इन दोनों महानुभावों में से एक ने चोरी की है–"

दोनों व्यक्ति टूटे–कुचले, बेजान से बैठे थे, लेकिन ये शब्द सुनते ही दोनों के बदन में जैसे बिजली दौड़ गयी और वे लपककर उठने लगे।

"बैठ जाइए!" सभापति ने तुर्शी के साथ कहा, और दोनों ने निर्देश का पालन किया। "जैसाकि मैंने कहा, वह एक संजीदा बात थी–लेकिन उनमें से

सिर्फ़ एक के लिए। लेकिन अब मसला और भी संगीन हो गया है क्योंकि आप दोनों की इज़्ज़त ख़तरे में है। बल्कि मैं तो कहूँगा कि ऐसे ख़तरे में है जिससे बच निकलना नामुमकिन है। दोनों ने सबसे महत्त्वपूर्ण बीस शब्द छोड़ दिये हैं।" वह रुक गये। कुछ देर तक उन्होंने हॉल में हावी सन्नाटे का असर गहराने दिया और फिर कहा : "ऐसा सिर्फ़ एक हालत में हो सकता है। मैं इन दोनों महानुभावों से पूछता हूँ–क्या ये *मिलीभगत* थी?–*समझौता* था?"

सदन में एक धीमी फुसफुसाहट एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड़ गयी जिसका आशय था, "दोनों गये काम से।"

बिलसन ऐसी आपात स्थितियों का आदी नहीं था; वह लस्त-पस्त पड़ा था। लेकिन विल्सन वकील था। वाह किसी तरह खड़ा हुआ, उसका चेहरा ज़र्द और परेशान दिख रहा था। उसने कहना शुरू किया :

"मैं इस अत्यन्त पीड़ादाई मामले को समझाने की कोशिश करूँगा और मैं चाहता हूँ कि सदन मेरी बात पर ध्यान दे। मुझे ये सब कहने में अफ़सोस हो रहा है क्योंकि इससे मि. बिलसन की प्रतिष्ठा को भारी ठेस पहुँचेगी जिनका मैंने अब तक हमेशा ही सम्मान किया है, और किसी लालच के आगे न झुकने की जिनकी क्षमता में मैं हमेशा विश्वास करता रहा हूँ–जैसाकि आप सब भी करते रहे हैं। लेकिन ख़ुद अपनी प्रतिष्ठा के लिए मुझे सब कुछ साफ़-साफ़ कहना पड़ेगा। मैं शर्मिन्दगी के साथ ये स्वीकार करता हूँ–और मैं इसके लिए आप सबसे क्षमायाचना करता हूँ–कि मैंने उस बरबाद अजनबी से वह पूरी बात कही थी जो इम्तहानी मज़मून में लिखी है, वे अपमानजनक बीस लफ़्ज़ भी मैंने कहे थे। (भीड़ में हलचल।) जब अख़बार में ये ख़बर छपी तो मुझे सब याद आ गया और मैंने सोने की बोरी हासिल करने की ठान ली क्योंकि हर तरह से ये मेरा हक़ बनता था। अब मैं चाहूँगा कि आप इस मुद्दे पर ग़ौर से सोचें; उस रात अजनबी मेरे प्रति बेइन्तहा एहसानमन्द था; उसने ख़ुद कहा कि वह अपनी कृतज्ञता शब्दों में नहीं जता सकता और अगर कभी वह सक्षम हुआ तो इसके बदले में मुझे हज़ार गुना चुकायेगा। अब मैं आपसे पूछता हूँ; क्या मैं ये उम्मीद कर सकता था–क्या मैं ये सोच भी सकता था–क्या मैं सपने में भी ये कल्पना कर सकता था–कि ऐसी भावना के बावजूद वह इतना एहसानफ़रामोश हो जायेगा कि अपने इम्तहान में उन्हीं अनावश्यक बीस लफ़्ज़ों को शामिल कर देगा?–मेरे लिए इस तरह जाल बिछायेगा?–इस तरह सार्वजनिक स्थल पर, मेरे अपने लोगों के सामने, ख़ुद अपने शहर की निन्दा करने वाले के रूप में मेरा भण्डाफोड़ करेगा? ये एकदम अनर्गल बात थी; ये

असम्भव था। मुझे इस बात में ज़रा भी सन्देह नहीं था कि उसके इम्तहान में मेरी बात के सिर्फ़ शुरुआती लफ़्ज़ होंगे। आपने भी ऐसा ही सोचा होता। आप एक ऐसे इन्सान से ऐसे घटिया विश्वासघात की उम्मीद नहीं कर सकते जिसे आपने दोस्त समझा और जिसके ख़िलाफ़ आपने कोई ग़लत काम नहीं किया। और इसलिए पूरे यक़ीन के साथ, पूरे भरोसे के साथ, मैंने एक काग़ज़ पर शुरुआती शब्द–"जाओ, सुधर जाओ" तक लिखे, और उस पर दस्तख़त कर दिये। मैं उसे लिफ़ाफ़े में बन्द करने ही वाला था कि मुझे किसी काम से दफ़्तर के भीतर वाले कमरे में जाना पड़ा और मैंने बिना सोचे काग़ज़ अपनी मेज़ पर पड़ा छोड़ दिया।" वह रुका, धीरे से अपना सिर विल्सन की ओर घुमाया, पलभर इन्तज़ार किया, और फिर कहा : "इस नुक्ते पर ग़ौर किया जाये; जब कुछ देर बाद मैं लौटा तो मि. बिलसन बाहर वाले दरवाज़े से निकल रहे थे।" (*लोगों में हलचल।*)

अगले ही क्षण विल्सन खड़ा होकर चिल्ला रहा था :

"ये झूठ है! ये एक बेहूदा सफ़ेद झूठ है!"

सभापति : "कृपया बैठ जाइए! मि. विल्सन को बात पूरी करने दीजिए।" विल्सन के दोस्तों ने उसे खींचकर बैठाया और शान्त किया। विल्सन ने फिर बोलना शुरू किया :

"मैं सिर्फ़ तथ्य आपके सामने रख रहा हूँ। मेरा ख़त अब मेज़ पर उस जगह से खिसका हुआ था जहाँ मैं उसे छोड़ गया था। इस ओर मेरा ध्यान गया पर मैंने इसे गम्भीरता से नहीं लिया और सोचा कि शायद ऐसा हवा की वजह से हुआ होगा। मि. विल्सन एक निजी ख़त पढ़ेंगे, ये बात मेरे दिमाग़ में ही नहीं आयी; वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं, और ऐसी हरकत नहीं कर सकते। अगर आपकी इज़ाज़त हो तो मैं कहना चाहूँगा कि अब उनके ख़त में आये फालतू शब्द 'क़तई' को भी समझा जा सकता है : ये याददाश्त का दोष है। मैं दुनिया का अकेला इन्सान हूँ जो इम्तहानी मज़मून का कोई भी हिस्सा यहाँ पेश कर सकता था–सम्मानजनक ढंग से। मुझे और कुछ नहीं कहना है।"

भाषण कला की चालों और भ्रमजालों से अनभिज्ञ श्रोताओं के मानसिक तंत्र को गड़बड़ा देने, उनके विश्वासों को उलट-पुलट देने और भावनाओं को भ्रष्ट कर देने के लिए एक असरदार भाषण से बढ़कर दुनिया में कोई चीज़ नहीं होती। विल्सन विजयी भाव से अपनी सीट पर बैठ गया। सदन ने समर्थनभरी हर्षध्वनि के ज्वार में उसे डुबो दिया; दोस्तों ने उसे घेर लिया और उससे हाथ मिलाने और बधाइयाँ देने लगे जबकि विल्सन को चिल्लाकर चुप करा दिया

गया और एक शब्द भी बोलने नहीं दिया गया। सभापति अपनी मुगरी पीटे जा रहे थे और चिल्ला रहे थे :

"लेकिन कार्रवाई आगे तो बढ़ाने दीजिए, महानुभावो, कार्रवाई आगे तो बढ़ाने दीजिए!"

आख़िरकार थोड़ी शान्ति हुई और टोपीसाज़ ने कहा :

"लेकिन अब आगे बढ़ने के लिए बचा ही क्या है जनाब, बस पैसे ही तो देने हैं?"

कई आवाज़ें : "हाँ! हाँ! आगे आओ विल्सन!"

टोपीसाज़ : "थ्री चियर्स फॉर मि. विल्सन, जो प्रतीक हैं उस विशेष सद्‌गुण के–"

उसकी बात पूरी होने के पहले ही लोगों ने हिप-हिप-हुर्रे करना शुरू कर दिया था, और इस हंगामे और मुगरी की ठक-ठक के बीच कुछ उत्साही जनों ने विल्सन को एक मज़बूत दोस्त के कन्धे पर चढ़ा दिया और विजेता की तरह उसे मंच की ओर ले चले। तभी इस शोर के ऊपर सभापति की चीख़ती आवाज़ सुनाई दी :

"बैठ जाइए! अपनी-अपनी जगहों पर वापस जाइए! आप भूल रहे हैं कि अब भी एक दस्तावेज़ पढ़ा जाना बाक़ी है।" जब शान्ति बहाल हो गयी तो उन्होंने काग़ज़ उठाया और उसे पढ़ने जा रहे थे पर ये कहते हुए उसे वापस रख दिया, "मैं भूल गया; इसे तब तक नहीं पढ़ना है जब तक मुझे मिले सभी ख़त पढ़ न लिये जायें।" उन्होंने अपनी जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाला, उसे खोला, भीतर के काग़ज़ पर नज़र डाली–भौचक्के से दिखायी दिये–उसे हाथ में थामकर देखते रहे–बल्कि उसे घूरने लगे।

बीस-तीस आवाज़ों ने चिल्लाकर पूछा,

"क्या है ये? पढ़िए! पढ़िए!"

और उन्होंने पढ़ना शुरू किया–धीमे-धीमे और चकित स्वर में :

"अजनबी से मैंने ये कहा था–(आवाज़ें : "ओए, ये क्या माजरा है?") 'तुम बुरे आदमी नहीं हो। (आवाज़ें : "सुभानअल्ला! सुभानअल्ला") जाओ, सुधर जाओ।' (एक आवाज़ : "वो मारा पापड़वाले ने!") दस्तख़त हैं, मि. पिंकरटन, बैंकर।"

अब ख़ुशी का जो फव्वारा छूटा और जो हुल्लड़ मचा वह भद्रजनों को रुला देने के लिए काफ़ी था। हमेशा धीर-गम्भीर रहने वाले लोग भी इस क़दर हँसे कि आँखों से आँसू निकल आये; हँसी के दौरों के बीच कुछ लिखने की

सदन में ज़बर्दस्त हँसी-ठट्‌ठे का माहौल था

कोशिश में पत्रकारों की कापियाँ ऐसी टेढ़ी-मेढ़ी आकृतियों से भर गयीं जिन्हें पढ़ पाना नामुमकिन था; और एक सोया हुआ कुत्ता बुरी तरह डरकर उछला और बेतहाशा भौंकने लगा। शोर-शराबे में तरह-तरह की आवाज़ें बिखरी थीं : "हम अमीर हो रहे हैं–दो-दो ईमान के पुतले!" "विल्सन को क्यों छोड़ दिया?" "तीन हो गये!–विल्सन को भी गिनो–जितने हों उतना अच्छा!" "ठीक है–बिलसन को भी चुन लिया!" "बेचारा विल्सन! दो-दो चोरों का शिकार!"

एक ऊँची आवाज़ : "ख़ामोश! सभापति ने जेब से कुछ और निकाला है।"

आवाज़ें : "हुर्रा! कुछ नया है क्या? पढ़िए! पढ़िए, पढ़िए!"

सभापति (पढ़ता है) : 'मैंने जो बात कही थी' वग़ैरह-वग़ैरह। 'तुम बुरे आदमी नहीं हो। जाओ,' वग़ैरह। दस्तख़त, 'ग्रेगरी येट्स'।"

आवाज़ों का तूफ़ान : "चार पुतले!" "येट्स की जय हो!" "निकालिए, निकालिए; और निकालिए!"

सदन में ज़बर्दस्त हँसी-ठट्ठे का माहौल था और लोग इस मौक़े का पूरा मज़ा लूटना चाहते थे। उन्नीस की जमात में से कई घबराये और चिन्तित दिखते हुए उठकर भीड़ के बीच से गलियारे की ओर बढ़ने लगे, लेकिन बीसियों आवाज़ें एक साथ उठीं :

"दरवाज़े बन्द करो, सारे दरवाज़े बन्द कर दो; ईमान का कोई पुतला यहाँ से जाने न पाये! बैठ जाइए, सब लोग बैठ जाइए!" आदेश का पालन किया गया।

"और निकालिए! पढ़िए! पढ़िए!"

सभापति ने फिर जेब में हाथ डाला, और एक बार फिर उनके होठों से परिचित शब्द झरने लगे–'तुम बुरे आदमी नहीं हो–'

"नाम! नाम! नाम क्या है?"

"एल. इंगोल्ड्सबी सार्जेण्ट।"

"पाँच हो गये! ईमान के पुतलों की भरमार हो रही है! चलते रहिए, चलते रहिए!"

'तुम बुरे आदमी नहीं हो–'

"नाम! नाम!"

'निकोलस व्हिटवर्थ।'

"हुर्रे! हुर्रे! ये दिन है प्रतीकों का!

मौक़ा है लतीफ़ों का!"

कोई मस्ती की तरंग में चिल्लाया और इस तुकबन्दी को दिलकश 'मिकाडो" धुन पर गाना शुरू कर दिया। दर्शक भरपूर आनन्द के साथ इसमें शामिल हो गये, और तभी, ठीक समय पर, किसी ने एक और पंक्ति जोड़ी–

"पर तुम ये न भूलो प्यारे–"

सदन ने भरपूर गले से इसे दोहराया। तीसरी पंक्ति भी तुरन्त ही मुहैया कराई गयी–

"हैडलेबर्ग का नाम अमर करेंगे–"

सदन ने इसे भी गला फाड़कर दोहराया। जैसे ही आख़िरी स्वर मन्द पड़ा, जैक हैलीडे की ऊँची और साफ़ आवाज़ में छन्द की अन्तिम पंक्ति गूँज उठी–

"ईमान के ये पुतले हमारे!"

इसे ज़ोरदार उत्साह के साथ गाया गया। फिर ख़ुशी से भरे सदन ने शुरू से शुरू किया और भरपूर तरन्नुम के साथ चारों पंक्तियाँ दो बार दोहरायीं।

फिर चारों ओर से लोग सभापति पर चिल्लाने लगे :

"आगे बढ़िए! आगे बढ़िए! पढ़िए! कुछ और पढ़िए! आपके पास जितने हैं सब पढ़िए!"

"बिल्कुल, बिल्कुल–आगे बढ़िए! आज हमारा नाम अमर होने से कोई माई का लाल नहीं रोक पायेगा!"

तभी एक दर्ज़न लोग खड़े होकर विरोध प्रकट करने लगे। उन्होंने कहा कि ये सारी नौटंकी किसी आवारा-मसख़रे की करामात है और इससे हैडलेबर्ग के पूरे समाज का अपमान हो रहा है। इसमें कोई शक़ नहीं कि ये सारे दस्तख़त जाली हैं।

"बैठ जाओ! बैठ जाओ! और अपना मुँह बन्द रखो! बचने के लिए बहाने गढ़ रहे हो तुम। अभी *तुम्हारे* नाम भी आने ही वाले हैं।"

"सभापति महोदय, आपके पास ऐसे कितने लिफ़ाफ़े हैं?"

सभापति ने गिने।

"अब तक पढ़े जा चुके ख़तों को मिलाकर, कुल उन्नीस हैं।"

खिल्ली उड़ाती हर्षध्वनि का तूफ़ान फट पड़ा।

"शायद इन सभी में वह राज़ है। मेरा प्रस्ताव है कि आप सब लिफ़ाफ़े खोलें और इस तरह के ख़त के दस्तख़त को पढ़ते जायें–और ख़त के पहले पाँच शब्द भी पढ़ दें।"

"प्रस्ताव का समर्थन कीजिए!"

प्रस्ताव प्रचण्ड ध्वनिमत से पारित हो गया। फिर बेचारा रिचर्ड्स खड़ा हुआ और फिर उसकी पत्नी भी धीरे से उठकर उसकी बगल में खड़ी हो गयी। उसका सिर झुका हुआ था, ताकि कोई ये न देख सके कि वह रो रही है। उसके पति ने उसे सहारा दिया और कँपकँपाती आवाज़ में बोलने लगा :

"मेरे दोस्तो, हम दोनों–मैरी और मैं–जीवनभर इसी शहर में, आपके बीच रहते आये हैं। और मैं सोचता हूँ कि आप हमें पसन्द करते रहे हैं और हमारा सम्मान करते रहे हैं–"

सभापति ने उसे बीच में ही टोक दिया :

"माफ़ी चाहता हूँ। आप जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सच है मि. रिचर्ड्स; ये शहर आप दोनों को जानता है; ये आपको पसन्द करता है; ये आपकी क़द्र करता है; और इससे भी बढ़कर ये आपका सम्मान करता है और आपको प्यार करता है–"

हैलीडे की आवाज़ गूँज उठी :

"ये बात सोलह आने सच है! अगर आप सभापति जी से सहमत हों तो एक साथ उठकर बोलिए। चलिए, उठिए! हिप! हिप! हिप!–एक साथ बोलिए!"

पूरा हॉल एक साथ खड़ा हुआ, सब उत्साह के साथ वृद्ध दम्पति की ओर मुड़े, हवा में सैकड़ों रूमाल लहराये और पूरे दिल से सबने एक साथ हिप-हिप हुर्रे का जयकारा लगाया।

सभापति ने आगे कहा : "मैं ये कहना चाह रहा था : हम जानते हैं कि आप कितने नेकदिल इन्सान हैं मि. रिचर्ड्स, लेकिन गुनहगारों के साथ दरियादिली दिखाने का ये मौक़ा नहीं है। (*"सही है! सही है!" की आवाज़ें*) आपके चेहरे से ही आपकी उदार नीयत का पता चल जाता है, लेकिन मैं आपको इन लोगों के साथ रहम की गुज़ारिश करने की इजाज़त नहीं दे सकता–"

"लेकिन मैं तो अपने–"

"कृपा करके बैठ जाइए मि. रिचर्ड्स। हमें बचे हुए सारे ख़त पढ़ने ही चाहिए–वरना उन लोगों के साथ नाइंसाफ़ी होगी जिनका भाँडा पहले फूट चुका है। मैं आपको ज़बान देता हूँ, जैसे ही ये काम पूरा हो जायेगा, हम आपकी बात सुनेंगे।"

कई आवाज़ें : "सही है!–सभापति की बात सही है–अब बीच में कोई

रुकावट नहीं होनी चाहिए! आगे बढ़िए!–नाम बताइए, नाम!–प्रस्ताव का पालन कीजिए!"

वृद्ध दम्पति हिचकिचाते हुए बैठ गये और रिचर्ड्स ने पत्नी के कान में कहा, "इन्तज़ार करना और भी दुखदाई है। हमें तब और भी ज़्यादा शर्मिन्दगी होगी जब उन्हें पता चलेगा कि हम तो दरअसल अपने लिए माफ़ी माँगने जा रहे थे।"

नाम पढ़े जाने के साथ ही एक बार फिर मस्ती का आलम छा गया।

"'तुम बुरे आदमी नहीं हो–' दस्तख़त, 'राबर्ट जे. टिटमार्श।'"

"'तुम बुरे आदमी नहीं हो–' दस्तख़त, "एलीफ़ालेट वीक्स।'"

"'तुम बुरे आदमी नहीं हो–' दस्तख़त, 'ऑस्कर बी. विल्डर।'"

इस बिन्दु पर लोगों को अचानक ये ख़्याल आया कि शुरुआती पाँच शब्दों के लिए सभापति को क्यों ज़हमत दी जाये। उन्हें कोई एतराज़ नहीं हुआ। इसके बाद वह हरेक रुक्के को उठाते और इन्तज़ार करते। सदन एक साथ नपे-तुले और लयबद्ध सुर में इन पाँच शब्दों को दोहराता था (जो एक प्रसिद्ध चर्चगीत की धुन से काफ़ी मिलता-जुलता था)–"तुम बुरे आऽऽऽ दमी नहींऽऽऽ हो।" फिर सभापति कहते थे, "दस्तख़त, 'आर्चीबाल्ड विल्कॉक्स।"' एक के बाद एक नाम आता रहा और उन्नीस दूना अड़तीस अभागों को छोड़कर बाक़ी सबको ख़ूब मज़ा आ रहा था। बीच-बीच में, जब कोई ख़ास प्रतिष्ठित नाम ऊपर आ जाता तो सदन सभापति को इन्तज़ार करने का इशारा करके पूरा इम्तहानी मज़मून शुरू से लेकर इन आख़िरी शब्दों तक दोहराता था, "वरना नर्क में जाओगे या हैडलेबर्ग में–कोशिश करो नर्क में ही जाऽऽऽ ओ ऽऽऽ!" और इन ख़ास मामलों में वे ज़ोरदार ढंग से ये भी जोड़ देते थे, "आऽऽऽमीन!"

फ़ेहरिस्त घटती गयी, घटती गयी, घटती गयी... बेचारा रिचर्ड्स एक-एक नाम गिन रहा था, ख़ुद से मिलता-जुलता कोई नाम पुकारा जाते ही उसका कलेजा मुँह को आ जाता था और बुरी तरह घबराये हुए वह उस मनहूस घड़ी का इन्तज़ार कर रहा था जब अपमान का घूँट पीने की बारी उसकी होगी और वह मैरी के साथ उठकर क्षमायाचना करेगा, जिसे वह इन शब्दों में पेश करने की सोच रहा था : "...क्योंकि अब तक हमने कभी कोई ग़लत काम नहीं किया है, बल्कि किसी को उँगली उठाने का मौक़ा दिये बिना विनम्रता से अपनी राह पर चलते रहे हैं। हम बहुत ग़रीब हैं, हम बूढ़े हैं, और हमारे कोई बाल-बच्चे नहीं हैं जो हमारी मदद कर सकें; हम बुरी तरह ललचा गये, और हमने घुटने टेक दिये। जब मैं अपना गुनाह कुबूल करने और माफ़ी माँगने के

लिए उठा था तो मैं ये गुज़ारिश करना चाहता था कि मेरा नाम इस सार्वजनिक स्थल पर न पुकारा जाये, क्योंकि हमें लगा कि हम इसे बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे; लेकिन हमें रोक दिया गया। यही उचित था; हमें भी औरों के साथ इस ज़लालत का सामना करना ही चाहिए था। हम पर ये सब बहुत भारी गुज़रा है। हमने पहली बार किसी की ज़ुबान से अपना नाम कलंकित होते हुए सुना है। पुराने दिनों की ख़ातिर हम पर रहम कीजिए; हम पर शर्मिन्दगी का बोझ हल्का से हल्का रखने की कोशिश कीजिए। हम आपका एहसान कभी नहीं भूलेंगे।" तभी मैरी ने बगल में कोंच कर उसे दिवास्वप्न से जगा दिया; वह समझ गयी थी कि उसका ध्यान कहीं और है। हॉल गूँज रहा था, "तुम बुरे आ-द-मी," आदि-आदि।

"तैयार हो जाओ," मैरी ने फुसफुसाकर कहा। "अब तुम्हारा नाम आने वाला है; वह अठारह पढ़ चुका है।"

भीड़ का अलाप पूरा हो गया।

"अगला! अगला! अगला!" हॉल में चारों ओर से आवाज़ें आयीं।

मि. बर्गेस ने जेब में हाथ डाला। वृद्ध दम्पति काँपते हुए उठने लगे। मि. बर्गेस एक पल तक जेब में टटोलते रहे, फिर कहा :

"लगता है, मैं सारे पढ़ चुका हूँ।"

ख़ुशी और हैरानी से जैसे ग़श खाकर दोनों अपनी सीटों में धँस गये, और मैरी ने फुसफुसाकर कहा :

"ओह, भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है, हम बच गये! उससे हमारा वाला गुम हो गया है—मैं इसके बदले ऐसी सौ बोरियाँ छोड़ दूँ!"

हॉल में "मिकाडो" की पैरोडी गूँज उठी जिसे उत्तरोत्तर बढ़ते उत्साह के साथ तीन बार गाया गया। तीसरी बार जब ये अन्तिम पंक्ति गाई जा रही थी तो सारे लोग खड़े हो गये—

"ईमान के ये पुतले हमारे!"

और फिर सबने "हैडलेबर्ग की पवित्रता और इसके अठारह अमर प्रतिनिधियों" के नाम की ज़ोरदार जय-जयकार की।

फिर जीनसाज़ विनगेट ने उठकर ये प्रस्ताव रखा कि "शहर के सबसे खरे इन्सान, अकेले मानिन्द नागरिक जिन्होंने पैसा चुराने की कोशिश नहीं की, यानी एडवर्ड रिचर्ड्स" के नाम की जय-जयकार की जाये।

इस पर पूरे जोशोख़रोश और दिल को छू लेने वाले उत्साह के साथ अमल किया गया। फिर किसी ने प्रस्ताव किया कि "रिचर्ड्स को हैडलेबर्ग की पवित्र

परम्परा का एकमात्र संरक्षक और प्रतीक चुना जाये, जिसके पास इस शहर की ओर से दुनिया की उपहासपूर्ण नज़रों का सामना करने का पूरा अधिकार और माद्दा हो।"

इसे ध्वनिमत से पारित कर दिया गया; फिर उन्होंने "मिकाडो" की धुन दुबारा गाई और इस पंक्ति के साथ गाना ख़त्म किया–

"ईमान के ये पुतले हमारे!"

कुछ देर ख़ामोशी रही; फिर–

एक आवाज़ : "हाँ तो, अब बोरी किसे मिलेगी?"

चमड़ासाज़ (*तीखे व्यंग्य भरे स्वर में*) : "ये तो आसान है। पैसे को ईमान के अठारह पुतलों में बाँट दिया जाना चाहिए। उन सबने बेचारे अजनबी को बीस–बीस डॉलर–और वह नेक सलाह–दी थी बारी–बारी से। यहाँ से उनका जुलूस गुज़रने में पूरे बाईस मिनट ख़र्च हुए हैं। अजनबी को दिये–कुल मिलाकर 360 डॉलर। अब वे सिर्फ़ अपना कर्ज़ वापस चाहते हैं–सूद–ब्याज़ सहित–बस चालीस हज़ार डॉलर।"

कई आवाज़ें (*हँसी उड़ाते हुए*) : "ये हुई न बात! बाँट दो! बाँट दो! बेचारे ग़रीबों पर दया करो–अरे अब और इन्तज़ार न कराओ इनसे।"

सभापति : "ऑर्डर! अब मैं अजनबी का आख़िरी दस्तावेज़ पढ़ता हूँ। इसमें लिखा है : 'अगर कोई दावेदार सामने न आये (*शोर*), तो मैं चाहूँगा कि आप बोरी खोलें और आप अपने शहर के मानिन्द नागरिकों के सामने पैसे गिनें, और इसे उनकी देखरेख में सौंप दिया जाये (*"ओह! ओह! ओह!" की आवाज़ें*), और वे इस पैसे को आपके शहर की अटूट ईमानदारी की प्रतिष्ठा के प्रचार–प्रसार और संरक्षण के लिए जैसे उचित समझें ख़र्च करें (*फिर शोर*)–उनके नाम और उनके सद्प्रयास इस प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा देंगे।' (*उपहासपूर्ण फ़िकरे और तालियाँ।*) शायद इतना ही है। नहीं, नहीं–एक नोट भी है :

"'हैडलेबर्ग के नागरिको : इम्तहानी जुमले जैसी कोई चीज़ नहीं है–किसी ने ऐसा कुछ नहीं कहा था। (*ज़बर्दस्त सनसनी*) न तो कोई दिवालिया अजनबी था, न ही किसी ने बीस डॉलर की मदद की थी, और न ही उपदेश और सलाह दी थी–ये सब कल्पना की उपज है। (*चारों ओर हैरत और ख़ुशी की फुसफुसाहटें।*) मैं अपनी कहानी सुनाने की इजाज़त चाहता हूँ, ज़्यादा लम्बी नहीं है। एक बार मैं आपके शहर से गुज़रा और मुझे बेवजह गहरी ठेस पहुँचाई गयी थी। कोई और होता तो आपमें से एक–दो को मारकर बदला

चुका लेता, लेकिन मुझे ये बदला बहुत मामूली लगा, और नाकाफ़ी भी, क्योंकि मुर्दों को तकलीफ़ नहीं होती। दूसरे, मैं आप सबको तो मार नहीं सकता था—और, वैसे भी, मेरी फ़ितरत ऐसी है कि ऐसा करके भी मुझे तसल्ली नहीं होती। मैं इस शहर के एक-एक आदमी—और एक-एक औरत—को बरबाद कर देना चाहता था—उनके जान-माल को नहीं बल्कि उनके घमण्ड को चूर-चूर कर देना चाहता था मैं। कमज़ोर और बेवकूफ़ लोगों की सबसे बड़ी कमज़ोरी उनका घमण्ड ही है। इसलिए मैं भेस बदलकर लौटा और आप लोगों को बारीक़ी से परखता रहा। आप आसानी से शिकार बनाये जा सकते थे। आपके पास ईमानदारी की पुरानी और उच्च प्रतिष्ठा थी, और स्वाभाविक रूप से आपको इस पर गर्व था। ये आपका बेशक़ीमती ख़ज़ाना था, आपकी आँखों की पुतली थी। जैसे ही मुझे पता लगा कि आप ख़ुद को और अपने बच्चों को बड़ी सावधानी और सतर्कता के साथ लालच से दूर रखते हैं, मैं समझ गया कि मेरा रास्ता क्या होगा। अरे नादानो, सबसे कमज़ोर वह सद्‌गुण है जो किसी अग्निपरीक्षा से नहीं गुज़रा। मैंने एक योजना तैयार की और नामों की एक फ़ेहरिस्त बनाई। मेरा मंसूबा था कभी भ्रष्ट न हो सकने वाले हैडलेबर्ग को भ्रष्ट करना। मैं क़रीब पचास ऐसे बेदाग़ औरत-मर्दों को झुट्ठों और चोट्टों में तब्दील कर देना चाहता था जिन्होंने जीवन में कभी न तो झूठ बोला था और न कभी एक छदाम भी चुराया था। बस मुझे गुडसन से डर था। वह न तो हैडलबर्ग में जन्मा था, न यहाँ पला-बढ़ा था। मुझे डर था कि अगर मैंने अपना ख़त आपके सामने पेश कर अपनी योजना पर काम शुरू किया, तो आप ख़ुद से कहेंगे, 'हमारे बीच गुडसन ही वह अकेला शख़्स है जो किसी बेचारे को बीस डॉलर दे सकता है'—और फिर आप मेरे झाँसे में नहीं आते। लेकिन ऊपर वाले ने गुडसन को अपने पास बुला लिया। फिर मैं निश्चिन्त हो गया और मैंने अपना जाल बिछाया और चुग्गा डाल दिया। हो सकता है मैं उन सब को न पकड़ पाऊँ जिन्हें मैंने वह जाली इम्तहानी जुमला डाक से भेजा था, लेकिन अगर मैंने हैडलेबर्ग की फ़ितरत को ठीक से पहचाना है तो मुझे यक़ीन है कि ज़्यादातर को मैं फँसा लूँगा। (आवाज़ें : "क्या निशाना साधा है—एक-एक को पकड़ लिया!") मुझे यक़ीन है कि ये बेचारे, ललचाये गये, और ऐसी स्थितियों से अनजान लोग जुए के पैसे को भी छोड़ेंगे नहीं, उसे भी चुरा लेंगे। मुझे उम्मीद है कि मैं आपके घमण्ड को हमेशा-हमेशा के लिए कुचल डालने में कामयाब रहूँगा और हैडलेबर्ग को एक नयी ख्याति दूँगा—ऐसी कुख्याति जो पीछा नहीं छोड़ेगी और दूर-दूर तक फैल जायेगी। अगर मैं कामयाब रहा हूँ

तो बोरी खोलिए और 'हैडलेबर्ग प्रतिष्ठा के प्रसार और संरक्षण की कमेटी' को मंच पर बुलाइए।"'

आवाज़ों का तूफ़ान : "खोलिए! खोलिए! चलो अठारहो, सामने आओ! परम्परा के प्रसार की कमेटी! बढ़ चलो—ईमान के पुतलो!"

सभापति ने बोरी का मुँह खोल दिया और मुट्ठीभर चमकते, बड़े-बड़े, पीले सिक्के उठाये, उन्हें हिलाया, फिर ध्यान से देखा।

"दोस्तो, ये बस सीसे के गोल टुकड़े हैं जिन पर सुनहली पॉलिश चढ़ी है!"

इस ख़बर पर ज़बर्दस्त ख़ुशी का शोर फूट पड़ा, और जब हंगामा शान्त हुआ तो चमड़ासाज़ ने आवाज़ लगायी :

"इस धन्धे में उनकी महारत को देखते हुए मि. विल्सन परम्परा के प्रसार की कमेटी के अध्यक्ष होने चाहिए। मेरा सुझाव है कि वह अपने हमजोलियों की तरफ़ से आगे आयें और ये पैसा स्वीकार करें।"

एक साथ सौ आवाज़ें : "विल्सन! विल्सन! विल्सन! भाषण! भाषण!"

विल्सन (*गुस्से से काँपती आवाज़ में*) : "मैं ये कहने की इजाज़त चाहूँगा, और भाषा की ऐसी की तैसी, भाड़ में जाये ये पैसा!"

एक आवाज़ : "ओहो, क्या शराफ़त है!"

एक आवाज़ : "अब सत्रह पुतले बचे! आइए, महानुभावो, अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार कीजिए!"

कोई जवाब नहीं आया—ख़ामोशी छायी रही।

जीनसाज़ : "सभापति जी, जो भी हो भूतपूर्व गणमान्यों में से हमारे बीच एक साफ़-सुथरा इन्सान अब भी बचा है; और उन्हें पैसों की ज़रूरत है, और वे इसके हक़दार भी हैं। मेरा प्रस्ताव है कि आप जैक हैलीडे को ये ज़िम्मा सौंपें कि वह मंच पर जाकर बीस-बीस डॉलर के उन नक़ली सिक्कों की बोरी की नीलामी बोले और उससे मिली आमदनी सही शख़्स को सौंप दी जाये—उस शख़्स को जिसका सम्मान कर हैडलेबर्ग को ख़ुशी होगी—मि. एडवर्ड रिचर्ड्स को।"

इसका ज़ोरदार उत्साह से स्वागत किया गया, जिसमें कुत्ते ने फिर योगदान किया। जीनसाज़ ने एक डॉलर से बोली शुरू की, ब्रिक्सटन के लोगों और बार्नम के प्रतिनिधि के बीच इसके लिए कड़ा मुक़ाबला चला और लोग हर बार बोली चढ़ने पर जमकर उत्साह बढ़ाते रहे। हर पल उत्तेजना बढ़ती जा रही थी, बोली बोलने वाले ज़्यादा से ज़्यादा दिलेर, ज़्यादा से ज़्यादा दृढ़ निश्चयी होते

जा रहे थे। एक–एक डॉलर चढ़ रही बोलियों में पहले पाँच का उछाल आना शुरू हुआ फिर दस, फिर बीस, फिर पचास, फिर सौ और फिर–

नीलामी शुरू होने पर रिचर्ड्स ने दुखी आवाज़ में पत्नी से कहा : "ओह मैरी, क्या ये ठीक है? ये–ये–देखो, ये एक सम्मान है–एक पुरस्कार, चरित्र की शुद्धता का एक प्रमाण; और–और–क्या हम ऐसा होने दे सकते हैं? क्या बेहतर नहीं होगा कि मैं उठकर–ओह, मैरी, हम क्या करें?–तुम क्या सोचती हो–" (*हैलीडे की आवाज़ : "हाँ, तो, पन्द्रह की बोली हुई!–इस बोरी के लिए पन्द्रह!–बीस!–वाह, शुक्रिया!–तीस–वाह, वाह! तीस, तीस, तीस!–क्या कहा, चालीस?–हाँ, तो, चालीस! बढ़ते रहिए, महानुभावो, बढ़ते रहिए!–पचास!– शुक्रिया, दरियादिल रोमन!–पचास पर जा रही है, पचास, पचास, पचास!–सत्तर!–नब्बे!–बहुत ख़ूब!–एक सौ!–और बढ़िए, और बढ़िए!–एक सौ बीस–चालीस!–बहुत सही!–एक सौ पचास!–दो सौ!–क्या बात है! क्या कहा, दो–अरे वाह!–दो सौ पचास!–"*)

"ये एक और लालच है, एडवर्ड–मुझे कँपकँपी हो रही है–लेकिन, ओह, हम एक लालच से तो बच गये, और इससे हमें सबक ले लेना चाहिए कि–(*"क्या कहा छह?–शुक्रिया!–छह सौ पचास, छह स–सात सौ!"*) लेकिन एडवर्ड, ये भी तो सोचो–किसी को शक–(*"आठ सौ डॉलर!–हुर्रा!–अरे, नौ कर दो नौ!–मि. पार्सन्स, क्या आपने कहा–शुक्रिया!–नौ!–बेदाग़ सीसे की ये दिव्य बोरी सिर्फ़ नौ सौ डॉलर में जा रही है, पॉलिश सहित–बोलिए, बोलिए! क्या कह रहे हैं–एक हज़ार!–बहुत ख़ूब!–क्या किसी ने ग्यारह कहा?–ये बोरी जो सारी दुनिया की सबसे मशहूर–"*)

"ओह एडवर्ड," (सिसकने लगती है) "हम इतने ग़रीब हैं! –लेकिन–लेकिन–जैसा तुम ठीक समझो, करो–जैसा तुम ठीक समझो, करो।"

एडवर्ड भहरा गया–यानी, वह चुपचाप बैठा रहा; एक ऐसे ज़मीर के साथ बैठा रहा जो शान्त तो नहीं था, लेकिन हालात उस पर हावी हो गये थे।

इस बीच किसी शौकिया जासूस जैसी वेशभूषा में एक अजनबी सभा की कार्रवाई को बड़ी दिलचस्पी और सन्तुष्ट भाव के साथ देख रहा था, और ख़ुद से बातें कर रहा था। इस वक़्त वह अपने आप से कुछ इस तरह की बात कह रहा था : 'अठारहों में से कोई भी बोली नहीं लगा रहा है; ये ठीक नहीं है; मुझे इसे बदलना होगा–इंसाफ़ का तकाज़ा यही है; जिस बोरी को वे हड़पना चाहते थे, उसका दाम उन्हें ही चुकाना चाहिए, और तगड़ा दाम चुकाना

चाहिए—उनमें से कुछ ख़ासे अमीर हैं। और एक बात है; जब हैडलेबर्ग की फ़ितरत पहचानने में मुझसे एक चूक हुई है तो मुझे इस ग़लती के लिए मज़बूर करने वाला शख़्स एक बड़ी सम्मानराशि का हक़दार है, और ये रक़म किसी को चुकानी ही पड़ेगी। इस बेचारे रिचर्ड्स ने मेरी समझदारी का माख़ौल बना दिया है; वह वाक़ई एक ईमानदार इन्सान है—मैं उसे समझ नहीं पाया, लेकिन मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ। हाँ, वह मेरे पाँसों को पहचान गया—साफ़-साफ़ समझ गया, और वही ईनाम का हक़दार है। और अगर मैं कामयाब रहा, तो उसे भरपूर ईनाम मिलेगा। उसने मुझे निराश किया, लेकिन अब इस बात को भूल जाना चाहिए।"

वह बोलियाँ चढ़ते देख रहा था। एक हज़ार पर पहुँचने के बाद लोगों के हौसले पस्त हो गये; बोलियाँ गिरने लगीं। वह इन्तज़ार करता रहा—देखता रहा। एक व्यक्ति ने मैदान छोड़ा, फिर दूसरे ने, फिर एक और ने। अजनबी ने अब एक-दो बोलियाँ लगायीं। जब बोलियाँ दस-दस डॉलर पर उतर आयीं तो उसने पाँच का भाव चढ़ाया; किसी ने उसे तीन डॉलर ऊपर किया; उसने एक पल इन्तज़ार किया, फिर सीधे पचास डॉलर बढ़ाकर बोली बोली, और बोरी उसकी हो गयी—1282 डॉलर में। हॉल में हर्षध्वनि गूँज उठी—फिर शान्त हो गयी; क्योंकि अजनबी खड़ा हो गया था और हाथ उठाकर चुप होने का इशारा कर रहा था। उसने बोलना शुरू किया :

"मैं दो शब्द कहना चाहता हूँ और आपसे एक मदद चाहता हूँ। मैं दुर्लभ वस्तुओं का कारोबार करता हूँ, और दुर्लभ सिक्कों में दिलचस्पी रखने वाले दुनियाभर के लोगों से मेरा वास्ता पड़ता है। मैं अपनी इस ख़रीद से ऐसे भी मुनाफ़ा पैदा कर सकता हूँ; लेकिन एक तरीक़ा है, अगर आप लोग मुझे इसकी इज़ाज़त दें तो, जिससे मैं सीसे के इन बीस डॉलर के सिक्कों का मोल सोने में इनकी क़ीमत के बराबर, या शायद इससे भी ज़्यादा पहुँचा सकता हूँ। मुझे अपनी इजाज़त दें, और मैं अपने मुनाफ़े का एक हिस्सा आपके मि. रिचर्ड्स को दे दूँगा, जिनकी अभेद्य सत्यनिष्ठा को आज शाम आप सबने इतने लगाव और उत्साह के साथ सम्मान दिया है। उनका हिस्सा होगा दस हज़ार डॉलर, और मैं उन्हें कल ये रक़म पहुँचा दूँगा। (*सदन का ज़ोरदार समर्थन।* लेकिन "अभेद्य सत्यनिष्ठा" पर रिचर्ड्स दम्पति बुरी तरह लजा गये; बहरहाल, इसे संकोच के रूप में लिया गया और इससे कोई नुकसान नहीं हुआ।) अगर आप मेरे प्रस्ताव को अच्छे बहुमत से पास कर दें—मैं दो-तिहाई मत चाहूँगा—तो मैं इसे शहर की मंज़ूरी मानूँगा, और मुझे बस इसी की दरकार है। कोई भी ऐसी

चीज़ जो उत्सुकता बढ़ा दे और लोगों को बात करने पर मज़बूर कर दे, उससे दुर्लभ वस्तुओं की क़ीमत बढ़ती ही है। अब अगर मुझे आपकी इजाज़त हो तो मैं इन तमाम सिक्कों के दोनों पहलुओं पर उन अठारह महानुभावों के नाम खुदवाना चाहता हूँ जिन्होंने–"

पलक झपकते नब्बे फ़ीसदी लोग उछलकर खड़े हो गये–कुत्ता भी इनमें शामिल था–और सहमतिसूचक तालियों और हँसी के तूफ़ान के बीच प्रस्ताव पारित हो गया।

वे बैठ गये, और अब "डॉ." क्ले हार्कनेस को छोड़ बाक़ी सभी "ईमान के पुतले" उठ खड़े हुए और इस अपमानजनक प्रस्ताव का ज़ोर–शोर से विरोध करने लगे। कुछ ने धमकी दी कि–

अजनबी ने शान्त स्वर में कहा, "कृपया मुझे धमकाने की कोशिश न करें। मैं अपने क़ानूनी अधिकार जानता हूँ और बन्दरघुड़कियों से डरने की मुझे आदत नहीं है।" (*तालियाँ*) वह बैठ गया। "डा." हार्कनेस को यहाँ एक मौक़ा दिखायी दिया। वह इस जगह के दो सबसे अमीर लोगों में से एक था, दूसरा पिंकरटन था। हार्कनेस एक टकसाल का मालिक था; कहने का मतलब वह एक प्रचलित पेटेण्ट दवा का मालिक था। वह एक पार्टी के टिकट पर असेम्बली का चुनाव लड़ रहा था, और पिंकरटन दूसरी के टिकट पर। मुक़ाबला काँटे का था और होड़ तीखी थी, जो दिन–ब–दिन और तीखी होती जा रही थी। दोनों पैसे के लालची थे। दोनों ने हाल ही में एक ख़ास मकसद से काफ़ी ज़मीन ख़रीदी थी। एक नयी रेल लाइन बनने वाली थी, और दोनों असेम्बली में पहुँचना चाहते थे ताकि उसे अपनी ज़मीन की ओर मोड़ने में मदद कर सकें। क्या पता एक ही वोट से फ़ैसला हो जाये और क़िस्मत खुल जाये। दाँव बहुत बड़ा था और हार्कनेस एक दुस्साहसी जुआरी था। वह अजनबी के क़रीब ही बैठा था। जिस समय एक–दो ईमान के पुतले अपने विरोध और अपीलों से सदन का मनोरंजन कर रहे थे, हार्कनेस अजनबी की ओर झुका और फुसफुसाया,

"बोरी कितने में बेचोगे तुम?"

"चालीस हज़ार डॉलर।"

"मैं तुम्हें बीस दूँगा।"

"नहीं।"

"चलो, तीस ले लो।"

"इसका दाम है चालीस हज़ार डॉलर; एक पेनी भी कम नहीं।"

"ठीक है, मैं दूँगा। मैं कल सुबह दस बजे होटल में आऊँगा। मैं नहीं चाहता कि लोग इसके बारे में जानें; तुमसे अकेले में मिलूँगा।"

"ठीक है।" फिर अजनबी ने खड़े होकर सदन से कहा :

"मुझे देर हो रही है। ऐसा नहीं कि इन महानुभावों के भाषणों में दम नहीं है, या कोई दिलचस्पी नहीं है, या सलीका नहीं है; फिर भी अगर इजाज़त हो तो मैं चलना चाहूँगा। आपने मेरी बात मानकर जो एहसान किया है, उसके लिए मैं तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। सभापति महोदय से मेरा अनुरोध है कि वह कल तक इस बोरी को मेरे लिए सँभाल कर रखें, और पाँच सौ डॉलर के ये तीन नोट मि. रिचर्ड्स को दे दें।" नोट सभापति तक पहुँचा दिये गये।

"नौ बजे मैं बोरी लेने आऊँगा और ग्यारह बजे दस हज़ार में से बाक़ी रक़म मैं ख़ुद मि. रिचर्ड्स को उनके घर पर पहुँचा दूँगा। गुड नाइट।"

फिर दर्शकों को ज़बर्दस्त गुल-गपाड़ा मचाता छोड़ वह धीरे से बाहर निकल गया। ये शोर हुर्रा! और जयजयकार की तरह-तरह की आवाज़ों, "मिकाडो" गीत, कुत्ते की प्रतिक्रिया और इस लयबद्ध नारे से मिलकर बना था; "तुम बु-रे आदमी नहींऽऽऽ होऽऽऽ-आऽऽमीऽऽऽन!

## चार

घर पर रिचर्ड्स दम्पति को आधी रात तक लोगों की बधाइयाँ और अभिनन्दन सहने पड़े। उसके बाद वे अकेले रह गये। वे थोड़ा उदास दिख रहे थे और सोच में डूबे चुपचाप बैठे थे। आख़िरकार मैरी ने गहरी साँस लेकर कहा :

"क्या तुम्हें लगता है एडवर्ड, कि दोष हमारा है-हम दोषी हैं?" उसकी नज़र आरोपपत्र जैसे लग रहे मेज़ पर पड़े तीन बड़े-बड़े बैंकनोटों की ओर चली गयी। शाम से ही बधाई देने आने वाले लोग इन नोटों को घूर-घूरकर देखते और लगभग श्रद्धापूर्वक हाथों से छूते रहे थे। एडवर्ड ने तुरन्त कोई जवाब नहीं दिया; फिर आह भरी और हिचकिचाते हुए कहा :

"हम-हम इसे रोक नहीं सकते थे, मैरी। ये-ये नियति का खेल है। सब पहले से लिखा होता है।"

मैरी ने नज़र उठाई और उसे एकटक देखती रही, पर वह उससे आँख नहीं मिला सका। फिर मैरी ने कहा :

"मैं सोचती थी कि बधाइयाँ और प्रशंसा हमेशा अच्छी ही लगती हैं। लेकिन-अब मुझे लगता है...एडवर्ड?

"हूँ?"

"क्या तुम बैंक की नौकरी करते रहोगे?"

"न–नहीं।"

"इस्तीफ़ा?"

"सुबह ही–लिखकर भेज दूँगा।"

"यही सबसे ठीक लगता है।"

रिचर्ड्स ने सिर झुकाकर चेहरा हाथों से ढँक लिया और बुदबुदाया :

"इन हाथों से होकर लोगों का अथाह पैसा गुज़रा है, पर मुझे कभी डर नहीं लगा, लेकिन अब–मैरी, मैं बुरी तरह थक गया हूँ, टूट गया हूँ–"

"चलो, सोने चलें।"

सुबह नौ बजे अजनबी बोरी लेने आया और एक बग्घी में इसे होटल ले गया। दस बजे हार्कनेस ने उससे अकेले में मुलाक़ात की। अजनबी ने एक महानगर के बैंक के पाँच 'बेयरर' चेक लिये–चार 1500–1500 डॉलर के, और एक 34,000 डॉलर का। उसने 1500 का एक चेक अपने बटुए में रखा और बाक़ी, कुल 38,500 डॉलर के चेक उसने एक लिफ़ाफ़े में डाले, और हार्कनेस के जाने के बाद एक रुक्का लिखकर साथ रख दिया। ग्यारह बजे वह रिचर्ड्स के घर पहुँचा और दरवाज़े पर दस्तक दी। मिसेज़ रिचर्ड्स ने झिरी से झाँका, फिर जाकर लिफ़ाफ़ा ले आयी। अजनबी बिना कुछ कहे गायब हो गया। मिसेज़ रिचर्ड्स लौटी तो उत्तेजित थी और उसके पाँव हल्के से लड़खड़ा रहे थे। उसने हाँफती आवाज़ में कहा :

"मैंने उसे पहचान लिया; बिल्कुल वही था! कल रात ही मुझे लग रहा था कि मैंने उसे पहले कहीं देखा है।"

"यही आदमी बोरी लेकर यहाँ आया था?"

"मुझे लगभग पक्का यक़ीन है।"

"फिर तो स्टीफ़ेंसन के नाम से ख़त लिखने वाला भी वही था। वही था जिसने अपने फ़र्ज़ी राज़ के सहारे क़स्बे के हर मानिन्द शहरी को बेच डाला। अब अगर उसने पैसे के बजाय चेक भेजे हैं तो समझो हम भी बिक गये; और हम समझ रहे थे कि हम बच निकले हैं। रात भर के आराम के बाद मुझे फिर से सुकून आने लगा था, लेकिन इस लिफ़ाफ़े को देखकर मेरा जी घबरा रहा है। ये इतना पतला क्यों है; बड़े से बड़े बैंक नोटों में भी 8500 डॉलर की गड्डी इससे कहीं ज़्यादा मोटी दिखनी चाहिए।"

"एडवर्ड, तुम्हें चेक से क्या परेशानी है?"

"स्टीफ़ेंसन के दस्तख़त वाले चेक! अगर 8500 डॉलर बैंक नोटों में हों तो लेने के लिए मैं तैयार हूँ—क्योंकि इसे तो नियति का लेखा माना जा सकता है, मैरी—लेकिन मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है कि उस विनाशकारी नाम के दस्तख़त वाले चेक को भुनाने की कोशिश भी करूँ। ये ज़रूर कोई नया फन्दा होगा। उस आदमी ने हमें फँसाने की कोशिश की; हम किसी तरह बच निकले, और अब वह एक नयी चाल चल रहा है। अगर ये चेक हैं—"

"ओह, एडवर्ड, ये तो बहुत बुरा हुआ!" उसने चेक पति की ओर बढ़ाये और रोने लगी।

"उन्हें आग में फेंक दो! जल्दी! हमें लालच का शिकार नहीं बनना है। ये एक चाल है ताकि दुनिया औरों के साथ-साथ हम पर भी हँसे, और—लाओ, तुम नहीं फेंक सकती तो मुझे दो!" उसने चेक झपट लिये और उन्हें ठीक से पकड़ने की कोशिश करते हुए आतिशदान की ओर चला; लेकिन आख़िर वह इन्सान था, और कैशियर था, इसलिए अनजाने ही पल भर ठिठककर उसने दस्तख़त पर नज़र दौड़ाई। फिर वह लगभग ग़श खा गया।

"हवा करो, मैरी, मुझे हवा करो! इनकी क़ीमत सोने से कम नहीं है।"

"ओह, कितनी ख़ुशी की बात है, एडवर्ड! लेकिन कैसे?"

"इस पर हार्कनेस के दस्तख़त हैं। इसमें क्या राज़ हो सकता है, मैरी?"

"एडवर्ड, क्या तुम्हें लगता है—"

"देखो इधर—ये देखो! पन्द्रह-पन्द्रह-पन्द्रह-चौंतीस। अड़तीस हज़ार पाँच सौ! मैरी, बोरी का मोल बारह डॉलर भी नहीं होगा, पर हार्कनेस ने तो इसके बदले सोने की बोरी की क़ीमत चुकाई है।"

"और तुम्हारे ख़्याल से क्या दस हज़ार के बजाय ये सब हमें मिल गया है?"

"क्यों, लगता तो ऐसा ही है। और चेक भी 'बेयरर' हैं।"

"क्या ये अच्छी बात है, एडवर्ड? इससे क्या होगा?"

"मेरे ख़्याल से ये एक संकेत है कि पैसा दूर के किसी बैंक से निकाला जाये। शायद हार्कनेस नहीं चाहता कि इस मामले का औरों को पता चले। ये क्या है—कोई ख़त?"

"हाँ। ये चेकों के साथ ही था।"

ये "स्टीफ़ेंसन" की लिखावट में था, पर नीचे किसी का नाम नहीं था। इसमें लिखा था :

*"मैं एक हारा हुआ इन्सान हूँ। आपकी ईमानदारी लालच से परे है। इसके*

*बारे में मेरा कुछ और ख़्याल था, लेकिन वह ग़लत निकला, और मैं आपसे माफ़ी माँगता हूँ–सच्चे दिल से। मैं आपका सम्मान करता हूँ–सच्चे दिल से। ये शहर इस लायक भी नहीं कि आपकी क़दमबोसी कर सके। प्रिय महोदय, मैंने ख़ुद से शर्त बदी थी कि आपके मग़रूर क़स्बे में उन्नीस ऐसे लोग हैं जिन्हें भ्रष्ट किया जा सकता है। मैं हार गया। सारा माल आपका है, आप इसके हक़दार हैं।"*

रिचर्ड्स ने गहरी साँस भरी, और कहा :

"ये तेज़ाब से लिखा लगता है–इसका एक-एक शब्द जलता है। मैरी–मैं फिर दुखी हो गया हूँ।"

"मैं भी–आह प्रिय, काश–"

"ज़रा सोचो, मैरी–उसे मुझ पर यक़ीन है।"

"ओह, मत कहो, एडवर्ड–मुझसे सहा नहीं जाता।"

"अगर मैं इन सुन्दर शब्दों का हक़दार होता, मैरी–और ईश्वर जानता है कि मैं कभी सोचता था कि मैं इनका हक़दार हूँ–तो मुझे लगता है मैं इनके बदले चालीस हज़ार डॉलर छोड़ देता। और काग़ज़ के इस टुकड़े को मैं सोने और जवाहरात से भी बढ़कर बेशक़ीमती ख़ज़ाने के तौर पर हमेशा अपने पास रखता। लेकिन अब–इसकी मौजूदगी ही जैसे हम पर इल्ज़ाम की तरह है; हम इसके साये में नहीं जी सकते, मैरी।"

उसने काग़ज़ आग में डाल दिया।

कोई सन्देशवाहक आकर एक लिफ़ाफ़ा दे गया। रिचर्ड्स ने उसमें से ख़त निकालकर पढ़ा; ये बर्गेस की ओर से था :

'आपने एक मुश्किल समय में मुझे बचाया था। कल रात मैंने आपको बचा लिया। इसके लिए झूठ का सहारा लेना पड़ा, लेकिन मैंने कृतज्ञ हृदय से, बेहिचक ये त्याग किया। इस क़स्बे में मुझसे बढ़कर और कोई नहीं जानता कि आप कितने निडर, भले और उदार इन्सान हैं। दिल से आप मेरा सम्मान नहीं कर सकते क्योंकि आपको उस मामले का पता है जिसका मुझ पर इल्ज़ाम लगाया गया और मेरी भर्त्सना की गयी; लेकिन मेरी प्रार्थना है कि कम से कम आप मुझे एक कृतज्ञ व्यक्ति मानें; इससे मेरे दिल का बोझ कुछ हल्का होगा।

*(दस्तख़त)* **बर्गेस**'

"बच गये, एक बार फिर। लेकिन किस शर्त पर!" उसने ख़त आग में

डाल दिया। "मैं–मैं, काश मैं मर जाता, मैरी, काश मैं इस सबमें पड़ा ही न होता।"

"ओह, ये दुखदाई दिन हैं, एडवर्ड। इन वारों के घाव बड़े गहरे हैं–इनकी उदारता ने इन्हें और घातक बना दिया है–और कितने ताबड़तोड़ हुए हैं ये!"

चुनाव के तीन दिन पहले क़स्बे के दो हज़ार मतदाताओं में से हरेक को अचानक एक अनमोल स्मृतिचिन्ह मिला–उन प्रसिद्ध जाली सिक्कों में से एक। इसके एक पहलू पर गोल मुहर की शक्ल में ये शब्द अंकित थे : **"मैंने बेचारे अजनबी से कहा था**– " दूसरे पहलू पर ये शब्द थे : **"जाओ, सुधर जाओ। (दस्तख़त) पिंकरटन।"** इस तरह उस कुख्यात प्रहसन का समूचा बचा हुआ कचरा एक शख़्स के सिर पर पटक दिया गया, और इसका ज़बर्दस्त मारक असर हुआ। इसने क़स्बे की खिल्ली उड़ाने वाले उस नाटक की याद ताज़ा कर दी और उसे पिंकरटन पर केन्द्रित कर दिया; और हार्कनेस बड़ी आसानी से चुनाव जीत गया।

रिचर्ड्स दम्पति को चेक मिलने के चौबीस घण्टे के भीतर उनके ज़मीर में मची खलबली निराश होकर ठण्डी पड़ने लगी थी; वृद्ध दम्पति अपने पाप के साथ जीने की आदत डालना सीख रहे थे। लेकिन अब उन्हें ये भी सीखना था कि जब किसी पाप का भेद खुलने की आशंका हो तो वह नये और वास्तविक भय पैदा करने लगता है। ये इसे एक नया, ज़्यादा संजीदा और महत्त्वपूर्ण आयाम दे देता है। चर्च में सुबह का उपदेश हमेशा जैसा ही था; वही पुरानी बातें उसी पुराने तरीक़े से कही गयीं; उन्होंने ये बातें हजारों बार सुनी थीं और उन्हें ये बिल्कुल अहानिकर, लगभग निरर्थक लगी थीं, जो उनकी नींद में ज़रा भी ख़लल नहीं डालती थीं; लेकिन अब सब बदल गया था। पादरी के उपदेश में उन्हें इल्ज़ामों के फनफनाते साँप अपनी ओर लपकते दिखायी दे रहे थे; लगता था सीधे और ख़ास तौर पर उन लोगों की ओर उँगली उठाई जा रही है जिन्होंने अपनी आत्मा में ख़तरनाक पाप छिपा रखे हैं। चर्च से निकलकर उन्होंने बधाई देने वालों की भीड़ से पीछा छुड़ाया और घर की ओर लपके; एक अज्ञात, रहस्यमय, अनिश्चित भय उनकी हड्डियों तक में घुसा जा रहा था। संयोगवश उन्हें एक नुक्कड़ पर मुड़ते हुए बर्गेस की एक झलक मिली। उसने इनके अभिवादन पर ध्यान नहीं दिया! उसने इन्हें देखा ही नहीं था; पर ये इस बात को नहीं जानते थे। उसके बर्ताव का क्या मतलब हो सकता है? इसका मतलब–इसका–मतलब–ओह, इसके कई भयावह अर्थ हो सकते हैं। क्या ये सम्भव था कि वह जानता हो कि बीते समय में रिचर्ड्स उसे इल्ज़ाम

से बरी कर सकता था, और अब वह हिसाब बराबर करने के लिए चुपचाप मौक़े का इन्तज़ार कर रहा है? घर पहुँचने पर, परेशानी के आलम में वे ये कल्पना करने लगे कि जब रिचर्ड्स बर्गेस के निर्दोष होने की बात जानने का राज़ अपनी पत्नी को बता रहा था, उस समय उनकी नौकरानी बगल के कमरे में खड़ी सुन रही थी। फिर रिचर्ड्स को लगने लगा कि उसने उसी समय कमरे के बाहर घाघरे की सरसराहट सुनी थी; कुछ देर बाद उसे यक़ीन हो गया कि उसने वह आवाज़ सुनी थी। वे किसी बहाने से सारा को भीतर बुलाते; ये सोचकर कि अगर वह उनके भेद बर्गेस तक पहुँचाती रही है तो उसके हाव–भाव इसकी गवाही दे देंगे। उन्होंने उससे कुछ सवाल पूछे–ये सवाल इतने बेतरतीब, ऊटपटाँग और बेवजह से थे कि लड़की को यक़ीन हो गया कि अचानक मिले पैसों ने बूढ़े–बुढ़िया का दिमाग़ ख़राब कर दिया है। उसके चेहरे पर टिकी उनकी तीखी और तेज़ नज़रों से उसे डर लगता था, और इसने रही–सही कसर पूरी कर दी। वह झेंप जाती, घबराई और चकराई हुई–सी दिखती, और बूढ़े दम्पति को ये अपराधबोध के स्पष्ट लक्षण जान पड़ते–बिला शक़ वह जासूस और ग़द्दार थी। अकेले होने पर वे तमाम इधर–उधर की बातों के कुलाबे मिलाते रहते थे और अक्सर इस जोड़–गाँठ से डरावने नतीजों पर पहुँच जाते। जब चीज़ें बद से बदतर हो चुकी थीं तभी अचानक रिचर्ड्स के गले से एक घुटी हुई–सी चीख़ निकल पड़ी, और उसकी पत्नी ने पूछा :

"ओह, क्या हुआ?–क्या बात है?"

"वह ख़त–बर्गेस का ख़त! उसकी भाषा में कटाक्ष था, अब मेरी समझ में आया।" उसने ख़त का वह हिस्सा पढ़ा, 'दिल से आप मेरा सम्मान नहीं कर सकते क्योंकि आपको उस मामले का पता है जिसका मुझ पर इल्ज़ाम लगाया गया–' ओह, अब सब बिल्कुल साफ़ हो गया। हे प्रभु, अब तू ही रक्षा कर! वह जानता है कि मैं जानता हूँ! देखो कितनी चतुराई से लिखा है। ये एक फन्दा था–और किसी बेवकूफ़ की तरह मैं आँख मूँदकर उसमें जा फँसा। और मैरी–"

"ओह, ये तो सोचकर ही डर लगता है–मैं जानती हूँ आप क्या कहने जा रहे हैं–उसने झूठे इम्तिहानी जुमले वाला आपका ख़त लौटाया नहीं है।"

"नहीं–उसने हमें बरबाद करने के लिए उसे रख लिया है। मैरी, वह कुछ लोगों के सामने हमारा भाँडा फोड़ भी चुका है। मैं जानता हूँ–मैं अच्छी तरह जानता हूँ। चर्च के बाद कम से कम एक दर्ज़न चेहरों पर मैंने ये बात पढ़ी। और उसने हमारे अभिवादन का भी जवाब नहीं दिया–उसे मालूम है कि वह

क्या करता रहा है!"

रात में डॉक्टर बुलाया गया। सुबह तक ये बात फैल चुकी थी कि बूढ़े दम्पति गम्भीर रूप से बीमार हैं। डॉक्टर ने कहा कि अचानक मिली दौलत की उत्तेजना, बधाइयों और देर रात तक जागने से हुई थकान बीमारी की वजह है। क़स्बे के लोग वाक़ई दुखी और परेशान थे क्योंकि अब ये बूढ़े दम्पति ही तो थे जिन पर वे गर्व कर सकते थे।

दो दिन बाद और बुरी ख़बरें मिलीं। बूढ़े दम्पति सन्निपात में अजीब हरकतें कर रहे थे। नर्सों का कहना था कि रिचर्ड्स ने उन्हें चेक दिखाये थे–8,500 डॉलर के? जी नहीं–38,500 डॉलर की हैरतअंगेज रक़म के! इस ज़बर्दस्त ख़ुशक़िस्मती के पीछे क्या राज़ हो सकता था?

अगले दिन नर्सों के पास नयी ख़बर थी–और काफ़ी सनसनीख़ेज़। उन्होंने चेक छिपा देने का फ़ैसला किया था ताकि उन्हें नुकसान न पहुँचे; लेकिन ढूँढ़ने पर पता चला कि अब वे मरीज़ के तकिये के नीचे नहीं थे–गायब हो चुके थे। मरीज़ ने कहा :

"तकिया छोड़ दो; क्या चाहिए तुम्हें?"

पवित्र उन्नीस का आख़िरी शख़्स

"हमने सोचा कि बेहतर हो चेक–"

"वे तुम्हें कभी नज़र नहीं आयेंगे–उन्हें नष्ट कर दिया गया है। उन्हें शैतान ने भेजा था। मैंने उन पर दोज़ख़ की मुहर देख ली थी, और मैं जान गया था कि वे मुझे पाप में धकेलने के लिए भेजे गये हैं।" फिर वह अजीबोग़रीब और डरावनी बातें करने लगा जो ठीक से समझ में नहीं आती थीं और जिनके बारे में डॉक्टर की हिदायत थी कि किसी को बताया न जाये।

रिचर्ड्स ठीक कह रहा था; चेक दुबारा कभी नहीं दिखायी दिये।

कोई नर्स ज़रूर नींद में बड़बड़ाई होगी, क्योंकि दो ही दिन में निषिद्ध की गयी बकबक के बारे में सारा क़स्बा जान गया; और ये बातें कुछ हैरानी में डालने वाली थीं। इनसे ऐसा लगता था कि रिचर्ड्स ख़ुद भी बोरी के दावेदारों में से एक था, और कि बर्गेस ने ये तथ्य छुपा लिया था और फिर बदनीयती के साथ इसका राज़ फाश कर दिया था।

बर्गेस से ये पूछा गया और उसने पूरी ताक़त से इसका खण्डन किया। और उसने कहा कि दिमाग़ी सन्तुलन खो चुके एक बीमार बूढ़े आदमी की बकबक पर ज़्यादा ध्यान देना ठीक नहीं है। फिर भी, शुबहा तो पैदा हो ही गया और तरह–तरह की बातें चल पड़ीं।

एक–दो दिन बाद ख़बर आयी कि सन्निपात में मिसेज़ रिचर्ड्स की बातें उनके पति की बातों की नक़ल जैसी हैं। अब शुबहा यक़ीन में बदलने लगा और बदनामी से बचे अपने एकमात्र मानिन्द शहरी की पवित्रता पर क़स्बे के गर्व की लौ धीमी पड़ते–पड़ते फड़फड़ाकर बुझने के क़रीब पहुँच गयी।

छह दिन बीते, फिर और ख़बरें मिलीं। बूढ़े पति–पत्नी मर रहे थे। अन्तिम घड़ी में रिचर्ड्स के दिमाग़ के बादल छँट गये और उसने बर्गेस को बुलवाया। बर्गेस ने कहा :

"कमरा ख़ाली कर दीजिए। मेरे ख़्याल से वह अकेले में कुछ कहना चाहते हैं।"

"नहीं!" रिचर्ड्स ने कहा, "मुझे गवाह चाहिए। मैं आप सबके सामने अपना गुनाह कुबूल करना चाहता हूँ, ताकि मैं इन्सान की तरह मरूँ, कुत्ते की तरह नहीं। मैं साफ़–सुथरा था–बाक़ी सबकी तरह–बनावटी तौर पर; और बाक़ी सबकी तरह लालच मिलते ही मैं भी बहक गया। मैंने एक झूठ पर दस्तख़त किये और उस अभागी बोरी को हासिल करने की कोशिश की। मि. बर्गेस को याद था कि मैंने एक बार उनकी मदद की थी, और इस एहसान के चलते (और पूरी बात न जानने के कारण) उन्होंने मेरा दावा छुपा लिया और

मुझे बचा लिया। आप जानते ही हैं कि बर्गेस पर कई साल पहले क्या इल्ज़ाम लगा था। मेरी गवाही, सिर्फ़ मेरी गवाही उन्हें बचा सकती थी, लेकिन मैं बुज़दिल था और उन्हें ज़लालत का सामना करने के लिए छोड़ दिया–"

"नहीं–नहीं–मि. रिचर्ड्स, आप–"

"मेरी नौकरानी ने ये राज़ उन्हें बता दिया–"

"मुझे किसी ने कोई राज़ नहीं बताया है–"

"और फिर उन्होंने बिल्कुल स्वाभाविक और उचित काम किया; उन्हें मुझे बचाने पर पछतावा हुआ, और उन्होंने मेरा भाँडा फोड़ दिया–जिसका मैं पूरी तरह हक़दार था–"

"नहीं, बिल्कुल नहीं!– मैं क़सम खाता हूँ–"

"मैं अपने दिल की गहराइयों से उन्हें इसके लिए माफ़ करता हूँ।"

बर्गेस बड़ी शिद्दत से इसका विरोध करता रहा, लेकिन उसकी बात सुनी नहीं गयी; मरता हुआ आदमी बिना ये जाने गुज़र गया कि वह एक बार फिर बर्गेस के साथ अन्याय कर गया है। उसकी बीवी उसी रात मर गयी।

पवित्र उन्नीस का आख़िरी शख़्स भी शैतानी बोरी का शिकार हो गया था। क़स्बे की प्राचीन प्रतिष्ठा का आख़िरी चिथड़ा भी छिन गया था। इसका शोक प्रकट नहीं था, लेकिन बड़ा गहरा था।

अनुरोधों और लिखित आवेदन के आधार पर असेम्बली ने क़ानून बनाकर हैडलेबर्ग को अपना नाम बदलने की इजाज़त दे दी (ये मत पूछिए कि क्या नाम रखा–मैं बताउँगा नहीं), और उस आदर्श वाक्य से एक शब्द हटा दिया गया जो कई पीढ़ियों से शहर की सरकारी मुहर पर अंकित था।

अब ये एक बार फिर एक ईमानदार शहर है और अगर कोई दुबारा इसे नींद में पकड़ना चाहे तो उसे ज़रा जल्दी जागना होगा।

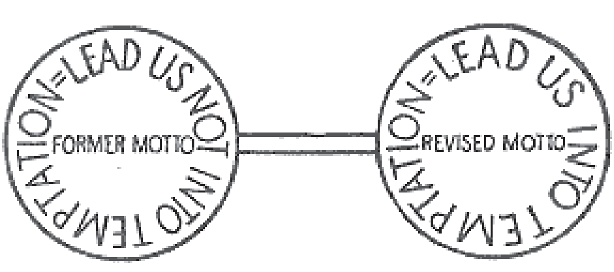

# 30,000 डॉलर की वसीयत

## अध्याय एक

लेकसाइड पाँच या छह हज़ार की आबादी का एक ख़ुशनुमा छोटा-सा क़स्बा था, और ख़ासा सुन्दर भी था जैसे सुदूर पश्चिम के क़स्बे होते हैं। वहाँ के गिरजाघरों में पैंतीस हज़ार लोगों की व्यवस्था थी, जैसा कि सुदूर पश्चिम और दक्षिण में होता है, जहाँ हर कोई धार्मिक होता है, और जहाँ हर प्रोटेस्टेण्ट पंथ का कम से कम एक प्रतिनिधि और एक शाखा मौजूद है। लेकसाइड में दर्जे और हैसियतें नहीं थीं – कम से कम कोई इन्हें स्वीकारता नहीं था। हर कोई हर किसी को और उसके कुत्ते को जानता था, और सामाजिकता और दोस्ताने का माहौल व्याप्त रहता था।

सैलाडिन फ़ॉस्टर मुख्य स्टोर में खज़ांची था और लेकसाइड में अपने पेशे में अकेला ऊँची तनख़्वाह वाला शख़्स था। इस समय उसकी उम्र पैंतीस साल थी, वह चौदह साल से स्टोर में काम कर रहा था। उसने अपनी शादी वाले सप्ताह में चार सौ डॉलर सालाना पर काम शुरू किया था और चार साल तक हर साल सौ डॉलर के हिसाब से लगातार तरक़्क़ी करता रहा था। उस समय से उसकी तनख़्वाह आठ सौ पर टिकी हुई थी – लेकिन यह रक़म भी अच्छी-ख़ासी थी, और हर कोई मानता था कि वह इसके लायक़ था।

उसकी पत्नी, इलेक्ट्रा एक योग्य संगिनी थी, हालाँकि – उसी की तरह – वह भी सपने देखती थी और निजी तौर पर रोमांस का खेल भी खेलती थी। शादी के बाद उसने पहला काम यह किया कि शहर के किनारे पर एक एकड़ ज़मीन ख़रीदी और अपनी सारी जमा-पूँजी, पच्चीस डॉलर, से उसका नक़द भुगतान कर दिया। हालाँकि उस समय वह बच्ची ही थी, उसकी उम्र सिर्फ़ उन्नीस साल थी। सैलाडिन की पूँजी तो उससे भी पन्द्रह डॉलर कम थी। उसने

वहाँ एक सब्ज़ी का बग़ीचा लगवाया, उस पर पड़ोसी से बँटाई पर ख़ेती शुरू करा दी और शत प्रतिशत मुनाफ़ा कमाने लगी। सैलाडिन की पहले साल की तनख़्वाह में से उसने तीस डॉलर बचत बैंक में जमा किये, दूसरे साल साठ डॉलर, तीसरे साल सौ डॉलर और चौथे साल डेढ़ सौ डॉलर। उसकी तनख़्वाह आठ सौ सालाना हो गयी, मगर इस बीच दो बच्चों ने आकर ख़र्चे बढ़ा दिये थे, फिर भी वह हर साल तनख़्वाह में से दो सौ डॉलर निकालती रहती थी। शादी के सात साल बाद उसने अपने बग़ीचे के बीच में दो हज़ार डॉलर ख़र्च करके एक सुन्दर और आरामदेह मकान बना लिया, आधा पैसा नक़द चुकाया और परिवार सहित उसमें रहने लगी। सात साल बाद उसका कर्ज़ उतर चुका था और कई सौ डॉलर की बचत उसके लिए ब्याज कमा रही थी।

वह भू-सम्पत्ति के दामों में बढ़त से भी कमाई कर रही थी, क्योंकि काफ़ी पहले उसने एक-दो एकड़ ज़मीन ख़रीदी थी और उसका ज़्यादा हिस्सा अच्छे मुनाफ़े पर ऐसे भले लोगों को बेच दिया था जो मकान बनाना चाहते थे और उसके बढ़ते परिवार के लिए अच्छे पड़ोसी होते। उसे क़रीब सौ डॉलर सालाना के सुरक्षित निवेश से अतिरिक्त आमदनी भी होती थी, उसके बच्चे शरीफ़ बच्चों की तरह बढ़ रहे थे, और वह एक सुखी व सन्तुष्ट महिला थी। वह अपने पति से ख़ुश थी, अपने बच्चों से ख़ुश थी, और पति व बच्चे उससे ख़ुश थे। इसी बिन्दु से इस इतिहास की शुरुआत होती है।

सबसे छोटी लड़की, क्लाइटेमनेस्ट्रा – जिसे क्लाइटी पुकारा जाता था – ग्यारह साल की थी। उसकी बहन ग्वेंडोलेन – जिसे ग्वेन कहते थे – तेरह की थी। दोनों सुन्दर और भली लड़कियाँ थीं। नामों से माँ-बाप के ख़ून में छिपे रोमांस का पुट मिलता था, और माँ-बाप के नामों से पता चलता था कि यह पुट उन्हें विरासत में मिला था। यह बड़ा स्नेहिल परिवार था, इसलिए उसके चारों सदस्यों के पुकार के नाम थे। सैलाडिन का नाम था सैली, और इलेक्ट्रा का अलेक। सारा दिन सैली एक भला और मेहनती खज़ांची और सेल्समैन बना रहता था, और सारा दिन अलेक एक भली और निष्ठावान माँ और गृहिणी, तथा समझदार व हिसाबी-किताबी व्यवसायी रहती थी, लेकिन रात को अपने सुखद लिविंग रूम में वे दुनिया के पचड़े किनारे कर देते थे और एक अलग ही दुनिया में जीते थे। एक-दूसरे को रूमानी कथाएँ पढ़कर सुनाते थे, सपने देखते थे और भव्य महलों तथा पुराने किलों की चमक-दमक और शानो-शौकत के बीच राजाओं, राजकुमारों और ठाठदार सामन्तों व सुन्दरियों के बीच विचरण करते थे।

# अध्याय दो

तभी उन्हें शानदार ख़बर मिली! अद्भुत ख़बर – बल्कि, ख़ुशी से भर देने वाली ख़बर। वह पड़ोसी राज्य से आयी थी जहाँ परिवार का एकमात्र जीवित रिश्तेदार रहता था। वह सैली का रिश्तेदार था – कुछ दूरदराज़ अनिश्चित-सा चाचा या चचेरा-ममेरा भाई जिसका नाम टिल्बरी फ़ॉस्टर था। उसकी उम्र सत्तर वर्ष थी, वह अविवाहित था, सुना जाता था कि उसकी माली हालत अच्छी थी और उसी के मुताबिक़ वह चिड़चिड़ा और बदमिज़ाज था। सैली ने एक बार, बहुत समय पहले उससे क़रीबी बनाने की कोशिश की थी और दुबारा फिर वह ग़लती नहीं की। अब टिल्बरी ने सैली को ख़त लिखा था कि वह जल्दी ही मर जायेगा और उसके नाम तीस हज़ार डॉलर नक़द छोड़ जायेगा। इसलिए नहीं कि वह उसे प्यार करता है, बल्कि इसलिए क्योंकि पैसा ही उसकी तमाम मुसीबतों और झंझटों की वजह रहा था, और वह उसे ऐसी जगह रखना चाहता था जहाँ इस बात की पूरी उम्मीद थी कि वह अपना घातक काम जारी रखेगा। यह बात उसकी वसीयत में लिखी होगी, और उसे भुगतान कर दिया जायेगा। **बशर्ते**, कि सैली वसीयत के निष्पादकों के सामने यह साबित कर सके कि उसने **बोलकर या लिखकर इस उपहार पर कोई ध्यान नहीं दिया, मरणासन्न व्यक्ति की अपनी आख़िरी मंज़िल की दिशा में प्रगति के बारे में कोई पूछताछ नहीं की, और उसकी अन्त्येष्टि में शामिल नहीं हुआ था।**

जैसे ही अलेक इस ख़त से पैदा हुई ज़बर्दस्त भावनाओं से एक हद तक उबरी, उसने सैली को रिश्तेदार के शहर भेजकर स्थानीय अख़बार की सदस्यता ले ली।

अब पति-पत्नी के बीच एक अलिखित समझौता हो गया, कि उस रिश्तेदार के ज़िन्दा रहते किसी के भी सामने इस शानदार ख़बर का ज़िक्र भी नहीं करेंगे, क्योंकि कौन जाने कोई अहमक़ मृत्यु शैया पर पड़े व्यक्ति तक यह ख़बर पहुँचा दे और उसे इस ढंग से पेश करे कि उन दोनों ने मनाही के बावजूद अपनी कृतज्ञता में वसीयत का उल्लंघन कर डाला है।

दिन भर सैली अपने हिसाब के बहीखातों में गड़बड़ करता रहा, और अलेक का किसी भी काम में मन लगाना मुश्किल हो गया, यहाँ तक कि कोई गमला या किताब या लकड़ी का टुकड़ा उठाते हुए भी वह यह भूल जाती थी कि वह इससे क्या करने वाली थी। वजह यह थी कि दोनों सपनों में खोये थे।

"ती-स हज़ार डॉलर!"

सारा दिन इन प्रेरणादायी शब्दों का संगीत उनके दिलो-दिमाग़ में गूँजता रहा।

शादी के दिन से ही, सारी कमाई अलेक की मुट्ठी में रहती थी, और सैली ने शायद ही कभी यह जाना था कि बिना ज़रूरत की चीज़ों पर भी कुछ पैसे ख़र्च कर देने का क्या सुख होता है।

"ती-स हज़ार डॉलर!" गीत लगातार चलता रहा। यह एक भारी रक़म थी, इतनी रक़म के बारे में उन्होंने कभी सोचा तक न था!

सारा दिन अलेक ऐसी योजनाएँ बनाने में डूबी रही कि इस पैसे को निवेश कैसे करेगी, और सैली यह योजनाएँ बनाने में कि उसे ख़र्च कैसे करेगा।

उस रात कोई रोमांस की किताब नहीं पढ़ी गयी। बच्चे खुद ही जल्दी सोने चले गये, क्योंकि उनके माँ-बाप ख़ामोश, परेशानहाल, और अजीब-से मनहूस लग रहे थे। बच्चों ने गुडनाइट कहकर जो पप्पी ली उस पर भी माँ-बाप का ध्यान नहीं गया, और बच्चों के चले जाने के घण्टा भर बाद कहीं उन्हें पता चला कि बच्चे अब वहाँ नहीं हैं। उस घण्टे के दौरान दो पेन्सिलें लगातार चल रही थीं – योजनाओं के नोट बनाये जा रहे थे। आखिरकार सैली ने सन्नाटा तोड़ा। खुशी से भरकर वह बोल पड़ा :

"वाह, मज़ा आ जायेगा, अलेक! पहले एक हज़ार से हम गर्मियों के लिए एक घोड़ा और बग्घी खरीदेंगे, और सर्दियों के लिए एक कटर और चमड़े का लबादा।"

अलेक ने शान्त स्वर में निर्णायात्मक ढंग से उत्तर दिया –

"पूँजी से निकालकर? कत्तई नहीं। अगर दस लाख होते तब भी नहीं!"

सैली बिल्कुल हताश हो गया; उसके चेहरे की रौनक गुम हो गयी।

"ओह अलेक!" उसने दुखी होकर कहा। "हमने हमेशा ही इतनी कड़ी मेहनत की है फिर भी हमारा हाथ हरदम तंग रहा है। और अब जबकि हम अमीर हो गये हैं, तो ऐसा लगता है –"

उसने बात पूरी नहीं की, क्योंकि उसने अलेक की आँखों में मुलायमियत देख ली थी; उसकी बातों ने अलेक का दिल छू लिया था। वह नर्मी से समझाते हुए बोली :

"प्यारे, हमें पूँजी को ख़र्च नहीं करना चाहिए, ये समझदारी नहीं होगी। इससे होने वाली आमदनी से –"

"मैं समझ गया, मैं समझ गया, अलेक! तुम कितनी प्यारी और अच्छी हो! इससे अच्छी-ख़ासी आमदनी होगी और अगर हम उसे ख़र्च करें –"

"**सब** नहीं मेरे प्यारे, सारा का सारा नहीं, लेकिन तुम इसका एक हिस्सा ख़र्च कर सकते हो। यानी एक तर्कसंगत हिस्सा। लेकिन पूरी की पूरी पूँजी – एक-एक पैसा – सीधे काम में लगनी चाहिए, और उसमें लगी रहनी चाहिए।

तुम समझ रहे हो न कि यह बात कितनी जायज़ है, है न?"

"क्यों, अ–हाँ। हाँ, बिल्कुल। लेकिन हमें इतना इन्तज़ार नहीं करना पड़ेगा। बस छह महीने में ब्याज की पहली किस्त मिलने लगेगी।"

"हाँ – शायद ज़्यादा भी।"

"ज़्यादा, अलेक? भला क्यों? क्या वे छमाही भुगतान नहीं करते?"

"उस्स... तरह का ब्याज – हाँ; लेकिन मैं उस ढंग से निवेश नहीं करूँगी।"

"फिर किस तरह से?"

"बड़े फ़ायदे वाला।"

"बड़ा। ये तो अच्छा है। बोलती जाओ, अलेक। क्या होगा ये?"

"कोयला। नयी खदानें। कैनल। मेरा मतलब है हम दस हज़ार लगा सकते हैं। ग्राउण्ड फ़्लोर। जब हम सब व्यवस्थित करेंगे, तो हमें एक के बदले तीन शेयर मिलेंगे।"

"क़सम से, सुनकर अच्छा लगता है, अलेक! और फिर शेयरों की क़ीमत हो जायेगी – कितनी? और कब?"

"लगभग एक साल। वे दस प्रतिशत छमाही भुगतान करेंगे, और क़ीमत होगी तीस हज़ार। मैं इसके बारे में सब जानती हूँ, यहाँ सिनसिनैटी के अख़बार में विज्ञापन छपा है।"

"वाह, दस के बदले तीस हज़ार – एक साल में! पूरी पूँजी इसी में लगा देते हैं और सीधे नब्बे बना लेते हैं! मैं अभी उन्हें ख़रीदने के लिए लिख देता हूँ – कल तक शायद देर हो जाये।"

वह लिखने की मेज़ की ओर लपका, लेकिन अलेक ने उसे रोककर वापस कुर्सी में बैठा दिया। उसने कहा :

"इस तरह बदहवास मत हो जाओ। हमें तब तक ख़रीदना नहीं चाहिए जब तक हमें पैसा मिल न जाये, तुम इतना भी नहीं समझते?"

सैली का उत्साह एकाध डिग्री ठण्डा हो गया, लेकिन वह पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं था।

"क्यों, अलेक, हमें वह मिलना ही है, तुम जानती हो – और वह भी बहुत जल्दी। वह शायद इससे पहले ही सारी चिन्ताओं से मुक्त हो चुके हों; मैं सौ की बाज़ी लगा सकता हूँ कि वह इसी समय नर्क में अपनी जगह चुन रहे होंगे। अब, मेरे ख़्याल से – "

अलेक सिहर उठी, और बोली :

"ऐसा कैसे कह सकते हो, सैली! इस तरह मत बोलो, यह तो एकदम भयंकर बात है।"

"ओह, ठीक, चाहो तो इसे पवित्र बना लो, मुझे इससे मतलब नहीं कि उनका हाल क्या है, मैं तो बस बात कर रहा था। तुम किसी को बात भी नहीं करने दोगी?"

"मगर तुम ऐसे भयानक ढंग से बात करना चाहते ही क्यों हो? तुम्हें कैसा लगेगा अगर लोग तुम्हारे ऊपर जाने से पहले ही तुम्हारे बारे में इस तरह बात करें?"

"मेरे ख़्याल से, अव्वलन तो ऐसा शायद होगा नहीं, अगर मेरा आख़िरी काम किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए पैसे देना हो। मगर टिल्बरी की बात छोड़ो, अलेक, हम कुछ सांसारिक चीज़ों की बात करते हैं। मुझे लगता है कि पूरे तीस खदान में लगा देना ठीक होगा। तुम्हारी आपत्ति क्या है?"

"सारे दाँव एक ही खिलाड़ी पर – यही आपत्ति है।"

"अगर तुम कहती हो तो ठीक है। बाक़ी बीस का क्या? उससे तुम क्या करने वाली हो?"

"कोई जल्दी नहीं है; उससे कुछ भी करने से पहले मैं जाँच-पड़ताल करूँगी।"

"ठीक है, अगर तुमने मन बना ही लिया है," सैली ने आह भरकर कहा। कुछ देर गहरे सोच में डूबा रहा, फिर वह बोला :

"अब से एक साल बाद उस दस से बीस हज़ार का मुनाफ़ा आने लगेगा। हम उसे तो ख़र्च कर सकते हैं, है न अलेक?"

अलेक ने सिर हिलाया।

"नहीं प्यारे, " उसने कहा, "जब तक हमें छमाही लाभांश नहीं मिल जाता तब तक उसकी क़ीमत नहीं बढ़ेगी। तुम उसका एक हिस्सा खर्च कर सकते हो।"

"हुँह, बस उतना – और पूरा एक साल इन्तज़ार! भाड़ में जाये, मैं -!"

"ओह, धीरज रखो! यह तीन महीने में भी घोषित हो सकता है – इसकी पूरी सम्भावना है।"

"अरे वाह! ओह, शुक्रिया!" और सैली ने उछलकर उपकृत भाव से अपनी पत्नी को चूम लिया। "ये तीन हज़ार होंगे – पूरे तीन हज़ार! और इसमें से कितना हम ख़र्च कर सकते हैं, अलेक? जरा उदार होकर बताना – ज़रूर मेरी प्यारी, यह हुई न बात।"

अलेक खुश हो गयी, इतनी खुश कि वह दबाव में आ गयी और एक ऐसी राशि की हामी भर दी जो उसके हिसाब से बेवक़ूफ़ी भरी फिज़ूलखर्ची थी – एक हज़ार डॉलर। सैली ने उसे आधा दर्जन बार चूमा और तब भी वह अपनी

सारी खुशी और कृतज्ञता जाहिर नहीं कर पाया। कृतज्ञता और स्नेह के इस नये प्रदर्शन से अलेक दूरदर्शिता की सीमाओं से पार निकल गयी, और इससे पहले कि वह अपने को रोक पाती उसने अपने प्यारे पति को एक और अनुदान दे दिया – वसीयत के बचे हुए बाक़ी बीस से वह साल भर में जो पचास या साठ हज़ार बनाने वाली थी उसमें से दो हज़ार! सैली की आँखों में खुशी के आँसू भर गये, और वह बोल उठा :

"ओह, मैं तुम्हें गले लगाना चाहता हूँ!" और उसने ऐसा ही किया। फिर वह अपने नोट्स लेकर बैठ गया और पहली ख़रीदारी के लिए फेहरिस्तें बनाने लगा, कौन-कौन सी विलासिता की चीज़ें उसे सबसे पहले जुटा लेनी चाहिए। "घोड़ा–बग्घी–कटर–महँगा गाउन–पेटेण्ट लेदर–कुत्ता–प्लग-हैट–चर्च में बेंच–स्टेम-वाइंडर–नये दाँत – क्या कहती हो, अलेक! "

"हूँ?"

"जोड़ लगा रही हो, है न? यह भी ठीक है। क्या तुमने वे बीस हज़ार निवेश कर दिये हैं?"

"नहीं, उसकी कोई जल्दी नहीं है; मुझे पहले जाँच-पड़ताल करने और सोच लेने दो।"

"मगर तुम हिसाब लगा रही हो; किस चीज़ के बारे में?"

"क्यों, मुझे कोयले से मिलने वाले तीस हज़ार को भी तो कहीं लगाना है, है कि नहीं?"

"कमाल है, क्या दिमाग़ पाया है! मैंने तो उसके बारे में सोचा ही नहीं। कैसा चल रहा है? कहाँ पहुँची?"

"ज़्यादा दूर नहीं – दो-या तीन साल। मैं इसे दो बार पूरा लगा चुकी हूँ; एक बार तेल में और एक बार गेहूँ में।"

"अरे अलेक, ये तो शानदार है! कुल कितना हुआ?"

"मेरे ख़्याल से – वैसे, कम से कम एक लाख अस्सी हज़ार तो पक्का है, हालाँकि यह शायद ज़्यादा ही होगा।"

"बाप रे! है न जबर्दस्त? क़सम से! इतनी मेहनत के बाद आख़िरकार क़िस्मत हमारा साथ दे रही है, अलेक! "

"हुम्म?"

"मैं तो पूरे तीन सौ मिशनरियों को नक़द देने वाला हूँ – वरना हमें ख़र्च करने का क्या अधिकार होगा?"

"तुम इससे ज़्यादा भलाई का काम नहीं कर सकते, प्यारे; उदारता तो तुम्हारे स्वभाव में ही है, स्वार्थ तो तुममे है ही नहीं।"

तारीफ़ से सैली एकदम खुश हो गया, लेकिन उसने ईमानदारी दिखाते हुए कहा कि इसका श्रेय उसे नहीं बल्कि अलेक को है, क्योंकि वह न होती तो उसे पैसे मिलते ही नहीं।

फिर वे बिस्तर पर चले गये और परम सुख के सरसाम जैसी हालत में वे भूल ही गये और बैठकखाने में मोमबत्ती जलती छोड़ दी। उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि उन्होंने कपड़े भी नहीं उतारे थे। फिर सैली ने कहा कि उसे जलने दिया जाये; उसने कहा कि अगर वह हज़ार की भी हो तो भी वे उसका ख़र्च उठा लेंगे। मगर अलेक ने जाकर उसे बुझा दिया।

यह अच्छा ही रहा, क्योंकि वापस आते हुए उसे एक ऐसी योजना सूझी जो बाज़ार मन्दा पड़ने से पहले ही एक लाख अस्सी हज़ार को पाँच लाख में तब्दील कर देगी।

## अध्याय तीन

अलेक ने जो अख़बार मँगाना शुरू किया था वह गुरुवार को छपता था। टिल्बरी के गाँव से पाँच सौ मील का सफ़र तय करके शनिवार को वहाँ पहुँचता था। टिल्बरी का पत्र शुक्रवार को चला था। उनके उद्धारकर्ता के मरकर उस हफ़्ते के अख़बार में जगह पाने के लिहाज़ से तो एक दिन से ज़्यादा की देर हो चुकी थी, लेकिन अगले अंक के लिए पर्याप्त समय था। इसलिए फ़ॉस्टर दम्पति को यह जानने के लिए लगभग एक सप्ताह इन्तज़ार करना पड़ा कि उसके साथ कुछ सन्तोषजनक हुआ है या नहीं। यह ख़ासा लम्बा सप्ताह था और इसका बोझ बड़ा भारी था। दम्पति के लिए इसे उठा पाना बहुत मुश्किल रहा होता अगर उनके दिमाग़ को आनन्ददायी भटकनों से राहत न मिलती। हम देख चुके हैं कि उन्हें ऐसी राहत मिल रही थी। पत्नी लगातार दौलत बटोरे जा रही थी, और पतिदेव उसे ख़र्च कर रहे थे – यानी, पत्नी उन्हें जो भी देने को राज़ी थी उसे ख़र्च कर रहे थे।

आखिरकार शनिवार आ गया और 'वीकली सागामोर' पहुँच गया। उस समय श्रीमती एवर्सली बेनेट मौजूद थीं। वह प्रेस्बिटेरियन पादरी की पत्नी थीं, और फ़ॉस्टर दम्पति को दान के लिए राज़ी करने में जुटी थीं। अचानक बातचीत की अकालमृत्यु हो गयी – फ़ॉस्टर दम्पति की ओर से। श्रीमती बेनेट को एकदम से पता चला कि उनके मेज़बान उनकी कही कोई बात सुन नहीं रहे; तो वह उठीं और हैरान-परेशान चली गयीं। जैसे ही वह घर से निकलीं, अलेक ने झपटकर अख़बार पर लिपटा काग़ज़ फाड़ डाला और उसकी तथा सैली की आँखें मृत्यु-सूचना वाले कॉलमों पर दौड़ गयीं। अफ़सोस! टिल्बरी का कहीं नाम

भी न था। अलेक जन्मजात ईसाई थी, और कर्तव्य तथा आदतवश उसे नियतक्रियाएँ करनी ही थीं। उसने ख़ुद को सँभाला, और टुँटपूँजिया व्यापारी के सात्विक ख़ुशी भरे लहजे में बोली :

"हमें शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि वे अब भी जीवित हैं, और –"

"भाड़ में जाये चीमड़ कहीं कहा, मैं तो मनाता हूँ –"

"सैली! शर्म करो!"

"मुझे परवाह नहीं!" क्रुद्ध पति ने पलटकर जवाब दिया। "यह तो अपनी-अपनी भावना है, और अगर तुम इस क़दर अनैतिक रूप से सात्विक न होती तो तुम भी ईमानदारी से यही कहती।"

अलेक ने चोटिल गरिमा के साथ कहा :

"मैं समझ नहीं पाती कि तुम ऐसी बुरी और अन्यायपूर्ण बातें कैसे कह सकते हो। अनैतिक सात्विकता जैसी कोई चीज़ नहीं होती।"

सैली को थोड़ी कचोट लगी, लेकिन उसने अपनी बात का रूप बदलकर उसे सही ठहराने की हिचकिचाहट भरी कोशिश में उसे छिपाने का प्रयास किया – मानो अन्तरवस्तु वही रखकर रूप बदल देने से वह उस विशेषज्ञ को चकमा दे सकता था जिसे वह मनाने की कोशिश कर रहा था। उसने कहा :

"अलेक, मेरा मतलब ऐसी बुरी बात कहना नहीं था; वाक़ई मेरा मतलब अनैतिक सात्विकता नहीं था, मेरा बस मतलब था – मतलब – पारम्परिक सात्विकता था, यानी; अ-अ–कामकाजी सात्विकता; वो–वो, तुम जानती ही हो मेरा क्या मतलब था। अलेक – वो–अरे, जब आप उस चीज़ को लेते हैं और उसके हिसाब से सोचने लगते हैं, तुम जानती ही हो, कुछ ग़लत इरादा किये बिना, बस आदतवश, पुरानी नीति, जड़ रीति-रिवाज, वफ़ादारी – छोड़ो, मुझे सही शब्द नहीं मिल रहे, मगर तुम जानती हो मेरा मतलब क्या है, अलेक, और यह भी कि इसमें कुछ हर्ज नहीं है। मैं फिर कोशिश करता हूँ। देखो, बात यह है। अगर कोई इन्सान –"

"तुम काफ़ी कह चुके," अलेक ठण्डे स्वर में बोली; "अब यह बात बन्द करो।"

"मैं तैयार हूँ," सैली ने तुरन्त जवाब दिया, उसने माथे से पसीना पोछा और उसकी कृतज्ञता बिना शब्दों के ही चेहरे से झलक रही थी। हार मानकर अब वह पूरी तरह हथियार डाल चुका था। अलेक ने उसे आँखों से क्षमादान दे दिया।

महान हित, सर्वोच्च हित, तत्काल एक बार फिर उभरकर सामने आ गया; कोई भी चीज़ उसे लगातार कई मिनटों तक पृष्ठभूमि में नहीं रख सकती थी। दम्पति टिल्बरी की मृत्यु सूचना की अनुपस्थिति की पहेली सुलझाने में लग गये।

उन्होंने कमोबेश आशावादी ढंग से हर प्रकार से चर्चा कर ली, मगर वे फिर-फिर वहीं पहुँच जाते जहाँ से शुरू किया था, और उन्हें मानना पड़ता कि नोटिस न छपने की एकमात्र तर्कसंगत वजह यही होनी चाहिए – और निस्सन्देह यही थी – कि टिल्बरी मरा नहीं था। यह कुछ उदासी भरा था, यहाँ तक कि शायद कुछ अन्यायपूर्ण भी, मगर जो था वह था, और इसके साथ ही गुज़ारा करना था। वे इस पर सहमत हो गये। सैली के लिए यह कुछ विचित्र अबूझ-सी बात थी; उसने सोचा, यह सामान्य से ज़्यादा अबूझ थी; बल्कि उसकी याददाश्त में सबसे ग़ैरज़रूरी अबूझ बातों में से एक थी – और उसने थोड़ा भावुक होकर ऐसा कहा भी; लेकिन अलेक को भी इसमें खींचने की कोशिश में वह नाकाम रहा; उसने अपनी राय जाहिर नहीं की, अगर उसकी कोई राय थी भी। उसे किसी भी बाज़ार में, सांसारिक या इससे इतर, नासमझी भरे जोखिम लेने की आदत नहीं थी।

दम्पति को अगले सप्ताह के अख़बार का इन्तज़ार करना पड़ेगा – लगता था कि टिल्बरी ने अपना जाना टाल दिया है। उनकी यही सोच और यही फ़ैसला था। सो उन्होंने इस विषय को छोड़ दिया और यथासम्भव ख़ुशमिज़ाजी के साथ अपने काम में लग गये।

मगर, काश उन्हें पता होता, वे लगातार टिल्बरी के साथ अन्याय कर रहे थे। टिल्बरी ने वचन निभाया था, पूरी तरह निभाया था, वह मर चुका था, वह तय कार्यक्रम के अनुसार मर चुका था। उसे मरे हुए चार दिन बीत चुके थे और वह बिल्कुल मृत था, शत-प्रतिशत मृत, इतना मृत जितना कब्रिस्तान में आया कोई भी नया मुर्दा था; उसे मरे हुए इतना पर्याप्त समय था कि उस सप्ताह के सागामोर में भी आ सकता था, मगर सिर्फ़ एक दुर्घटना ने इसे रोक दिया। एक ऐसी दुर्घटना जो किसी महानगर के अख़बार के साथ नहीं हो सकती थी मगर जो 'सागामोर' जैसे गाँव के मामूली अख़बार में आसानी से हो जाती है। इस मौक़े पर, जैसे ही सम्पादकीय पृष्ठ को अन्तिम रूप दिया जा रहा था उसी समय होस्टेटर्स लेडीज़ एंड जेंट्स आइसक्रीम पार्लर से स्ट्राबेरी आइसवाटर का गैलन आ पहुँचा और सम्पादक की कृतज्ञता ज्ञापन के लिए टिल्बरी की ख़बर को हटना पड़ा।

कम्पोज़ीटर के पास पहुँचने के पहले ही टिल्बरी की नोटिस दब गयी। वरना वह भविष्य के किसी संस्करण में जा सकती थी, क्योंकि 'वीकली सागामोर' जैसे अख़बार "ज़िन्दा" सामग्री को बर्बाद नहीं करते, और उनकी गैलियों में "ज़िन्दा" सामग्री अमर होती है जब तक कि ऐसी कोई दुर्घटना न हो जाये। और इस तरह, टिल्बरी चाहे या न चाहे, वह अपनी क़ब्र में चाहे जितनी करवट बदले – उसकी मृत्यु का उल्लेख कभी भी 'वीकली सागामोर' में नहीं होगा।

# अध्याय चार

पाँच उकताहट भरे सप्ताह बीत गये। 'सागामोर' हर शनिवार नियमित रूप से आता रहा, मगर कभी एक बार भी उसमें टिल्बरी फ़ॉस्टर का उल्लेख नहीं था। इस बिन्दु पर सैली का धैर्य जवाब दे गया, और उसने चिढ़कर कहा :

"न जाने क्या खाता है, वह तो अमर है!"

अलेक ने उसे बहुत तीखी झिड़की दी, और सर्द गम्भीरता से कहा :

"तुम्हें कैसा लगता अगर ऐसी घटिया बात तुम्हारे मुँह से निकलते ही तुम अचानक टें बोल जाते?"

पर्याप्त सोच-विचार के बिना ही सैली ने जवाब दिया :

"मुझे लगता कि मैं ख़ुशक़िस्मत हूँ कि मैं इसे अन्दर रखे हुए नहीं चला गया।"

छह महीने और बीत गये। 'सागामोर' अब भी टिल्बरी के बारे में ख़ामोश था। इस बीच, सैली ने कई बार इशारे किये थे। अलेक ने ऐसे इशारों की अनदेखी कर दी थी। सैली ने अब तय कर लिया कि सीधे हमले का जोखिम उठायेगा। इसलिए उसने सीधे प्रस्ताव किया कि वह भेष बदलकर टिल्बरी के गाँव जायेगा और गुपचुप ढंग से सम्भावनाओं का पता लगायेगा। अलेक ने इस ख़तरनाक परियोजना पर जोशीले और फ़ैसलाकुन ढंग से रोक लगा दी। उसने कहा :

"भला तुम सोच क्या रहे हो? तुम मुझे चैन नहीं लेने देते! हर समय, बच्चे की तरह तुम पर नज़र रखनी पड़ती है कि कहीं मुसीबत में न पड़ जाओ। तुम कहीं नहीं जाओगे! "

"क्यों, अलेक, मैं ऐसा कर सकता हूँ और किसी को पता नहीं चलेगा – मुझे पक्का भरोसा है।"

"सैली फ़ॉस्टर, क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम्हें पूछताछ करनी होगी?"

"बेशक़, मगर इससे क्या? किसी को शक़ नहीं होगा कि मैं कौन था?"

"ओह, जरा इनकी सुनो! किसी दिन तुम्हें वसीयत लागू करने वालों के सामने साबित करना होगा कि तुमने कभी पूछताछ नहीं की थी। तब क्या होगा?"

वह इस बात को तो भूल ही गया था। उसने जवाब नहीं दिया; कुछ कहने को था ही नहीं। अलेक ने आगे जोड़ा :

"अब चलो, दिमाग़ से यह बात निकाल दो, और फिर कभी मत लाना। टिल्बरी ने तुम्हारे लिए यह जाल बिछाया है। जानते नहीं, यह एक जाल है? वह नज़र रखे हुए है, और उसे उम्मीद है कि तुम उसमें फँस जाओगे। लेकिन वह मायूस होने वाला है – कम से कम जब तक मैं सामने हूँ, सैली! "

"तो?"

"जब तक तुम ज़िन्दा हो, चाहे सौ बरस, तुम कभी पूछताछ नहीं करोगे। वादा करो! "

"ठीक है, " हिचकिचाहट भरी आह के साथ।

फिर अलेक नर्म पड़ गयी और बोली :

"अधीर न हो। हम अमीर हो रहे हैं; हम इन्तज़ार कर सकते हैं; कोई जल्दी नहीं है। हमारी छोटी-सी पक्की आमदनी लगातार बढ़ रही है; और जहाँ तक भविष्य की बात है, मैंने अभी तक कोई ग़लती नहीं की है – यह हज़ारों और दसियों हज़ार के हिसाब से बढ़ रही है। राज्य में कोई और परिवार ऐसा नहीं है जो हमारी तरह अमीर होने वाला हो। हम तो अभी से भावी सम्पत्ति में डूबने-उतराने लगे हैं। तुम जानते हो, जानते हो न?"

"हाँ, अलेक, बिल्कुल ऐसा ही है।"

"फिर ईश्वर हमारे लिए जो कर रहा है उसके शुक्रगुज़ार रहो और चिन्ता करना बन्द करो। तुम्हें ऐसा तो नहीं लगता न कि हम उसकी विशेष मदद और रहनुमाई के बिना ऐसे शानदार नतीजे हासिल कर सकते थे, क्यों?"

हिचकिचाते हुए, "न-नहीं, मेरे ख़्याल से नहीं।" फिर, भावना और सराहना के साथ, "लेकिन फिर भी, जब किसी शेयर को बढ़ाने या वालस्ट्रीट से मुनाफ़ा कमाने की बात हो तो मैं नहीं मानता कि तुम्हें किसी बाहरी ग़ैरपेशेवर मदद की ज़रूरत होगी, मैं तो यह मनाता हूँ -"

"ओह, चुप रहो! मैं जानती हूँ प्यारे, कि तुम्हारा मतलब ग़लत या अश्रद्धा जताना नहीं है, लेकिन लगता है कि तुम ऐसी बातें बोले बिना मुँह नहीं खोल सकते जिन्हें सुनकर कोई भी काँप उठेगा। तुम्हारी वजह से मैं हमेशा डरी रहती हूँ। एक समय था जब मुझे बादल गरजने से डर नहीं लगता था, मगर अब जब मैं सुनती हूँ –"

उसकी आवाज़ लड़खड़ा गयी और वह रोने लगी। यह देखकर सैली के दिल पर ठेस लगी और उसने बाँहों में लेकर उसे ढाँढस बँधाया और वादा किया कि वह बेहतर आचरण करेगा और पश्चाताप करते हुए उससे माफी माँगी।

और अकेले में, उसने गहराई से इस मुद्दे पर सोचा कि क्या करना बेहतर होगा। सुधरने का वादा करना आसान था, बल्कि वह तो वादा कर चुका था। लेकिन यह तो अस्थायी होगा – वह अपनी कमज़ोरी जानता था – वह वादा निभा नहीं सकता था। कोई ज़्यादा सुनिश्चित काम करना ज़रूरी था। और उसने ऐसा ही किया। उसने एक-एक शिलिंग जोड़कर जो पैसे बचाये थे उनसे मकान की छत पर बिजली गिरने से रोकने वाली छड़ लगवा ली।

आदत कैसे-कैसे चमत्कार कर सकती है! और कितनी जल्दी और कितनी आसानी से आदतें पड़ जाती हैं – मामूली आदतें भी और ऐसी भी जो हमें भीतर से बदल देती हैं। अगर हम दुर्घटनावश लगातार दो दिन रात के दो बजे जाग जायें, तो हमें थोड़ा परेशान होना चाहिए, क्योंकि एक और दोहराव इस दुर्घटना को आदत में बदल सकता है, और फिर एक महीने तक व्हिस्की का सहारा लेना पड़ सकता है – लेकिन हम सब ऐसे सामान्य तथ्यों से वाकिफ़ हैं।

हवा में किले बनाने की आदत, दिवास्वप्न देखने की आदत – किस क़दर बढ़ती है ये! कैसी विलासिता बन जाती है; किस तरह हम फ़ुरसत मिलते ही उड़कर इसके मोहजाल में जा पहुँचते हैं, किस तरह हम उसका मजा लेते हैं, उसकी फन्तासियों के नशे में डूब जाते हैं – ओह हाँ, और कितनी जल्दी और कितनी आसानी से हमारा कल्पित जीवन और हमारा भौतिक जीवन इस क़दर घुल-मिल जाते हैं कि हमारे लिए उन्हें अलग करना मुश्किल हो जाता है।

कुछ दिन बाद अलेक ने शिकागो का एक दैनिक और 'वालस्ट्रीट प्वाइंटर' मँगाना शुरू कर दिया। पूरे सप्ताह वह उसी अध्यवसाय के साथ इनका अध्ययन करती थी जिस अध्यवसाय से वह इतवार को अपनी बाइबिल पढ़ती थी। सैली यह देखकर सराहना से भर उठता था कि भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही बाज़ारों की प्रतिभूतियों का पूर्वानुमान करने और उन्हें सँभालने में उसकी प्रतिभा और निर्णय क्षमता कैसे तेज और सुनिश्चित क़दमों से आगे बढ़ रही थी और विस्तारित हो रही थी। वह नश्वर संसार के शेयरों का लाभ उठाने में उसकी हिम्मत और साहस पर गर्व करता था, और उतना ही गर्व से इस बात पर था कि वह अपने आध्यात्मिक सौदों में कितनी रूढ़िवादी सावधानी से काम करती है। उसने देखा कि वह दोनों ही मामलों में कभी भी सन्तुलन नहीं खोती; कि अद्‌भुत साहस के साथ वह सांसारिक भावी कारोबारों में दाँव लगाती है लेकिन दूसरी दुनिया के सौदों में वह हमेशा नापतौल कर क़दम रखती है। इसकी नीति बिल्कुल समझदारी भरी और सीधी-सादी थी, जैसा कि उसने उसे समझाया था : सांसारिक सौदों में वह सट्‌टेबाज़ी करती थी, लेकिन आध्यात्मिक सौदों में वह खरा निवेश करती थी।

अलेक और सैली की कल्पनाओं को शिक्षित करने में कुछ ही महीने लगे। हर दिन का प्रशिक्षण दोनों मशीनों के प्रसार और प्रभाविता में कुछ नया जोड़ता गया। नतीजतन, अलेक ने जब पहली बार काल्पनिक धन कमाने का स्वप्न देखा था तब के मुक़ाबले बहुत तेज दर से पैसे बनाने लगी, और इसके अतिरिक्त बहाव को ख़र्च करने में सैली की क्षमता भी उसी के मुताबिक बढ़ती रही। शुरू-शुरू में, अलेक ने कोयले में सट्‌टेबाज़ी से बारह महीने में मुनाफ़ा मिलने

का सोचा था, और यह मानने को तैयार नहीं थी कि इस अवधि को घटाकर नौ महीने किया जा सकता है। मगर यह तो एक ऐसी वित्तीय कल्पना के शुरुआती लड़खड़ाते क़दम थे जिसे कोई प्रशिक्षण, कोई अनुभव, कोई अभ्यास नहीं मिला था। जल्दी ही ये सहायक मिल गये, और नौ महीने बीतने से भी पहले ही कल्पना के घोड़ों पर सवार दस हज़ार डॉलर का निवेश पीठ पर तीन सौ प्रतिशत मुनाफ़े की गठरी लादे हुए लौट आया!

यह फ़ॉस्टर दम्पति के लिए एक शानदार दिन था। खुशी से फूले न समा रहे थे। एक अन्य कारण से भी वे अवाक् थे: बाज़ार पर काफ़ी नज़र रखने के बाद अलेक ने, हाल ही में, डरते-सकुचाते, वसीयत के बचे हुए बीस हज़ार डॉलर भी जोखिम लेकर "मार्जिन' पर निवेश कर दिये थे। अपनी मन की आँखों से इसे एक-एक अंक बढ़ते देखा था – हालाँकि बाज़ार टूटने की आशंका हमेशा बनी हुई थी – मगर आखिरकार उसके लिए लगातार उद्विग्नता को झेलना मुश्किल हो गया – वह मार्जिन कारोबार में नयी थी और अभी उसका कलेजा मज़बूत नहीं हुआ था – और उसने अपने काल्पनिक ब्रोकर को काल्पनिक टेलीग्राफ भेजकर उसे बेच डालने का काल्पनिक आदेश दे डाला। उसने कहा कि चालीस हज़ार डॉलर का मुनाफ़ा पर्याप्त था। यह बिकवाली उसी दिन हुई जिस दिन कोयले का निवेश अपनी भारी कमाई लेकर वापस आया था। जैसा मैंने कहा, दम्पति अवाक् थे। वे उस रात परम सुख में लीन चकराये हुए-से बैठे यह अनुभव करने की कोशिश करते रहे कि अब वे सचमुच एक लाख डॉलर की साफ़-सुथरी, काल्पनिक नक़दी के मालिक थे। मगर ऐसा ही था।

यह आख़िरी मौक़ा था जब अलेक मार्जिन को लेकर डरी थी; कम से कम इतना डरी थी कि उसकी नींद उड़ जाये और उसके गाल इतने पीले पड़ जाये जितना इस कारोबार के पहले अनुभव के समय हुए थे।

वाक़ई वह यादगार रात थी। दम्पति की आत्माओं में यह अहसास धीरे-धीरे समाया कि वे अमीर हो चुके हैं, फिर उन्होंने पैसे को सँभालकर रखना शुरू कर दिया। अगर हम इन स्वप्नदर्शियों की आँखों से देख सकते तो हमने देखा होता कि उनका छोटा-सा, साफ़-सुथरा लकड़ी का घर ग़ायब हो गया और उसकी जगह ईंटों का दोमंजिला मकान खड़ा हो गया है जिसके सामने ढलवाँ लोहे की बाड़ लगी है। हमने देखा होता कि बैठकखाने की छत से तीन गोलम्बरों वाला गैस से जलने वाला फानूश लटक रहा है; हमने कमरे में बिछी दरी को ब्रसेल्स के शानदार कालीन में बदलते देखा होता; हमने देखा होता कि मामूली आतिशदान ग़ायब हो गया और उसकी जगह इसिंग्लास की खिड़कियों वाला बड़ा-सा बेसबर्नर शोभायमान है। और हमने दूसरी बहुत-सी चीज़ें भी देखी होतीं, मसलन,

बग्घी, गाउन, स्टोव-पाइप हैट वग़ैरह-वग़ैरह।

उस समय से, हालाँकि बेटियों और पड़ोसियों को उस जगह पर वही पुराना लकड़ी का घर दिखता था, मगर अलेक और सैली के लिए वह दोमंज़िला ईंटों का मकान था और एक रात भी ऐसी नहीं गुजरती थी जब अलेक काल्पनिक गैस के बिलों को लेकर चिन्ता न करती, और सैली बेपरवाही से जवाब देता : "क्या फर्क पड़ता है? अब हम इसका ख़र्च उठा सकते हैं।"

अमीर होने की अपनी पहली रात को सोने से पहले उन्होंने तय किया कि उन्हें जश्न मनाना चाहिए। उन्हें एक पार्टी देनी चाहिए। मगर बेटियों और पड़ोसियों को क्या बतायेंगे? वे इस तथ्य को उजागर नहीं कर सकते थे कि वे अमीर हैं। सैली ऐसा करने को तैयार, बल्कि बेचैन था; मगर अलेक समझदार थी और ऐसा नहीं होने दे सकती थी। उसने कहा हालाँकि पैसा लगभग आ ही चुका है, फिर भी उसके वास्तव में आ जाने का इन्तज़ार कर लेना अच्छा होगा। वह इस नीति पर अडिग रही थी इस महान रहस्य को बेटियों से और बाक़ी सबसे छिपाकर रखा जाये।

दम्पति उलझन में थे। उन्हें जश्न मनाना ही चाहिए, वे जश्न मनाने को कृतसंकल्प थे, मगर चूँकि इस रहस्य को बनाये रखना था, तो फिर वे किस बात का जश्न मनाते? अगले तीन महीनों तक किसी का जन्मदिन नहीं था। टिल्बरी उपलब्ध नहीं था, वह तो जैसे सदा सदा के लिए जीवित रहने वाला था, फिर भला किस बात का जश्न वे मनाते? सैली ने इसी ढंग से यह बात कही और वह ख़ासा अधीर और परेशान हो रहा था। मगर आखिरकार उसे सूझ ही गया – एक अन्त:प्रेरणा से उसे यह बात सूझी और पल भर में उनकी सारी परेशानी दूर हो गयी; वे अमेरिका की खोज का जश्न मनायेंगे। कैसा शानदार विचार था!

अलेक को सैली पर फ़ख्र हो आया – उसने कहा वह तो कभी सोच भी न पाती। सैली मन ही मन खुशी और अपने आप पर गर्व से फूला हुआ था, मगर शिष्टता दिखाते हुए उसने कहा कि यह तो कोई खास बात नहीं है और कोई भी ऐसा कर सकता था। इस पर अलेक ने खुशी से सिर झटककर कहा :

"ओह, सचमुच! कोई भी – जैसे, होसन्ना डिलकिन्स! या शायद एडलबर्ट पीनट – ओह, हाँ! मैं भी देखती कि उन्हें यह बात कैसे सूझती। अरे वह चालीस एकड़ के टापू की खोज नहीं कर सकते, पूरे महाद्वीप की भला क्या खाकर करते!"

पत्नी जानती थी कि उसके पति में प्रतिभा है; और अगर प्रेमवश उसने इसकी मात्रा को ज़रा ज़्यादा ही आँक लिया, तो यह मीठा-सा, प्यारा-सा जुर्म था और बेशक़ इसे माफ किया जा सकता था।

# अध्याय पाँच

जश्न अच्छी तरह मनाया गया। तमाम दोस्त मौजूद थे, नौजवान और बुज़ुर्ग और दोनों ही नौजवानों में थे फ्लॉसी और ग्रेसी पीनट और उनका भाई एडलबर्ट जो कि एक उभरता हुआ युवा जर्नीमैन टिनर था, और था होसन्ना डिलकिन्स, राजमिस्त्री जिसने अभी–अभी अप्रेण्टिसशिप शुरू की थी। कई महीनों से एडलबर्ट और होसन्ना ग्वेनडोलेन और क्लिटेमनेस्ट्रा फ़ॉस्टर में दिलचस्पी दिखा रहे थे, और लड़कियों के माता–पिता ने इसे सन्तुष्ट भाव से देखा था। मगर अब अचानक उन्हें महसूस हुआ कि वह भावना तिरोहित हो चुकी है। वे समझ गये कि बदली हुई वित्तीय स्थितियों ने उनकी बेटियों और युवा मैकेनिकों के बीच एक सामाजिक पायदान का अन्तर ला दिया है। बेटियाँ अब और ऊपर देख सकती हैं – और उन्हें देखना ही चाहिए। हाँ, ज़रूर देखना चाहिए। उन्हें वक़ील या व्यापारी के दर्जे से नीचे शादी करने की ज़रूरत नहीं है, पापा और मम्मी बाक़ी चीज़ों का ध्यान रख लेंगे। कोई बेमेल जोड़ी नहीं बननी चाहिए।

लेकिन उनकी यह सोच और योजनाएँ निजी थीं, और सतह पर नहीं दिखायी देती थीं और इसलिए जश्न पर इसकी कोई छाया नहीं पड़ी। जो चीज़ दिखती थी वह थी एक प्रशान्त और उदात्त सन्तुष्टि, चाल–ढाल की गरिमा और बर्ताव का गुरुत्व जिसके चलते तमाम मौजूद लोगों में प्रशंसा और अचरज का भाव उत्पन्न हो रहा था। सभी ने इस पर ध्यान दिया और सबने इस पर टिप्पणी भी की मगर कोई भी इसके रहस्य को समझ न सका। यह उनके लिए एक चमत्कार और रहस्य था। कई लोगों ने इस तरह की टिप्पणियाँ कीं, बिना यह जाने कि वे अँधेरे में कितना सटीक निशाना लगा रहे थे :

"लगता है जैसे उन्हें गड़ा ख़ज़ाना मिल गया है।"

हाँ, वाक़ई ऐसा ही था। अधिकांश माँओं ने वैवाहिक मामले को पुराने परम्परागत ढंग से लिया होता; उन्होंने लड़कियों को बुलाकर बात की होती, गम्भीर क़िस्म की और बिना सूझबूझ के – ऐसा भाषण जो अपने ही उद्देश्य को असफल करने के लिए तैयार किया गया था, जिससे आँसू और गुप्त बग़ावत उत्पन्न होती, और इन माँओं ने युवा मैकेनिकों को अपना ध्यान कहीं और लगाने को कहकर मामला और बिगाड़ दिया होता। मगर यह माँ अलग थी। वह व्यावहारिक थी। उसने किसी भी सम्बन्धित युवा से, या किसी भी अन्य से कुछ नहीं कहा, सिवाय सैली के। उसने पत्नी की बात सुनी और समझी; समझी और सराहना की। उसने कहा :

"मैं समझ गया। सैम्पलों में ग़लती निकालने, और इस तरह बेवजह भावनाओं

को ठेस पहुँचाने और व्यापार में रुकावट डालने के बजाय, तुम पैसे के बदले ज़्यादा ऊँचे दर्जे का माल पेश कर रही हो और बाक़ी काम क़ुदरत पर छोड़ रही हो। यह अक़्लमन्दी है, अलेक, पक्की अक़्लमन्दी, और एकदम ठोस। तुम किस मछली पर काँटा लगा रही हो? क्या तुमने उसे छाँट लिया है?"

नहीं, अभी नहीं किया है। उन्हें बाज़ार की पड़ताल करनी चाहिए – और उन्होंने ऐसा ही किया। सबसे पहले उन्होंने उभरते हुए युवा वक़ील ब्रैंडिश, और उभरते हुए युवा डेंटिस्ट फुल्टन पर सोच-विचार किया। सैली को उन्हें डिनर पर बुलाना चाहिए। मगर अलेक ने कहा, अभी नहीं, कोई जल्दी नहीं है। जोड़े पर नज़र रखो, और इन्तज़ार करो; इतने महत्वपूर्ण मामले में धीरे चलने से कुछ नुकसान नहीं होगा।

मालूम हुआ कि यह बड़ी अक़्लमन्दी की बात थी; क्योंकि तीन हफ़्ते में ही अलेक ने एक शानदार दाँव मारा जिससे उसकी काल्पनिक सम्पत्ति एक लाख से बढ़कर चार लाख तक पहुँच गयी। वह और सैली उस शाम सातवें आसमान पर थे। पहली बार उन्होंने डिनर में शैम्पेन पेश की। मगर अब अमीरी का दर्प अपना विखण्डनकारी काम शुरू कर चुका था। वे एक बार फिर इस दुखद सत्य को साबित कर रहे थे जो दुनिया में पहले अनेक बार साबित हो चुका था : कि दिखावटी और अध:पतनकारी घमण्ड और दुर्व्यसनों के विरुद्ध उसूल एक बड़ी और अहम सुरक्षा होते हैं, मगर ग़रीबी इससे कई गुना बड़ी सुरक्षा होती है। चार लाख डॉलर अपना काम कर रहे थे। दोनों ने एक बार फिर वैवाहिक मसले को हाथ में लिया। न तो डेंटिस्ट की चर्चा हुई न ही वक़ील की; वे दौड़ से बाहर हो चुके थे। अयोग्य सिद्ध हो चुके थे। उन्होंने मांस कारखाने के मालिक के लड़के और गाँव के बैंकर के लड़के की चर्चा की। मगर आखिरकार, पिछले मामले की ही तरह, उन्होंने तय किया कि इन्तज़ार करेंगे और सोचेंगे, और पूरी सावधानी से क़दम उठायेंगे।

एक बार फिर क़िस्मत ने उनका साथ दिया। हमेशा चौकन्ना रहने वाली अलेक को एक शानदार जोखिमभरा मौक़ा नज़र आया, और उसने एक साहसिक दाँव खेल लिया। सिहरन, सन्देह, बेहिसाब बेचैनी का एक दौर चला क्योंकि नाकामयाबी का मतलब था पूरी बरबादी। फिर नतीजा आया, और अलेक खुशी से गश खाती हुई बोली; उसकी आवाज़ लरज रही थी :

"सस्पेंस ख़त्म हो गया, सैली – हमारे पास पूरे दस लाख हैं!"

सैली कृतज्ञता से रो पड़ा, और बोला :

"ओह, इलेक्ट्रा, मेरी रानी, आखिरकार हम आज़ाद हो गये, अब दौलत हमारे क़दमों में है, अब हमें फिर कभी जोड़-तोड़ नहीं करनी पड़ेगी। यह तो मौक़ा

है वोव क्लिको* की बोतल खोलने का। और उसने स्प्रूस-बियर का एक कैन निकाला और क़ुर्बानी के अन्दाज़ में बोला, "जो भी खर्च हो देखा जायेगा।" और अलेक ने उसे उलाहनेभरी मगर तरल और खुश आँखों से मीठी झिड़की दी।

उन्होंने मांस कारखाने के मालिक के बेटे और बैंकर के बेटे को छोड़ दिया और बैठकर गर्वनर के बेटे और सांसद के बेटे पर विचार करने लगे।

## अध्याय छह

इस समय से फ़ॉस्टर का काल्पनिक धन जिस तरह दिन दूनी रात चौगुनी रफ़्तार से बढ़ने लगा उसका ब्यौरेवार ध्यान रखना बहुत थकाऊ होगा। यह अद्‌भुत था, आश्चर्यजनक था, हैरतअंगेज़ था। अलेक जिस चीज़ को छूती वह सोना बन जाती और ख़ुद-ब-ख़ुद उसका ढेर आसमान की ओर ऊँचा उठने लगता। दसियों लाख डॉलरों की झड़ी लग गयी, और यह शक्तिशाली धारा बढ़ती ही जा रही थी, उसका फैलाव लगातार बढ़ रहा था। पचास लाख – एक करोड़ – दो करोड़ – तीन करोड़ – लगता था मानो इसका अन्त ही न होगा।

दो साल ऐसे ही अद्‌भुत सरसाम की हालत में बीत गये, मदमत्त फ़ॉस्टर दम्पति को समय बीतने का एहसास ही न हुआ। अब वे तीस करोड़ डालर के मालिक थे; वे देश की हर अहम कम्पनी के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स में थे; और फिर भी समय बीतने के साथ करोड़ों में इजाफ़ा होता जा रहा था। तीस करोड़ दोगुने हो गये – फिर दुबारा दुगुने – एक बार फिर – और एक बार फिर।

दो सौ चालीस करोड़ डॉलर!

कारोबार थोड़ा उलझता जा रहा था। थोड़ा हिसाब-किताब लगाना और इसे पटरी पर लाना ज़रूरी था। फ़ॉस्टर दम्पति यह बात जानते थे, वे इसे महसूस करते थे, वे समझते थे कि यह अपरिहार्य; लेकिन वे यह भी जानते थे कि इस काम को ठीक से करने के लिए ज़रूरी है कि एक बार शुरू करके इसे अंजाम तक पहुँचा दिया जाये। यह दस घण्टे का काम था; और उन्हें एक साथ फुरसत के दस घण्टे कहाँ से मिलते? सैली रोज़-ब-रोज़ पिनें और चीनी और कपड़ा बेचता रहता था; अलेक रोज़-ब-रोज़ खाना पकाती, बर्तन धोती, झाड़ू-बुहारू करती और बिस्तर लगाती थी, और मदद के लिए कोई नहीं था, क्योंकि बेटियों को हाई सोसायटी के लिए बचा कर रखा जा रहा था। दोनों जानते थे कि दस घण्टे निकालने का बस एक तरीक़ा था, सिर्फ़ एक। दोनों ही उसका नाम लेने में शरमाते थे; दोनों इन्तज़ार में थे कि दूसरा ऐसा कर दे। आखिरकार, सैली ने कहा :

---

* प्रसिद्ध फ्रेंच शैम्पेन की एक ब्राण्ड

"किसी को तो झुकना ही होगा। तो मैं ही सही। मान लो कि मैंने नाम ले दिया – बोलने की ज़रूरत नहीं है।"

अलेक के गाल लाल हो गये, मगर वह कृतज्ञ थी। बिना कुछ बोले वे राजी हो गये; और इतवार की प्रार्थना छोड़ दी। क्योंकि यही एक समय था जब वे दस घण्टे खाली रहते थे। पतन के रास्ते पर यह तो बस एक और क़दम था। अभी बहुत कुछ और होना था।

उन्होंने पर्दे गिरा दिये और प्रार्थना छोड़ दी। बड़ी मेहनत और धीरज से उन्होंने अपने मालिकाने की पूरी सूची बनायी। यह तो भारी-भरकम नामों का पूरा जुलूस था! रेलवे सिस्टम, स्टीमर लाइंस, स्टैण्डर्ड ऑयल, ओशन केबल्स, डायल्यूटेड टेलीग्राफ आदि-आदि से शुरू होकर यह क्लोंडाइक, डी बियर्स, टैमनी ग्राफ्ट और पोस्टऑफिस डिपार्टमेण्ट में खातों तक जाती थी।

दो सौ चालीस करोड़, और सब कुछ बढ़िया चीज़ों में सुरक्षित ढंग से लगा हुआ। एकदम पक्का और ब्याज लाने वाला। आमदनी, 120,000,000 डॉलर सालाना। अलेक ने खुशी से भर्रायी आवाज़ में कहा :

"क्या यह काफ़ी है?"

"हाँ है, अलेक।"

"अब हमें क्या करना चाहिए?"

"आराम।"

"कारोबार से रिटायर हो जायें?"

"बिल्कुल।"

"मैं सहमत हूँ। असली काम हो चुका है; अब हम लम्बा आराम करेंगे और पैसे का लुत्फ़ उठायेंगे।"

"बढ़िया! अलेक!"

"हाँ, प्यारे?"

"हम कितनी आमदनी खर्च कर सकते हैं?"

"पूरी की पूरी।"

उसके पति को लगा मानो उसके शरीर से टन भर जंजीरें गिर गयी हों। उसने एक शब्द भी नहीं कहा; वह इतना खुश था कि बोल भी नहीं पा रहा था।

उसके बाद, हर इतवार को वे प्रार्थना छोड़ने लगे। पूरा दिन वे आविष्कार में लगाते थे – पैसे खर्च करने के तरीक़ों का आविष्कार करने में। वे इस लज़ीज़ ऐयाशी में आधी रात के बाद तक लगे रहते; और हर मौक़े पर अलेक बड़ी चैरिटी और धार्मिक संस्थाओं को लाखों डॉलर दान देती थी और सैली ऐसी ही रक़में तमाम ऐसी चीज़ों पर उड़ाता था जिन्हें (शुरू में) वह निश्चित नाम देता

था। बस शुरू-शुरू में ही। बाद में धीरे-धीरे नाम धूमिल पड़ने लगे और "वग़ैरह-वग़ैरह" में खोने लगे। क्योंकि सैली टूट-बिखर रहा था। इन लाखों डॉलरों को निवेश और खर्च करने की क़वायद का परिवार के खर्चों पर गम्भीर और असुविधाजनक असर पड़ रहा था – मोमबत्तियों का खर्च बढ़ता जा रहा था। कुछ समय तक अलेक चिन्तित हुई। फिर, उसने चिन्ता करना छोड़ दिया, क्योंकि इसका समय बीत चुका था। वह दुखी थी, परेशान थी, शर्मिन्दा थी; लेकिन उसने कुछ कहा नहीं, और इस तरह वह भी भागीदार बन गयी। सैली स्टोर से मोमबत्तियाँ चुरा रहा था। हमेशा ऐसा ही होता है। भारी सम्पत्ति उस व्यक्ति के लिए अभिशाप बन जाती है, जो उसका आदी न हो। यह उसकी नैतिकता को कुतर जाती है। जब फ़ॉस्टर दम्पति ग़रीब थे, तो उनके पास अनगिनत मोमबत्तियाँ सुरक्षित छोड़ी जा सकती थीं। मगर अब वे – लेकिन इस बात को छोड़ देते हैं। मोमबत्तियों से सेब तक बस एक क़दम का ही फासला था : सैली सेब लाने लगा, फिर साबुन, फिर मेपल-शुगर, फिर डिब्बाबन्द सामान, फिर क्रॉकरी। एक बार जब हम गिरना शुरू करते हैं तो बद से बदतर होते जाना कितना आसान होता है!

इस बीच, फ़ॉस्टर दम्पति की अद्‌भुत वित्तीय यात्रा के रास्ते में नये-नये कीर्तिस्तम्भ खड़े हो रहे थे। ईंटों की मकान की जगह ग्रेनाइट की इमारत ने ले ली थी जिस पर चारख़ानेदार टाइल्स वाली ढलुआ छत थी। फिर वह भी ग़ायब हो गयी और उसकी जगह ज़्यादा भव्य मकान आ गया – और यह सिलसिला चलता रहा। हवा में हवेली के बाद हवेली बनती रही, और ऊँची, और बड़ी, और सुन्दर, और फिर ग़ायब हो जाती रही; और अब इन शानदार दिनों में, हमारे स्वप्नदर्शी एक सुदूर इलाक़े में, एक विराट और भव्यातिभव्य महल में रहते थे जहाँ हरियाली से घिरे शिखर से दूर घाटी और नदी और कुहरे में लिपटी बलखाती पहाड़ियाँ दिखती थीं – और यह सब निजी था, सब कुछ इन स्वप्नदर्शियों की सम्पत्ति थी; वर्दीदार नौकरों से भरा-पूरा महल, जहाँ सारी दुनिया की राजधानियों से आये दौलत और शोहरत के मालिक मेहमान हुआ करते थे।

यह महल अमेरिकी कुलीन तंत्र के अवर्णनीय इलाक़े, हाई सोसायटी की पवित्र नगरी, न्यूपोर्ट, रोड आइलैण्ड में स्थित था। नियम के तौर पर, वे हर इतवार चर्च के बाद का समय इस शानदार घर में गुजारते थे और बाक़ी का पूरा दिन वे यूरोप में बिताते थे, या फिर अपने निजी याट पर धूप सेंकते हुए। छह दिन लेकसाइड के धूसर परिदृश्य में गन्दी और कमरतोड़ मेहनत से भरी और खींचतान कर चलने वाली ज़िन्दगी, और सातवाँ दिन परियों के देश में – यही उनका कार्यक्रम था और इसी के वे आदी हो चुके थे।

अपनी कठोर पाबन्दियों वाली वास्तविक ज़िन्दगी में वे पहले की तरह बने रहे – मेहनती, अध्यवसायी, सावधान, व्यावहारिक, मितव्ययी। वे अपने छोटे–से प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्रति वफ़ादार बने रहे और अपनी समस्त मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ इसके उच्च एवं कठोर सिद्धान्तों का पालन करते रहे। लेकिन अपने सपनों के जीवन में वे अपनी कल्पना के आमन्त्रणों पर चलते थे, वे चाहे जैसे भी हों, और उनकी कल्पनाएँ चाहे जो भी रूप लें। अलेक की कल्पनाओं में ज़्यादा उतार–चढ़ाव नहीं होता था, मगर सैली की कल्पनाएँ इधर–उधर ख़ूब भटकती थीं। अपने स्वप्न–जीवन में अलेक एपिस्कोपल चर्च की भारी–भरकम पदवियों से प्रभावित होकर उसके दायरे में चली गयी; फिर वह हाई चर्च की मोमबत्तियों और प्रदर्शनों से प्रभावित हो गयी; और उसके बाद स्वाभाविक तौर पर वह रोमन चर्च से जुड़ गयी, जहाँ कार्डिनल थे और बहुत–सी मोमबत्तियाँ थीं। मगर ऐसे भ्रमण सैली की तुलना में तो कुछ भी नहीं थे। उसका स्वप्न–जीवन निरन्तर जगमगाते उत्साह और उत्तेजना का मूर्त रूप था, और वह एक के बाद एक बदलावों से इसके हर हिस्से को ताजा और चमकदार बनाये रखता था; हर चीज़ के साथ इसका धार्मिक भाग भी निरन्तर परिवर्तनशील रहता था। वह अपने धर्मों से जमकर काम लेता था और कमीज़ की तरह उन्हें बदलता रहता था।

कल्पनालोक में फ़ॉस्टर दम्पति की शाहखर्ची उनकी समृद्धि के शुरुआती दिनों में ही शुरू हो गयी थी, और उनकी दौलत बढ़ने के साथ यह भी बढ़ती चली गयी। समय बीतने के साथ इसका पैमाना विराट से विराटतर होता गया। अलेक हर इतवार एक या दो युनिवर्सिटी, और एक या दो अस्पताल बनाती थी; एकाध राउटन होटल, कुछ चर्च और बीच–बीच में एकाध कैथेड्रल भी बनवा डालती थी। एक बार, ग़लत समय और ग़लत ढंग से खिलन्दड़ापन दिखाते हुए सैली ने ताना कसा, "एकाध बार अलेक की तबियत ख़राब थी तभी ऐसा हुआ कि उसने जहाज़ भरकर मिशनरियों को चीन नहीं भेजा ताकि वे चिन्तनहीन चीनियों को अपना चौबीस कैरेट कन्फ्यूशियसवाद छोड़कर फ़र्ज़ी ईसाइयत अपनाने के लिए राज़ी कर सकें।"

ऐसी अशिष्ट और भावनाहीन भाषा से अलेक के दिल को ठेस पहुँची और वह रोते हुए वहाँ से चली गयी। इस दृश्य से सैली को भी दुख हुआ और वह शर्मिन्दगी में डूब गया। वह ख़ुद अपने बारे में सोचने लगा। पिछले कुछ वर्षों की असीम समृद्धि में वह जिस तरह की ज़िन्दगी गुजार रहा था उसके दृश्य उसकी आँखों के सामने से गुजरने लगे और उसके गाल लाल हो गये और आत्मा

पश्चाताप में घिर गयी। अलेक की ज़िन्दगी को देखो – कितनी साफ़–सुथरी थी, और निरन्तर उन्नत हो रही थी; और ज़रा ख़ुद अपनी ज़िन्दगी पर नज़र डालो – कितनी छिछली, किस क़दर दुर्व्यसनों से भरी, कितनी स्वार्थपूर्ण, कितनी ख़ाली, कितनी निर्लज्जतापूर्ण! और इसकी दिशा – कभी भी ऊपर की ओर नहीं, बस नीचे, और नीचे!

वह अलेक और अपने जीवन का लेखा जोखा करने लगा। जब अलेक ने अपना पहला चर्च बनवाया था तब वह क्या कर रहा था? दूसरे करोड़पतियों के साथ मिलकर पोकर क्लब बना रहा था; ख़ुद अपने महल को इससे दूषित कर रहा था; हर बैठक में लाखों हार रहा था और इससे मिलने वाली सराहनापूर्ण कुख्याति पर मूर्खों की तरह इतरा रहा था। जब वह अपनी पहली युनिवर्सिटी बना रही थी तब वह क्या कर रहा था? धन से करोड़पति और चरित्र से कंगाल दूसरे नौदौलतियों की सोहबत में ऐयाशीभरी गुप्त ज़िन्दगी में गोते लगा रहा था। जब वह अपना पहला शिशु अनाथालय बना रही थी, तब वह क्या कर रहा था? काश! जब वह अपनी 'सोसायटी फ़ॉर प्यूरिफ़ाइंग ऑफ दि सेक्स' को प्रचारित कर रही थी, तब वह क्या कर रहा था? आह, क्या बात है! जब वह और डब्ल्यू. सी.टी.यू. देश से नशाख़ोरी का सफ़ाया करने के लिए अडिग क़दमों से बढ़ रही थीं, तब वह क्या कर रहा था? दिन में तीन बार नशे में धुत हो रहा था। जब एक सौ कैथेड्रल बनवाने के बाद अलेक रोम में अभिनन्दन और आशीष प्राप्त कर रही थी, और स्वर्ण गुलाब से सम्मानित की जा रही थी, तब वह क्या कर रहा था? मोंते कार्लो में जुए की बाज़ियाँ लगा रहा था।

वह ठहर गया। और आगे जाना उसके वश में नहीं था। वह दृढ़ संकल्प के साथ उठ खड़ा हुआ। इस गोपनीय जीवन को उजागर करना होगा और पाप स्वीकार करना ही होगा; वह अभी जाकर उसे सब कुछ बता देगा।

और उसने ऐसा ही किया। उसने उसे सब कुछ बता दिया; और उसकी गोद में मुँह छुपाकर रोया और उससे माफ़ी माँगी। अलेक के लिए यह गहरा धक्का था मगर वह उसका अपना था और उसने उसे क्षमा कर दिया। वह जानती थी कि वह सिर्फ़ पश्चाताप कर सकता है, सुधर नहीं सकता। फिर भी तमाम नैतिक क्षरण के बावजूद वह उसका अपना था, उसकी आस्था का केन्द्र था।

## अध्याय सात

इसके कुछ समय बात इतवार की एक दोपहर को वे अपने सपनों के याट में गर्म सागर में यात्रा कर रहे थे और डेक की छत पर शामियाने के नीचे आराम

से पसरे हुए थे। ख़ामोशी छायी थी, क्योंकि दोनों ही अपने-अपने ख़्यालों में गुम थे। पिछले कुछ समय से ख़ामोशी के ये दौर बढ़ते जा रहे थे; पुरानी नज़दीकी और स्नेहिलता छीज रही थी। सैली की भयंकर स्वीकारोक्ति ने अपना काम कर दिया था। अलेक उसकी याद को दिमाग़ से निकाल नहीं पा रही थी और उसकी शर्म और कड़वाहट उसके सौम्य-शिष्ट स्वप्न-जीवन में ज़हर घोल रही थी। अब वह देख सकती थी (इतवार को) कि उसका पति घमण्डी और घृणित होता जा रहा था। वह इस ओर से आँखें बन्द नहीं कर सकती थी, और इन दिनों वह, इतवार को, उसकी ओर देखने से भी बचती थी।

मगर क्या वह ख़ुद बेदाग थी? वह जानती थी कि ऐसा नहीं है। वह उससे एक रहस्य छुपा रही थी, वह उसका अनादर कर रही थी, और यह उसे भीतर ही भीतर कचोट रहा था। वह दोनों के समझौते को तोड़ रही थी और इस बात को उससे छुपा रही थी। प्रलोभनवश उसने फिर कारोबार शुरू कर दिया था; उसने उनकी पूरी दौलत को दाँव पर लगाकर देश के तमाम रेलवे और कोयला तथा स्टील की कम्पनियाँ मार्जिन पर ख़रीद ली थीं, और अब वह इतवार को हर घण्टे यह सोचकर सिहर उठती कि कहीं मुँह से निकली किसी बात से सैली को पता न चल जाये। इस विश्वासघात के दुख और पश्चाताप में वह यह सोचती रहती कि अलेक उस पर इस क़दर भरोसा करता है और वह इतनी भयानक सम्भावित आपदा एक धागे से उसके सिर पर लटकाये हुए है –

"सुनो, अलेक?"

इन शब्दों से अचानक वह जैसे वापस लौट आयी और अपने स्वर में काफ़ी कुछ पहले जैसी कोमलता के साथ जवाब दिया :

"हाँ, प्यारे।"

"जानती हो, अलेक, मेरे ख़्याल से हम ग़लती कर रहे हैं – यानी तुम कर रही हो। मेरा मतलब है शादी के मामले में।" वह उठ बैठा और एकदम संजीदा हो गया। "देखो – पाँच साल से ज़्यादा हो गये हैं। तुम शुरू से पुरानी नीति पर क़ायम हो : कमाई में हर बढ़ोत्तरी के साथ हमेशा अपना भाव पाँच अंक और ऊपर कर देती हो। जब भी मैं सोचता हूँ कि अब हम शादियाँ करा सकते हैं, तुम्हें आगे कुछ और बड़ी चीज़ दिख जाती है, और मैं फिर निराश हो जाता हूँ। मुझे लगता है कि तुम्हें ख़ुश करना बहुत मुश्किल है। किसी दिन हम ऐसे ही पीछे छूट जायेंगे। पहले, हमने डेंटिस्ट और वक़ील से इन्कार किया। वह सही था – उचित था। फिर, हमने बैंकर के बेटे और मांस-कारखाने के उत्तराधिकारी को छोड़ा – वह भी सही और उचित था। फिर हमने कांग्रेस मैन और गवर्नर के बेटे को जाने दिया – मैं मानता हूँ कि ये भी बिल्कुल सटीक था। इसके

बाद सीनेटर का बेटा और युनाइटेड स्टेट्स के वाइस प्रेसीडेण्ट का बेटा – ये भी सही था, इन छोटी-छोटी उपाधियों का कोई स्थायित्व नहीं होता। फिर तुमने कुलीन वर्ग पर नज़र टिकायी और मुझे लगा कि आखिरकार हमें ख़जाना मिल गया है। हम कोई न कोई पुराना वंश ढूँढ़ निकालेंगे, पुराना, पवित्र, सम्माननीय, जो एक सदी पहले की आम ज़िन्दगी की गन्ध से भी मुक्त हो चुका हो, और तब से आज तक एक दिन के काम का भी कोई दाग़ उस पर न हो। और फिर, ज़ाहिर है कि ये शादियाँ हो जायेंगी। लेकिन नहीं, तभी यूरोप से एक जोड़ा असली कुलीन आ जाते हैं, और तुम तुरन्त इन वर्णसंकरों से पिण्ड छुड़ा लेती हो। यह बहुत हताशापूर्ण है, अलेक! उसके बाद से, कैसा जुलूस निकलता रहा है! तुमने एक जोड़ा बैरनों के लिए बैरोनेटो से इन्कार किया; एक जोड़ा विस्काउण्टों के लिए बैरनों को वापस किया; एक जोड़ा अर्लों के लिए विस्काउण्टों को मना किया; मार्क्विसों के जोड़े के लिए अर्लों को; ड्यूकों के जोड़े के लिए मार्क्विसों को इन्कार किया। अब बस, अलेक, बहुत हो चुका! तुम्हारे पास चार राष्ट्रीयताओं के चार ड्यूक मौजूद हैं; सब के सब हाथ-पैर और नस्ल से दुरुस्त, सब के सब दिवालिया और नाक तक कर्ज़ में डूबे हुए। वे महँगे हैं, लेकिन हम यह खर्च उठा सकते हैं। चलो, अलेक अब इसे और मत टालो, सस्पेंस बनाये मत रखो : सब सामने रख दो और लड़कियों को चुनने दो!"

अपनी वैवाहिक नीति की इस भर्त्सना के दौरान अलेक सन्तुष्ट भाव से बिना कुछ कहे मुस्कुरा रही थी, उसके चेहरे पर एक सुखद रोशनी थी, शायद जीत की जिससे एक सुखद आश्चर्य झाँक रहा था, और फिर उसने बड़ी शान्ति से कहा :

"सैली, इसके बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है – राज परिवार?"

अद्भुत! वह बेचारा तो चारों खाने चित हो गया। कुछ देर वह भकुआया सा रहा, फिर उसने ख़ुद को सँभाला और जाकर बीवी के पास बैठ गया। उसकी आँखों से पहले जैसी प्रशंसा और प्रेम झरने लगा।

"हे भगवान!" उसने कहा, "अलेक, तुम महान हो – दुनिया की महानतम स्त्री! मैं कभी तुम्हें पूरी तरह पहचान नहीं सकता। मैं कभी तुम्हारी अथाह गहराइयों की थाह नहीं पा सकता। और यहाँ मैं सोच रहा था कि तुम्हारी आलोचना करने के लिए मैं योग्य हूँ। काश मैंने ज़रा ठहरकर सोचा होता, तो मैं जान जाता कि तुमने अभी कोई पत्ता छिपा रखा है। चलो मान लिया, मैं तो बिल्कुल अधीर हूँ – बताओ तुमने क्या सोचा है!"

प्रशंसा से प्रसन्न स्त्री अपने होंठ उसके कानों के पास लायी और फुसफुसाकर एक राजसी नाम लिया। सुनकर उसकी साँस रुक गयी, उसका

चेहरा खुशी से चमक उठा।

"वाह!" उसने कहा, "यह तो शानदार पकड़ है! उसके पास एक जुआघर है, और एक क़ब्रिस्तान, एक बिशप और एक कैथेड्रल – सब उसका अपना। और तमाम पक्के पाँच सौ प्रतिशत वाले शेयर; पूरे यूरोप में सबसे साफ़-सुथरी सम्पत्ति। और वह क़ब्रिस्तान – दुनिया में सबसे चुनिन्दा: सिर्फ़ ख़ुदकुशी वालों को आने की इज़ाज़त है। रियासत में ज़्यादा ज़मीन नहीं है, लेकिन पर्याप्त है : क़ब्रिस्तान में आठ सौ एकड़ और बयालीस उसके बाहर। मगर वह सम्प्रभु रियासत है – और यही असल बात है। ज़मीन से कुछ नहीं होता। ज़मीन तो बहुतायत में है, सहारा तो इससे भरा पड़ा है।"

अलेक खुशी से दमक उठी; अब वह बेहद खुश थी। उसने कहा :

"ज़रा सोचो, सैली – यह एक ऐसा खानदान है जिसने कभी यूरोप के राजाओं और सम्राटों के खानदान से बाहर शादी नहीं की है। हमारे नाती-पोते राजगद्दियों पर बैठेंगे!"

"यक़ीनन, अलेक – और हाथों में राजदण्ड भी थामेंगे; और उन्हें उतने ही स्वाभाविक ढंग से रखेंगे जैसे मैं कपड़ा नापने की छड़ी रखता हूँ। वाक़ई शानदार पकड़ है, अलेक। वह फन्दे में है, है न? निकल नहीं सकता? तुमने उसे मार्जिन पर तो नहीं लिया है?

"नहीं, इसका भरोसा रखो। वह कोई देनदारी नहीं बल्कि सम्पत्ति में इजाफ़ा करने वाला है। ऐसा ही दूसरा वाला भी है।"

"वह कौन है, अलेक?"

"हिज़ रॉयल हाइनेस सिगिसमुण्ड-सीगफ्रेण्ड-लोएनफेल्ड-डिंकेलस्पील-श्वार्ट्ज़ेनबर्ग ब्लटवुर्स्ट, कैट्ज़ेनयामर के वंशानुगत ग्राण्ट ड्यूक।"

"नहीं! तुम सच नहीं कह रही!"

"यह इतना ही सच है जितना कि मैं यहाँ बैठी हूँ, क़सम से," उसने जवाब दिया।

वह अभिभूत हो उठा और उसे गले से लगाकर बोल पड़ा :

"यह सब कुछ कितना अद्भुत लगता है, और कितना ख़ूबसूरत! यह तीन सौ चौंसठ प्राचीन जर्मन रियासतों में से सबसे पुरानी और सम्मानित रियासतों में से एक है, और उन कुछ में से एक जिसे बिस्मार्क के राज में भी अपनी रियासत बचाये रखने की अनुमति मिली। मैं वहाँ जा चुका हूँ। वहाँ एक रोप-वॉक और मोमबत्ती का कारखाना है और एक सेना भी है। स्थायी सेना। पैदल और घुड़सवार सेना। तीन सिपाही और एक घोड़ा। अलेक, इन्तज़ार बहुत लम्बा रहा है और कई बार दिल टूटा और आशा टलती गयी, मगर ईश्वर जानता है कि अब मैं खुश

हूँ। खुश, और तुम्हारे प्रति कृतज्ञ, मेरी अपनी, जिसने यह सब कर दिखाया। कब होना है ये?"

"अगले इतवार।"

"बढ़िया। और हम इन शादियों को आजकल के शाही अन्दाज़ में करेंगे। आखिरकार शाही ख़ानदान का मामला है। जितना मैं समझता हूँ, एक ही तरह की शादी है जो शाही परिवार के लिए पवित्र मानी जाती है, शाही ख़ानदान के लिए बिल्कुल ख़ास : इसे कहते हैं मॉर्गेनैटिक।"

"वे इसे भला ऐसा क्यों कहते हैं, सैली?"

"मैं नहीं जानता; लेकिन जो भी हो, यह शाही है, ख़ालिस शाही।"

"तब हम इसी पर ज़ोर देंगे। इतना ही नहीं – मैं हर हाल में इसे ही करूँगी। या तो मॉर्गेनैटिक शादी होगी या नहीं होगी।"

"तो बात पक्की!" सैली ने खुशी से हाथ रगड़ते हुए कहा। "और यह अमेरिका में पहली बार होगा। अलेक, इससे न्यूपोर्ट वाले जल-भुन जायेंगे।"

फिर वे चुप हो गये, और अपने सपनों के डैनों पर सवार होकर तमाम मुकुटधारियों और उनके खानदानों को आमंत्रित करने के लिए दुनिया के दूर-दराज़ के इलाक़ों की ओर चल पड़े।

## अध्याय तीन

तीन दिनों के दौरान दम्पति हवा पर चलते रहे, और उनके सिर बादलों में थे। उन्हें आसपास के माहौल का भी बस हल्का सा अहसास था; हर चीज़ धुँधली-सी दिखती थी, मानो परदे के पार से। वे सपनों में खोये हुए थे, अक्सर जब उनसे कुछ कहा जाये तो सुनते ही नहीं थे; जब सुनते थे तो अक्सर समझते नहीं थे; भ्रमग्रस्त ढंग से या यूँही कुछ भी जवाब देते थे। सैली शीरे को तौलकर बेचता था, चीनी को गज़ से नापने लगता था और मोमबत्ती माँगने पर साबुन पकड़ाता था, और अलेक ने बिल्ली को धुलाई के कपड़ों में डाल दिया और गन्दे कपड़ों को दूध पिला दिया। हर कोई भौचक्का और हतप्रभ था, और बड़बड़ाता रहता था, "फ़ॉस्टर दम्पति को आख़िर हुआ क्या है?"

तीन दिन। फिर एक के बाद एक घटनाएँ! चीज़ों ने एक सुखद मोड़ लिया था, और पिछले अड़तालिस घण्टों से अलेक की काल्पनिक दुनिया में उछाल का दौर था। ऊपर – और ऊपर – और-और ऊपर! लागत बिन्दु पार हो चुका था। और ऊपर – और भी ऊपर! लागत से पाँच प्वाइंट ऊपर – फिर दस – पन्द्रह – बीस! उस विशालकाय कारोबार पर बीस प्वाइंट का शुद्ध मुनाफ़ा, और अब अलेक के काल्पनिक ब्रोकर काल्पनिक लांग डिस्टेंस कॉल पर पागलों की

तरह चिल्ला रहे थे, "बेचो! बेचो! भगवान के लिए, बेच दो!"

उसने यह शानदार ख़बर सैली को दी और उसने भी कहा, "बेचो! बेचो – ओह, देखो ग़लती मत करना, अब तुम पूरी धरती की मालकिन हो! – बेचो, बेच दो!" मगर उसने अपनी फौलादी इच्छाशक्ति का परिचय दिया और कहा कि जान भी देनी पड़े तो भी वह कम से कम पाँच प्वाइंट और बढ़ने तक रुकी रहेगी।

यह एक घातक संकल्प था। अगले ही दिन ऐतिहासिक ध्वंस हुआ, रिकार्डतोड़ ध्वंस, तबाह कर देने वाला ध्वंस, जब वॉलस्ट्रीट में धड़ाम से गिरावट आयी, और तमाम चमकदार शेयरों का भाव पाँच घण्टे में पंचानबे प्वाइंट नीचे आ गया और करोड़पति भी बोवेरी में कटोरा लेकर भीख माँगते नज़र आने लगे। अलेक ने मज़बूती से पकड़ बनाये रखी और जब तक सम्भव हुआ डटी रही, लेकिन आख़िरकार एक वक़्त आया जब वह अशक्त हो गयी और उसके काल्पनिक ब्रोकरों ने सब कुछ बेच दिया। सिर्फ़ तभी, उस समय से पहले कभी नहीं, उसके भीतर का पुरुष लुप्त हो गया, और भीतर की स्त्री फिर से जाग गयी। वह पति के गले में बाँहें डालकर रोते हुए कहने लगी :

"मैं भी दोषी हूँ, मुझे माफ़ मत करना, मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगी। हम कंगाल हो गये हैं! कंगाल, और मैं दुख से पागल हो रही हूँ। अब वे शादियाँ कभी नहीं हो सकेंगी; वह सब ख़त्म हो गया; अब हम डेंटिस्ट को भी नहीं ख़रीद सकते।"

सैली की ज़ुबान में कड़वाहट थी : "मैंने तुमसे गिड़गिड़ाकर कहा कि बेच दो, लेकिन तुम –" उसने पूरी बात कही नहीं; वह उसकी हताश और पश्चाताप से भरी आत्मा को और चोट पहुँचाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। फिर उसके मन में एक बेहतर ख़्याल आया और वह बोला :

"कोई बात नहीं, अलेक, सब कुछ ख़त्म नहीं हुआ है! तुमने मेरे चाचा की वसीयत से तो एक पैसा भी निवेश नहीं किया था, सिर्फ़ इस पर होने वाले भावी लाभांश को ही लगाया था; हमने जो भी गँवाया है वह तो सिर्फ़ उस भावी लाभ से होने वाली कमाई थी जो तुम्हारी अतुलनीय वित्तीय निर्णय-क्षमता और साहस का नतीजा थी। ख़ुश हो जाओ, इन दुखों को किनारे करो; हमारे पास अब भी तीस हज़ार बिल्कुल अछूते पड़े हैं; और तुमने जो अनुभव हासिल किया है, उससे ज़रा सोचो कि तुम दो साल में इन्हें कहाँ पहुँचा दोगी! शादियाँ टूटी नहीं हैं, बस टल गयी हैं।"

ये दिव्य शब्द थे। अलेक ने देखा कि इनमें वाक़ई कितनी सच्चाई थी, और उनका असर जादुई था; उसके आँसू रुक गये, और उसकी महान आत्मा एक बार फिर तनकर खड़ी हो गयी। चमकती आँखों और कृतज्ञ हृदय से, और शपथ

तथा भविष्यवाणी के अन्दाज़ में हाथ उठाकर उसने कहा :

"और अब मैं दावा करती हूँ –"

लेकिन एक आगन्तुक ने बीच में ख़लल डाल दिया। वह 'सागामोर' का सम्पादक और मालिक था। वह अपनी एक दूरदराज़ की नानी से मिलने का कर्तव्य निभाने लेकसाइड आया था जो अन्तिम घड़ियाँ गिन रही थीं। दुख के साथ व्यावसायिक काम भी निपटा लेने के ख़्याल से वह फ़ॉस्टर दम्पति से मिलने चला आया था, जो पिछले चार वर्षों में दूसरी चीज़ों में इतना डूबे हुए थे कि उन्हें अपना वार्षिक चन्दा भेजने का भी ध्यान नहीं रहा था। छह डॉलर बक़ाया थे। किसी भी आगन्तुक का आना इतना सुखद नहीं हो सकता था। वह निश्चित ही अंकल टिल्बरी के बारे में सबकुछ जानता होगा और उसे यह भी पता होगा कि क़ब्रिस्तान की दिशा में प्रगति की उसकी क्या सम्भावनाएँ हैं। बेशक़, वे कोई सवाल नहीं पूछ सकते थे, क्योंकि इससे तो वसीयत ख़ारिज हो जाती, मगर वे विषय के इर्दगिर्द बात घुमा सकते थे और नतीजों की उम्मीद तो कर ही सकते थे। मगर योजना कामयाब नहीं हुई। घामड़ सम्पादक को पता ही नहीं चला कि बात किधर घुमाई जा रही है; लेकिन आख़िरकार संयोग ने वह कर दिखाया जिसमें कोशिशें नाकाम रही थीं। बातचीत में किसी बात पर ज़ोर देने के लिए मुहावरे के तौर पर, सम्पादक बोला :

"ज़मीन, समझ लीजिए कि वह तो टिल्बरी फ़ॉस्टर जैसी सख़्त है! – जैसा कि हम कहते हैं।"

अचानक आये इस ज़िक्र से फ़ॉस्टर दम्पति उछल पड़े। सम्पादक का ध्यान इस ओर गया और उसने माफ़ी माँगने के अन्दाज़ में कहा :

"मेरी मानिये, मेरा इरादा ग़लत नहीं था। यह तो बस एक कहावत है; बस एक मज़ाक, और कुछ नहीं। आपके रिश्तेदार थे?"

सैली ने अपनी बढ़ती उत्सुकता को दबाकर शान्त किया, और जितना तटस्थ दिख सकता था, उतना दिखने की कोशिश करते हुए जवाब दिया :

"मैं – मुझे पता नहीं, लेकिन हमने उनके बारे में सुना है।" सम्पादक को तसल्ली हो गयी। सैली ने पूछा : "क्या वह – क्या वह – वह ठीक तो हैं?"

"वह ठीक है? अरे, उसे ऊपर गये तो पाँच साल हो गये!"

फ़ॉस्टर दम्पति दुख से काँप उठे, हालाँकि अन्दर से वे बेहद ख़ुश थे। सैली ने बिना किसी भाव के – और टटोलते हुए-से कहा :

"आह, यही तो ज़िन्दगी है, इससे तो कोई बच नहीं सकता – अमीरों को तो भी एक दिन जाना होता है।"

सम्पादक हँसा।

“अगर आप इसमें टिल्बरी को शामिल कर रहे हैं,” वह बोला, “तो यह बात लागू नहीं होती। उसके पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी; उसे दफ़नाने का काम भी नगरपालिका को करना पड़ा।”

फ़ॉस्टर दम्पति दो मिनट तक बुत बने बैठे रहे; प्रस्तरवत् और बिल्कुल जड़। फिर पीले पड़े चेहरे और लड़खड़ाती आवाज़ में सैली ने पूछा :

“क्या यह सच है? क्या आप जानते हैं कि यह सच है?”

“हाँ, मुझे तो ऐसा ही लगता है! मैं उसका अन्तिम संस्कार करने वालों में से एक था। उसके पास एक छकड़े के सिवा और कुछ नहीं था और वह उसे मेरे लिए छोड़ गया। उसमें एक पहिया तक नहीं था और किसी काम का नहीं था। फिर भी यह कुछ तो था, और हिसाब बराबर करने के लिए मैंने उसके लिए एक छोटा-सा श्रद्धांजलि लेख भी लिखा था मगर और ख़बरों के चक्कर में वह रह ही गया।”

फ़ॉस्टर दम्पति को कुछ सुनाई नहीं दे रहा था – उनके दुख का घड़ा भर चुका था, अब उसमें कुछ और नहीं समा सकता था। वे सिर झुकाये बैठे थे, आसपास की तमाम चीज़ों से बेपरवाह, उनके दिल दुख रहे थे।

एक घण्टा बाद भी वे वहीं सिर झुकाये, बिना हिले-डुले, चुपचाप बैठे थे। आगन्तुक काफ़ी पहले जा चुका था, पर उन्हें पता नहीं चला।

फिर वे हिले, और धीरे से सिर उठाकर एक-दूसरे को उदास, स्वप्निल, अचम्भित नज़रों से देखा; फिर बचकाने अन्दाज़ में और इधर-उधर भटकते हुए एक-दूसरे से कुछ-कुछ बोलने लगे। बीच-बीच में वे ख़ामोश हो जाते, कोई वाक्य अधूरा छोड़ देते, या तो उन्हें इसका पता ही नहीं चलता या बीच ही में भूल जाते। कभी-कभी, जब वे इन ख़ामोशियों से जागते तो उनमें इस बात की धुँधली और अस्थिर-सी चेतना पैदा होती कि उनके दिमाग़ को कुछ हुआ है; फिर एक मूक और चाहतभरे एहसास के साथ वे एक-दूसरे को सहारा देते हुए एक-दूसरे का हाथ सहलाने लगते, मानो कहना चाह रहे हों : “मैं तुम्हारे पास हूँ, तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा, हम साथ मिलकर इसका सामना करेंगे; कहीं न कहीं इससे मुक्ति और क्षमादान मिलेगा, कहीं न कहीं एक क़ब्र और शान्ति प्रतीक्षा में है; धीरज रखो, इसमें देर नहीं होगी।”

मगर वे इसके बाद भी दो वर्ष जीवित रहे, मानसिक अँधेरे में, हमेशा सोच में डूबे हुए, अस्पष्ट पश्चाताप और उदास सपनों में खोये हुए, हमेशा चुपचाप। फिर दोनों को एक ही दिन इससे मुक्ति मिल गयी।

अन्त समय के निकट सैली के नष्ट मन से कुछ पल के लिए अँधेरा छँटा, और उसने कहा :

“अचानक और अप्रिय तरीक़ों से अचानक हासिल की गयी सम्पत्ति एक जाल है। इससे हमें कुछ नहीं मिला, इसके उन्मत्त सुख बस क्षणिक थे; लेकिन इसकी ख़ातिर हमने अपनी मीठी और सरल और सुखद ज़िन्दगी बरबाद कर दी – दूसरों के लिए यह एक चेतावनी होनी चाहिए।”

वह कुछ देर आँखें बन्द किये लेटा रहा; फिर जैसे ही मौत की ठण्डक उसके हृदय की ओर रेंगते हुए बढ़ी, और उसके मन से चेतना फिसलने लगी, वह बड़बड़ाया :

“धन ने उसे बदहाल बनाया था, और उसने इसका बदला हमसे लिया, जिन्होंने उसका कोई नुकसान नहीं किया था। उसकी इच्छा पूरी हुई : घृणित और धूर्ततापूर्ण चालाकी से वह हमें सिर्फ़ तीस हज़ार छोड़ गया, यह जानते हुए कि हम इसे बढ़ाने की कोशिश करेंगे और अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर लेंगे, और हमारे दिल टूट जायेंगे। बिना किसी अतिरिक्त ख़र्च के वह हमें इतना छोड़कर जा सकता था कि हमें उसे और बढ़ाने की चाहत न होती, सट्टेबाज़ी करने का लालच न होता। कोई भला शख़्स ऐसा ही करता; मगर उसमें उदारता की कोई भावना नहीं थी, नहीं, आह, बिल्कुल नहीं –”

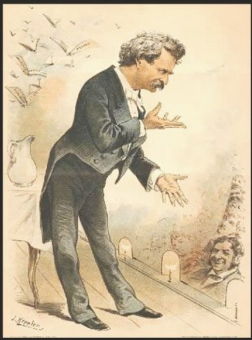

मार्क ट्वेन

"जीवन भर हमें ईमानदारी का सबक-दर-सबक सिखाया गया है–ऐसी ईमानदारी जिस पर कभी किसी लोभ-लालच की छाया ही नहीं पड़ने दी गयी। अरे यह ईमानदारी नक़ली है, ऊपर से लादी हुई, और लालच का पहला झोंका आते ही कपूर की तरह उड़ जाती है। ...मुझे यक़ीन है कि इस शहर की ईमानदारी भी उतनी ही सड़ी है जितनी मेरी, उतनी ही सड़ी जितनी तुम्हारी। ये एक घटिया शहर है; कूपमण्डूक, बदबूदार शहर है ये। इसके पास कोई गुण नहीं है, सिवाय इस ईमानदारी के, जिसके लिए इसके इतने चर्चे हैं और जिस पर यह इतना इतराता फिरता है। मेरी बात गाँठ बाँध लो – जिस दिन इसकी ईमानदारी पर किसी बड़े लालच की चोट पड़ी, इसकी महान प्रतिष्ठा रेत के महल की तरह भरभराकर गिर जायेगी। ...मैं कपटी हूँ; जीवनभर मैं कपट करती रही हूँ, बिना जाने। आज के बाद कोई मुझे ईमानदार न कहे–बस बहुत हो चुका।"

राहुल
फाउण्डेशन

ISBN 818976055-6
9788189760557
रु. 60.00

बेहतर ज़िन्दगी का रास्ता
बेहतर किताबों से होकर जाता है!

# जनचेतना

# सम्पूर्ण सूचीपत्र
# 2021

## *हम हैं सपनों के हरकारे*
## *हम हैं विचारों के डाकिये*

*आम लोगों के लिए*
*ज़रूरी हैं वे किताबें*
*जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन*
*और मुक्ति के स्वप्नों तक*
*पहुँचाती हैं विचार*
*जैसे कि बारूद की ढेरी तक*
*आग की चिंगारी।*
*घर–घर तक चिंगारी छिटकाने वाला*
*तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा*
*ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच*
*बतलाने वाली किताबों को*
*जन–जन तक पहुँचाना होगा।*

तीन दशक से भी पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी–सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी–सी दुकान और फुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी–छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर–घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। अपने प्रदर्शनी वाहनों के माध्यम से भी जनचेतना कई राज्यों के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी, मराठी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला–सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन–संघर्ष–सृजन–प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

**आइए, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिए।**

# सम्पूर्ण सूचीपत्र

## परिकल्पना प्रकाशन

### उपन्यास

नयी
1. **पहला अध्यापक**/चिंगीज़ आइत्मातोव 50.00
2. **तरुणाई का तराना**/याङ मो ...
3. **तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट ...
4. **माँ**/मक्सिम गोर्की 275.00
5. **वे तीन**/मक्सिम गोर्की 75.00
6. **मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की ...
7. **जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की ...
8. **मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की ...
9. **फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की 55.00
10. **अभागा**/मक्सिम गोर्की 40.00
11. **बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की 25.00
12. **असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई 260.00
13. **तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव (दो खण्डों में) 160.00
14. **गोदान**/प्रेमचन्द ...
15. **निर्मला**/प्रेमचन्द ...
16. **पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र ...
17. **चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र ...
18. **गृहदाह**/शरत्चन्द्र ...
19. **शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र ...
20. **इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का ...
21. **इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव ...
22. **दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव 70.00
23. **वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव 60.00
24. **मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ ग्रीगोरी बकलानोव 40.00
25. **बख़्तरबन्द रेल 14-69**/ व्सेवोलोद इवानोव 30.00
26. **अश्वसेना**/इसाक बाबेल 40.00
27. **लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श 50.00
28. **रिक्शावाला**/लाओ श 65.00
29. **चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन 55.00

30. **एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय 70.00

31. **Mother**/*Maxim Gorky* 250.00

32. **The Song of Youth**/*Yang Mo* ...

# कहानियाँ

1. **श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट) 450.00
2. **वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया** (मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ) 60.00

**मक्सिम गोर्की**

नयी 3. **इटली की कहानियाँ** 150.00
4. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00
5. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 200.00
6. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3) 150.00
7. **हिम्मत न हारना मेरे बच्चो** 15.00
8. **कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी** 10.00

**अन्तोन चेख़व**

9. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00
10. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 150.00

11. **दो अमर कहानियाँ**/लू शुन ...
12. **श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द 80.00
13. **पाँच कहानियाँ**/पुश्किन ...
14. **तीन कहानियाँ**/गोगोल 30.00
15. **तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच 60.00
16. **वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव 60.00
17. **वसन्तागम**/रओ शि 50.00
18. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00
19. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00
20. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00
21. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00
22. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00
23. **समय के पंख**/ कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...
24. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...
25. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00
26. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00
27. **दोन की कहानियाँ**/ मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00
28. **अब इन्साफ़ होने वाला है** (भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन) (ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/ स. **शकील सिद्दीक़ी** ...
29. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...
30. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/ मदन मोहन 35.00

# कविताएँ

नयी 1. **कौन देखता है कौन दिखता**/लाल्टू 150.00

नयी 2. **अनिश्चय के गहरे धुएँ में**/ निर्मला गर्ग 100.00

3. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/ पाब्लो नेरूदा 60.00

4. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/ लैंग्सटन ह्यूज़ 60.00

5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ - बेर्टोल्ट ब्रेष्ट** (मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल) 130.00 (ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित)

6. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो** (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) ...

7. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ** (राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00

8. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/ हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00

9. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00

10. **ओस की बूँदें और लाल गुलाब**/ होसे मारिया सिसों 25.00

11. **इन्तिफ़ादा :** फ़िलस्तीनी कविताएँ/ स. रामकृष्ण पाण्डेय 100.00

12. **लोहू और इस्पात से फूटता गुलाब :** फ़िलस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन) **A Rose Breaking Out of Steel and Blood** (Palestinian Poems) ...

13. **लहू है कि तब भी गाता है**/पाश 125.00

14. **समर तो शेष है...** (इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00

15. **पाठान्तर**/विष्णु खरे 50.00

16. **लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/ विष्णु खरे 60.00

17. **वाचाल दायरों से दूर**/मलय 125.00

18. **दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय 120.00

19. **देखते न देखते**/मलय 65.00

20. **असम्भव की आँच**/मलय 100.00

21. **इच्छा की दूब**/मलय 90.00

22. **देश एक राग है**/भगवत रावत ...

23. **ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ 60.00

24. **बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी 50.00

25. **कविता का जीवन**/असद ज़ैदी 75.00

26. **सामान की तलाश**/असद ज़ैदी 50.00

27. **कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/ शशिप्रकाश 50.00

28. **पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश 75.00

29. **सात भाइयों के बीच चम्पा**/ कात्यायनी 120.00

30. **इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी 120.00

31. **जादू नहीं कविता**/कात्यायनी 150.00

32. **फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी 80.00

33. **राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी 15.00

34. **नगर में बर्बर**/कविता कृष्णपल्लवी 100.00 (अँधेरे समय की कुछ कविताएँ और कुछ क़िस्से)

35. **यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार 50.00
36. **यह जो वक़्त है**/कपिलेश भोज 60.00
37. **बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/
नरेश चन्द्रकर 60.00
38. **इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार 90.00
39. **तो**/शैलेय 75.00
40. **पानी है तो फूटेगो**/
राजेश सकलानी 100.00
41. **सवालों का कारख़ाना**/सरिता तिवारी
(नेपाली कविताएँ) 100.00

## नाटक

1. **करवट**/मक्सिम गोर्की 40.00
2. **दुश्मन**/मक्सिम गोर्की 35.00
3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/
अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/
व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/
निकोलाई पोगोदिन 30.00

## संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

## स्त्री–विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी 130.00

## ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यंत्ररत मृतात्माओं के बीच** (साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

## व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

## नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की 50.00

## वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा 25.00

## साहित्य–विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय ...
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/बेलिंस्की, हर्ज़ेन, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव 65.00
4. **सृजन-प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की 40.00
5. **मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन 20.00

## नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1. **एक पुस्तक माता-पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको ...
2. **मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुखोम्लीन्स्की ...

## सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका शृंखला

1. **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक कार्यभार**
कात्यायनी, सत्यम 25.00

## आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी 50.00

——::——

# राहुल फाउण्डेशन

## नौजवानों के लिए विशेष

1. **नौजवानों से दो बातें**/ पीटर क्रोपोटकिन 15.00
2. **क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/ भगतसिंह 15.00
3. **मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह 15.00
4. **बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह 15.00
5. **जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह 15.00
6. **भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह 15.00

## क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1. **भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़** स. सत्यम 350.00
2. **शहीदेआज़म की जेल नोटबुक** भगतसिंह 100.00
3. **विचारों की सान पर**/भगतसिंह 50.00

## क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1. **बहरों को सुनाने के लिए** एस. इरफ़ान हबीब 160.00 (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम)
2. **क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा 25.00
3. **भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र 25.00
4. **यश की धरोहर**/भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर 50.00
5. **संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा 100.00
6. **शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/ स. डॉ. हरदीप सिंह 40.00

## महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है** ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 80.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

## ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 100.00

## दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 30.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

## आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 20.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 20.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 20.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 25.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00
6. **मार्क्सवाद-लेनिनवाद और राष्ट्रीय प्रश्न** (एक बहस)/शिवानी, अभिनव 150.00

# बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. **कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा**/लेनिन 20.00
2. **मकड़ा और मक्खी**/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00
3. **ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े**/सेर्गेई रोस्तोवस्की ...
4. **मई दिवस का इतिहास**/अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
5. **पेरिस कम्यून की अमर कहानी** 20.00
6. **अक्टूबर क्रान्ति की मशाल** 15.00
7. **जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा**/डॉ. दर्शन खेड़ी 10.00
8. **लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस** ...
9. **संशोधनवाद के बारे में** 10.00
10. **शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी**/हावर्ड फ़ास्ट 20.00
11. **मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए** 20.00
12. **मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा** 15.00
13. **चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही** ...
14. **बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ** ...
15. **राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन**/अभिनव 30.00
16. **फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?**/अभिनव 120.00
17. **नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार**/ आलोक रंजन 55.00
18. **कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है** आलोक रंजन/आनन्द सिंह 150.00
19. **तीन कृषि विधेयक और मज़दूर वर्ग का नज़रिया**/अभिनव 40.00

**मज़दूरों का इन्क़लाबी मासिक अख़बार**

**एक प्रति : 5 रुपये**

(डाक व्यय सहित)

**सम्पादकीय कार्यालय**

69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड

निशातगंज, लखनऊ-226006

**फ़ोन** : 0522-4108495

**ईमेल** : bigulakhbar@gmail.com

# मार्क्सवाद

1. **धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स ...
2. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र** मार्क्स–एंगेल्स 50.00
3. **साहित्य और कला**/मार्क्स–एंगेल्स 150.00
4. **फ़्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स 40.00
5. **फ़्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स 20.00
6. **लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स 35.00
7. **उज़रती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स 15.00
8. **मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/ कार्ल मार्क्स 20.00
9. **गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/ कार्ल मार्क्स 40.00
10. **लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 20.00
11. **जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 30.00
12. **समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स ...
13. **पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन 15.00
14. **एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन ...
15. **जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन 25.00
16. **समाजवाद और युद्ध**/लेनिन 20.00
17. **साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन 30.00
18. **राज्य और क्रान्ति**/लेनिन ...
19. **सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन ...
20. **दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन 15.00
21. **गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन 50.00
22. **मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन 20.00
23. **कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन ...
24. **क्या करें?**/लेनिन ...
25. **"वामपन्थी" कम्युनिज़्म - एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन ...
26. **पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन 15.00
27. **जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन 70.00
28. **धर्म के बारे में**/लेनिन ...
29. **तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन 10.00
30. **मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ** जी. प्लेख़ानोव 30.00
31. **जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव 35.00
32. **लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन 50.00
33. **सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास** 90.00

34. **माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में) ...

35. **कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ ...

36. **सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना**/ माओ त्से-तुङ ...

37. **दर्शन विषयक पाँच निबन्ध**/ माओ त्से-तुङ 70.00

38. **कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़**/माओ त्से-तुङ 15.00

39. **माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण** 50.00

## अन्य मार्क्सवादी साहित्य

नयी

1. **दर्शन कोई रहस्य नहीं** 50.00 (जब किसानों ने अपने अध्ययन को व्यवहार में उतारा)
2. **राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** 300.00
3. **ख़ुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र 300.00
4. **राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी) 160.00
5. **पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
6. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/ डी. रियाज़ानोव ... (विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)
7. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/ डेविड गेस्ट ...
8. **इतिहास ने जब करवट बदली**/ विलियम हिण्टन 25.00
9. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/ वी. अदोरात्स्की 50.00
10. **अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन** अल्बर्ट रीस विलियम्स 90.00 (महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)
11. **सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस 50.00

## राहुल साहित्य

1. **तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन 40.00
2. **दिमाग़ी ग़ुलामी**/राहुल सांकृत्यायन 40.00
3. **वैज्ञानिक भौतिकवाद**/ राहुल सांकृत्यायन 65.00
4. **राहुल निबन्धावली**/ राहुल सांकृत्यायन 50.00
5. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

## परम्परा का स्मरण

1. **चुनी हुई रचनाएँ**/ गणेशशंकर विद्यार्थी 100.00
2. **सलाखों के पीछे से**/ गणेशशंकर विद्यार्थी . . .
3. **ईश्वर का बहिष्कार**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
4. **लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी 20.00
5. **धर्म का ढकोसला**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
6. **स्त्रियों की स्वाधीनता** राधामोहन गोकुलजी 30.00

## जीवनी और संस्मरण

1. **कार्ल मार्क्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ ज़ेल्डा कोट्स 25.00
2. **फ्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स 80.00
3. **कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख** 35.00
4. **अदम्य बोल्शेविक नताशा** (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/ एल. काताशेवा 30.00
5. **लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा 70.00
6. **लेनिन विषयक कहानियाँ** 75.00
7. **लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/ लीदिया फ़ोतियेवा . . .
8. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

## विविध

1. **फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ़्यूचिक . . .
2. **पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर 100.00
3. **सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर . . .

——::——

# Rahul Foundation

## MARXIST CLASSICS

**KARL MARX**

1. **A Contribution to the Critique of Political Economy** ...
2. **The Civil War in France** ...
3. **The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte** 80.00
4. **Critique of the Gotha Programme** 50.00
5. **Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy** 25.00
6. **The Poverty of Philosophy** 80.00
7. **Wages, Price and Profit** 50.00
8. **Class Struggles in France** 50.00

**FREDERICK ENGELS**

9. **The Peasant War in Germany** 70.00
10. **Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy** 65.00
11. **On Capital** 80.00
12. **The Origin of the Family, Private Property and the State** 100.00
13. **Socialism: Utopian and Scientific** 60.00
14. **On Marx** 30.00
15. **Principles of Communism** 5.00

**MARX and ENGELS**

16. **Historical Writings** (Set of 2 Vols.) 700.00
17. **Manifesto of the Communist Party** 50.00
18. **Selected Letters** 75.00

**V. I. LENIN**

19. **Theory of Agrarian Question** 160.00
20. **The Collapse of the Second International** 25.00
21. **Imperialism, the Highest Stage of Capitalism** 80.00
22. **Materialism and Empirio-Criticism** 150.00
23. **Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution** 55.00
24. **Capitalism and Agriculture** 50.00
25. **A Characterisation of Economic Romanticism** ...
26. **On Marx and Engels** 35.00
27. **“Left-Wing” Communism, An Infantile Disorder** 75.00
28. **Party Work in the Masses** 55.00
29. **The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky** 75.00

30. **One Step Forward, Two Steps Back** …
31. **The State and Revolution** 80.00

**MARX, ENGELS and LENIN**

32. **On the Dictatorship of Proletariat, *Questions and Answers*** 50.00
33. **On the Dictatorship of the Proletariat: *Selected Expositions*** 10.00

**PLEKHANOV**

34. **Fundamental Problems of Marxism** …

**J. STALIN**

35. **Marxism and Problems of Linguistics** 25.00
36. **Anarchism or Socialism?** 60.00
37. **Economic Problems of Socialism in the USSR** …
38. **On Organisation** 15.00
39. **The Foundations of Leninism** 70.00
40. **The Essential Stalin** … *Major Theoretical Writings 1905–52* (Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)

**LENIN and STALIN**

41. **On the Party** 30.00

**MAO TSE-TUNG**

42. **Five Essays on Philosophy** 80.00
43. **A Critique of Soviet Economics** 70.00
44. **On Literature and Art** 80.00
45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** …
46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** …

## OTHER MARXISM

1. **Political Economy, *Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 375.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 150.00
3. **Reader in Marxist Philosophy/** *Howard Selsam & Harry Martel* …
4. **Socialism and Ethics/** *Howard Selsam* …
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)/*Howard Selsam* 100.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics/***Maurice Cornforth* 70.00

***George Thomson***

7. **From Marx to Mao Tse-tung** 120.00
8. **Capitalism and After** 100.00
9. **The Human Essence** 80.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions/***Bob Avakian* …
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00

12. **The Lessons of the Paris Commune**/*Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

13. **Subversive Interventions** (An Anthology**)** *Abhinav Sinha* 500.00

## BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) …
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov 150.00
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* 80.00

## PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle Red Papers 7** 175.00
2. **Preface of Class Struggles in the USSR**/*Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** *Shashi Prakash* 40.00

## ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University *William Hinton* …
2. **The Cultural Revolution at Peking University**/*Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** *William Hinton* 50.00
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution** / *Iris Hunter* 50.00

## ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1. **Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969
   *Joshua S. Horn* 125.00
2. **Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China / *Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel* …
3. **Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work) …

## ON THE CASTE QUESTION

1. **On the Caste Question:**
   **Towards a Marxist Understanding**
   *Abhinav Sinha* 200.00
2. **Caste and Class:**
   **A Marxist Viewpoint /** Ranganayakamma 60.00

## DAYITVABODH REPRINT SERIES

1. **Immortal are the Flames of Proletarian Struggles /** *Deepayan Bose* 30.00
2. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00
3. **Why Maoism? /** *Shashi Prakash* 25.00

## AHWAN REPRINT SERIES

1. **Where Should Students and Youth Make a New Beginning?** 20.00
2. **Reservation: Support, Opposition and Our Position** 20.00
3. **On Terrorism : Illusion and Reality /** *Alok Ranjan* 20.00

"The books that help you most are those which make you think the most. The hardest way of learning is that of easy reading; but a great book that comes from a great thinker is a ship of thought, deep freighted with truth and beauty."

**– Pablo Neruda**

## BIGUL REPRINT SERIES

| | | |
|---|---|---|
| 1. | **Still Ablaze is the Torch of October Revolution** | 30.00 |
| 2. | **Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan | 75.00 |

## WOMEN QUESTION

| | | |
|---|---|---|
| 1. | **The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin* | 100.00 |
| 2. | **Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation** / *Mary Lou Greenberg* | 50.00 |

## MISCELLANEOUS

| | | |
|---|---|---|
| 1. | **Probabilities of the Quantum World** / *Daniel Danin* | … |
| 2. | **An Appeal to the Young** / *Peter Kropotkin* | 20.00 |


# The Anvil

**A Journal of Marxist Theory**

**Editor: Shashi Prakash**

Editorial Office

69 A-1, Baba ka Purwa
Paper Mill Road, Nishatgunj, Lucknow 226 006, India
Phone: 9560130890, Email: editor.anvil@gmail.com

**Website: http://anvilmag.in**

**FB: facebook.com/anvilmag**

# अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलनः निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलनः दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद** (चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

# PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

---

## जनचेतना इन पुस्तकों की भी मुख्य वितरक है

1. **बच्चों के लिए अर्थशास्त्र ( मार्क्स की 'पूँजी' पर आधारित पाठ )**/रंगनायकम्मा 120.00
2. **घरेलू काम और बाहरी काम**/रंगनायकम्मा 40.00
3. **For the Solution of the 'Caste' Question, Buddha is not enough, Ambedkar is not enough either, Marx is a must**/Ranganayakamma 100.00
4. **Economics for Children [Lessons based on Marx's 'Capital']**/Ranganayakamma 150.00
5. **Household Work and Outside Work** 60.00

# अनुराग ट्रस्ट

1. **बच्चों के लेनिन** 35.00
2. **Stories About Lenin** 35.00
3. **सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर 25.00
4. **औज़ारों की कहानियाँ** 20.00
5. **गुड़ की डली** /कात्यायनी 20.00
6. **फूल कुण्डलाकार क्यों होते हैं**/सनी 20.00
7. **धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव ...
8. **कज़ाकी**/प्रेमचन्द 35.00
9. **नीला प्याला**/अरकादी गैदार 40.00
10. **गड़रिये की कहानियाँ**/ क़यूम तंगरीकुलीयेव 35.00
11. **चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/ अ. मित्यायेव 35.00
12. **अन्धविश्वासी शेकी टेल**/ सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
13. **चलता-फिरता हैट**/ एन. नोसोव, होल्कर पुक्क 20.00
14. **चालाक लोमड़ी** (लोककथा) 20.00
15. **दियांका-टॉमचिक** 20.00
16. **गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
17. **गुफ़ा मानवों की कहानियाँ**/ मैरी मार्स 20.00
18. **हम सूरज को देख सकते हैं**/ मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच 20.00
19. **मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
20. **नन्हे आर्थर का सूरज**/ हद्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा 20.00
21. **आकाश में मौज-मस्ती**/ चिनुआ अचेबे 20.00
22. **ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन 40.00
23. **एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की 20.00
24. **बहादुर**/अमरकान्त 15.00
25. **बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/ शस्या हर्ष ...
26. **दान्को का जलता हुआ हृदय**/ मक्सिम गोर्की 10.00
27. **नन्हा राजकुमार**/ आतुआन द सैंतेक्ज़ूपेरी 40.00
28. **दादा आर्खिप और ल्योंका**/ मक्सिम गोर्की 30.00
29. **सेमागा कैसे पकड़ा गया**/ मक्सिम गोर्की 15.00
30. **बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की 15.00
31. **वांका**/अन्तोन चेख़व 15.00
32. **तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 15.00
33. **पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर ...
34. **काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 20.00

35. **अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र 15.00
36. **दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर 25.00
37. **रामलीला**/प्रेमचन्द 15.00
38. **दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द 25.00
39. **ईदगाह**/प्रेमचन्द ...
40. **लॉटरी**/प्रेमचन्द 20.00
41. **गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द ...
42. **बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द 20.00
43. **मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द ...
44. **हार की जीत**/सुदर्शन ...
45. **इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव 40.00
46. **चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन 55.00
47. **उल्टा दरख़्त**/कृश्नचन्दर 35.00
48. **हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव 25.00
49. **दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) ...
50. **आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी 30.00
51. **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 35.00
52. **नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन ...
53. **लाखी**/अन्तोन चेख़व 25.00
54. **बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव 12.00
55. **हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक 25.00
56. **घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव 10.00
57. **बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव 20.00
58. **मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन 35.00
59. **पराये घोंसले में**/फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की 20.00
60. **कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय 30.00
61. **मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव 30.00
62. **सदानन्द की छोटी दुनिया**/ सत्यजीत राय 15.00
63. **छत पर फँस गया बिल्ला**/ विताउते जिलिन्सकाइते 35.00
64. **गोलू के कारनामे**/रामबाबू 25.00
65. **दो साहसिक कहानियाँ**/ होल्गर पुक्क 15.00
66. **आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गर पुक्क 20.00
67. **कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गर पुक्क 20.00
68. **रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गर पुक्क 20.00
69. **अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गर पुक्क ...
70. **नये ज़माने की परीकथाएँ**/ होल्गर पुक्क 25.00
71. **किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/ मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन 15.00
72. **पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन) / कमला पाण्डेय 30.00
73. **यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण) / कमला पाण्डेय 100.00
74. **हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ) / कमला पाण्डेय 60.00
75. **कालमन्थन** (उपन्यास) / कमला पाण्डेय 60.00

## दो महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ

# दिशा सन्धान

### मार्क्सवादी सैद्धान्तिक शोध और विमर्श का मंच

**सम्पादक:** कात्यायनी / सत्यम

**एक प्रति : 100 रुपये, आजीवन: 5000 रुपये**

**वार्षिक ( 4 अंक ) : 400 रुपये ( 100 रु. रजि. बुकपोस्ट व्यय अतिरिक्त )**

# नान्दीपाठ

### मीडिया, संस्कृति और समाज पर केन्द्रित

**सम्पादक:** कात्यायनी / सत्यम

**एक प्रति : 40 रुपये आजीवन: 3000 रुपये**

**वार्षिक ( 4 अंक ) : 160 रुपये ( 100 रु. रजि. बुक पोस्ट व्यय अतिरिक्त )**

**सम्पादकीय कार्यालय :**

69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006

फ़ोन: 9936650658, 8853093555

वेबसाइट : http://dishasandhaan.in ईमेल: dishasandhaan@gmail.com

वेबसाइट : http://naandipath.in ईमेल: naandipath@gmail.com

## मुक्तिकामी छात्रों-युवाओं का

# आह्वान

**सम्पादकीय कार्यालय**

बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094

**ईमेल :** ahwan@ahwanmag.com, ahwan.editor@gmail.com

**वेबसाइट :** ahwanmag.com

**फ़ेसबुक :** facebook.com/muktikamiahwan

**एक प्रति : 20 रुपये • वार्षिक : 160 रुपये ( डाकव्यय सहित )**

## हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल-साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाएँ
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों-चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि...

**ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य-निर्माण के लिए प्रेरित करता है!**

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

**किताबें नहीं,**
**हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं**
**किताबें नहीं,**
**हम असली इन्सान की तरह**
**जीने का संकल्प लेकर आये हैं**

**परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास** और **ऐरण प्रकाशन** **की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्त्रोतों – सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और देशी-विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।**

## हमसे पुस्तकें मँगाने के लिए इन बातों का ध्यान रखें

- प्रत्येक पत्र तथा आदेश-पत्र पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) और फ़ोन नम्बर साफ़-साफ़ लिखें।
- मनीऑर्डर के पीछे सन्देश वाले स्थान पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) साफ़-साफ़ ज़रूर लिखें।
- चेक/ड्राफ़्ट 'जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति' (JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI) के नाम से लखनऊ में देय भेजें। बैंक खाते की जानकारी :

  खाता सं. 0762002109003796

  पंजाब नेशनल बैंक, निशातगंज, लखनऊ

  IFSC: PUNB0076200
- पुस्तकों पर डाक-व्यय तथा रेल या ट्रांसपोर्ट का भाड़ा अलग से देय होगा।
- पुस्तक विक्रेताओं तथा वितरकों द्वारा पुस्तकें मँगाने की शर्तों के लिए हमसे पत्र, ईमेल अथवा फ़ोन से सम्पर्क करें।

**जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति द्वारा संचालित**